World of History

इतिहास की दुनिया

Textbook for Class IX

कक्षा 9 के लिए पाठ्यपुस्तक

द्विभाषिक (Bilingual)

E9Q1J6

सत्यमेव जयते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार के मार्गदर्शन में।

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

संशोधित संस्करण :
2009
2018

प्रथम संस्करण : 2024 (द्विभाषिक)

निःशुल्क वितरण

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य–पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना–800001 द्वारा प्रकाशित तथा ..... द्वारा 80 जी.एस. एम. टेक्स्ट पेपर (.....) तथा 220 जी.एस.एम. आर्ट बोर्ड (..... .....मिल) आवरण पेपर पर कुल .....प्रतियाँ 17.2 × 24 से. मी. साइज में मुद्रित।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

लेखक समूह :

- **डॉ0 इम्तियाज अहमद**, निदेशक, खुदा बख्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना
- **डॉ0 सुनीता शर्मा**, सेवानिवृत प्राध्यापक इतिहास विभाग, बी० डी० कॉलेज, पटना
- **डॉ0 माधुरी द्विवेदी**, शिक्षिका, पटना कॉलेजियट स्कूल, पटना
- **पंकज कुमार**, शिक्षक, राजकीयकृत उच्च विद्यालय, वीर ओइयारा, पटना
- **मो0 शकील राजा**, शिक्षक, टी० के० घोष एकेडमी, राजकीय उच्च विद्यालय, पटना

समन्वयक :

- **श्रीमती विभा रानी**, विभाग प्रभारी, शिक्षणशास्त्र, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग, एस.सी.ई.आर.टी, बिहार
- **डॉ0 लव कुमार**, प्रतिनियुक्त व्याख्याता, शिक्षणशास्त्र, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग, एस.सी.ई.आर.टी, बिहार

अकादमिक सहयोग :

- **श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, सदस्य, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति, एस.सी.ई.आर.टी, बिहार
- **डॉ0 अनुज कुमार,** व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, सहरसा

अंग्रेजी रूपांतरण :

- **डॉ0 सुमिता सिंह**, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जे.डी. वीमेन्स कॉलेज, पटना

तकनीकी सहयोग :

- **श्री संजीव कुमार (हमराज),** ललित कला शिक्षक, प्रो० नवल किशोर बालिका उ०वि०, मसौढ़ी, पटना

आवरण एवं चित्रांकन :

- **शाहिद खान एवं कमाल अशरफ, आर्ट मेकर**, सुल्तानगंज, पटना

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार की गयी है। नवीन पाठ्यक्रम (New Syllabus) के आलोक में तैयार यह पुस्तक नवम् वर्ग हेतु वर्ष 2009 से लागू है।

इस पुस्तक के विकासक्रम में इस बात का ध्यान रखा गया है कि शिक्षार्थियों को स्कूली जीवन के बाहर आस-पास के अनुभवों से जोड़ते हुए विषय-सामग्री से परिचित कराया जाए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 का मूल उद्देश्य भी यही है कि बच्चों के स्कूली जीवन और स्कूल के बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। पुस्तक को विकसित करते समय इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि पुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति से दूर ले जाया जाए। बच्चों में सृजनात्मक पहल को विकसित करने के लिए यह अति आवश्यक है कि सीखने और सिखाने की प्रक्रिया में भाग लेने हेतु बच्चों को अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाए। पुस्तक विकासक्रम में इन बातों पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है कि शैक्षिक सत्र 2024-25 से SCERT द्वारा विकसित सामाजिक विज्ञान विषय अन्तर्गत इतिहास की दुनिया कक्षा-IX की पाठ्यपुस्तक को द्विभाषिक (Bilingual) रूप में विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जा रही है।

नवम् वर्ग में शिक्षार्थी के मस्तिष्क का इतना विकास तो हो ही जाता है कि वह इतिहास की दुनिया की सैर करने के क्रम में इतिहास के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समझने के प्रयास में सक्षम बन सके। इस स्तर के बच्चों में समझ को परखते हुए कोशिश की गई है कि बच्चों को इतिहास को समझने में मदद मिल सके। साथ ही छात्र इतिहास के कुछ बुनियादी प्रश्नों को समझने एवं व्याख्या करने में सक्षम हो सके। इस पुस्तक की एक महत्त्वपूर्ण खासियत यह है कि इसमें ऐतिहासिक अवयवों को बड़े ही सटीक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् सर्वप्रथम इस पुस्तक के विकास में शामिल विद्वत्जनों के प्रति आभार प्रकट करती है, जिनके सहयोग से यह महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। साथ ही इस पुस्तक के विकास के लिए बनाई गई पाठ्य विकास समिति के सदस्य डॉ० इम्तियाज अहमद, निदेशक, खुदा बख्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना, डॉ० सुनीता शर्मा, बी० डी० कॉलेज, पटना, डॉ० माधुरी द्विवेदी, शिक्षिका, पटना कॉलेजियट स्कूल, पटना, पंकज कुमार, शिक्षक, राजकीयकृत उच्च विद्यालय, वीर ओइयारा, पटना, मो० शकील राजा, शिक्षक, टी० के० घोष एकेडमी, राजकीय उच्च विद्यालय, पटना के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रति हम विशेष आभार व्यक्त करते हैं क्योंकि नवम् वर्ग के लिए निर्धारित पुस्तक तैयार करने के क्रम में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली की पुस्तक के अंशों एवं महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का सहारा लिया है।

इस द्विभाषिक पुस्तक को अत्यल्प समय तथा शीघ्रता में तैयार करने में श्रीमती विभा रानी, विभाग प्रभारी, शिक्षणशास्त्र, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना तथा डॉ. लव कुमार, प्रतिनियुक्त व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी. सहित एस.सी.ई.आर.टी. बिहार, पटना के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मियों की महती भूमिका रही है, जिनकी एकनिष्ठ सक्रियता ने कार्य को सुगम बना दिया।

पुस्तक को तैयार करने में संभव है कहीं-कहीं कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों। आपसब पाठकों एवं विद्वत्जनों से सुझाव की अपेक्षा है ताकि अगले संस्करण में उन त्रुटियों को सुधारा जा सके।

सज्जन आर0, भा.प्र.से.
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार,
पटना-800006

	Chapter	Page No.
1.	Geographical Discoveries	1-10
2.	American Struggle for Independence	11-22
3.	French Revolution	23-40
4.	History of World Wars	41-59
5.	Nazism	60-70
6.	Forest Society and Colonialism	71-84
7.	Peace Efforts	85-102
8.	Agriculture and Agricultural Society	103-112

विषय सूची

अध्याय	पृष्ठ संख्या
1. भौगोलिक खोजें	1 – 10
2. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	11 – 22
3. फ्रांस की क्रांति	23 – 40
4. विश्व युद्धों का इतिहास	41 – 59
5. नाजीवाद	60 – 70
6. वन्य समाज और उपनिवेशवाद	71 – 84
7. शान्ति के प्रयास	85 – 102
8. कृषि और खेतिहर समाज	103 – 112

Chapter-1

GEOGRAPHICAL DISCOVERIES

H8V8Q5

Geographical Discoveries

Sea voyages and geographical explorations constitute an important place among the epoch-making incidents of the world history. The incidents which have played a decisive role in heralding the modern age include these geographical discoveries as well. The scientific advancement and economic development, especially the trade developments that began in the last phase of the middle age formed the background. The European countries played the leading role because of which they were able to dominate in the modern age. It is another issue that the countries such as Spain and Portugal which initiated the geographical explorations gradually lagged behind and other countries such as England, Holland, France and then Germany registered new success in the field of geographical discoveries.

We know that trade and commerce have been the chief source of mutual contact from the days of early civilizations of the world. This trade took place through a specific route. These routes were often used between Europe and Asia even in the ancient and the middle ages. However, there were several regions in the world which had human habitats but remained out of contact with the rest of the world. These included America, Africa, Australia and some other parts of Asia. Although in the 13th century the travelogues covering the journeys via India to China did make the Europeans aware of the prosperity of South-East Asia but with little impact. In due course, the large scale geographical explorations and the subsequent achievements paved the way for the modern age.

Marco Polo, a Portuguese traveller, in his travelogue has mentioned the prosperity of the Vijay Nagar empire and the grandeur of the court of Kublai Khan, the Chinese ruler.

इकाई–1

भौगोलिक खोजें

H8V8Q5

भौगोलिक खोजें :

विश्व इतिहास की युगांतकारी घटनाओं में समुद्री यात्राओं एवं भौगोलिक खोजों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आधुनिक युग के आरम्भ होने में जिन घटनाओं का निर्णायक योगदान रहा है, उनमें यह खोजें भी शामिल हैं। इनकी पृष्ठभूमि उस वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक विकास, विशेषकर व्यापारिक परिवर्तनों के द्वारा रची गई जो मध्ययुग के अंतिम चरण से ही आरम्भ हो गई थीं। इस कार्य में यूरोप के देशों ने अग्रणी भूमिका निभाई और यही कारण था कि आधुनिक युग में यूरोप का वर्चस्व समस्त विश्व में स्थापित हो गया। यह बात और है कि भौगोलिक खोजों का प्रारम्भ करने वाले देश, स्पेन एवं पुर्तगाल इस प्रतिस्पर्द्धा में धीरे–धीरे पिछड़ते चले गए और नये देशों जैसे– इंग्लैंड, हॉलैंड, फ्रांस तत्पश्चात् जर्मनी को इस दिशा में अधिक सफलता मिली।

हम जानते हैं कि विश्व की प्रारम्भिक सभ्यताओं के काल से ही व्यापार एवं वाणिज्य परस्पर सम्पर्क का कारण रहा है। यह व्यापार मुख्यत: एक निश्चित मार्ग के माध्यम से होता था। प्राचीन एवं मध्यकाल में भी यूरोप एवं एशिया के मध्य प्राय: इन्हीं मार्गों का प्रयोग किया जाता था। परन्तु विश्व के कई ऐसे क्षेत्र थे, जिनमें जन–जीवन तो विद्यमान था लेकिन शेष विश्व से उनका जुड़ाव नहीं था, जैसे– अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा एशिया के अन्य हिस्से आदि। यद्यपि 13 वीं शताब्दी में भारत होकर चीन तक की यात्रा विवरणों ने यूरोपियनों को दक्षिण–पूर्वी एशियाई समृद्धि का एहसास तो कराया था परन्तु इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। कालांतर में व्यापक स्तर पर हुए भौगोलिक खोजों तथा उससे प्राप्त उपलब्धियों ने यूरोप में आधुनिक युग का मार्ग प्रशस्त किया।

पुर्तगाली यात्री मार्कोपोलो ने विजयनगर साम्राज्य की समृद्धि एवं चीन के शासक कुबलाई खाँ के दरबार के वैभव का वर्णन अपने यात्रा वृत्तान्त में किया है।

If we study the Medieval European history, we will find that it was feudalistic in nature. In this age, neither the trade nor commerce were dynamic nor was religion liberal or humane in nature. The knowledge about earth was little and superstitions prevailed. Sea trade was also limited because of limited geographical knowledge. The people of the medieval period believed that the earth was flat and so if one went far away in the sea, there was fear of falling into infinity off the edges of the earth. Sea voyage was extremely painful and difficult. Ships were small and unsafe; they also depended much on the wind. People did not have compass or other direction-pointers. Hence, they were afraid of losing the sense of direction and thus wandering into the sea. The state did not give any grant for sea voyages. In such adverse situations, it was very difficult for the sailors and the merchants to cross oceans like Atlantic Ocean.

Geographical explorations and discoveries: a background

Meanwhile certain events and incidents were happening in Europe because of which Europe got ready to free itself from the mentality of the medieval age. When the European feudal lords got defeated by the emerging new powers of mid-Asia, the Arabs, in the religious war in the 11th -12th centuries regarding the control over Jerusalem (situated in modern Israel now), the European pride basking in the false aura of feudal pride and glory received a shattering jolt. But it had some positive results as well. During the Crusades the Europeans came to realize that they needed to know about all the dimensions of the world. These events laid the foundation of the renaissance in Europe.

In the Medieval age, the Arabs and then the Turks founded vast international empires. For five decades before the 15th century Constantinople was the route through which the trade between Europe and Asia took place. But after Turkey's control over Constantinople in 1543, this route no longer remained a safe passage for the European merchants. The Turks had started collecting heavy taxes in lieu of the trade through this passage, compelling the Europeans to look for alternative options.

मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास का हम यदि अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि यह काल सामंती प्रवृतियों का काल था। इस काल में न तो व्यापार–वाणिज्य गतिशील था और न ही धर्म का स्वरूप उदार एवं मानवीय था। पृथ्वी के बारे में ज्ञान अत्यल्प एवं अंधविश्वास से युक्त था। सीमित भौगोलिक ज्ञान के कारण सामुद्रिक व्यापार भी सीमित था। मध्ययुगीन लोगों को विश्वास था कि पृथ्वी चपटी है एवं समुद्र में अधिकतम दूरी पर जाने पर पृथ्वी के किनारों से गिरकर अनन्त में विलीन हो जाने का भय बना रहता था। समुद्र यात्रा अत्यधिक कष्टपूर्ण एवं असाध्य थी। जहाज छोटे और असुरक्षित थे तथा गति एवं सुरक्षा के लिए हवा पर निर्भर थे। कम्पास या कुतुबनुमा जैसे दिशासूचक यंत्र का ज्ञान अभी नहीं हुआ था। अत: दिग्भ्रमित होकर समुद्र में भटक जाने का भय भी बना रहता था। समुद्री यात्राओं के लिए राज्य की ओर से किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती थी। इस विषम परिस्थिति में नाविकों एवं व्यापारियों द्वारा अटलांटिक (अंधमहासागर) जैसे महासागर की यात्रा करना अत्यंत दुष्कर था।

भौगोलिक खोजों की पृष्ठभूमि :

इस बीच यूरोप में कुछ ऐसी घटनाएँ घट रही थीं, जिसके प्रभावस्वरूप यूरोप मध्ययुगीन मानसिकता से निकलने को उद्यत हुआ। 11वीं–12वीं शताब्दी में जेरूसलम (आधुनिक इजरायल में अवस्थित) पर अधिकार के मुद्दे को लेकर हुए धर्मयुद्ध में जब यूरोपीय सामंत मध्यएशिया की नवीन शक्ति अरबों से पराजित हुए तो सामंती गौरव के मिथ्याभिमान से ग्रसित यूरोपीय दंभ टूटने लगा। परन्तु इसके कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आये। धर्मयुद्ध के दौरान ही यूरोपियनों को यह महसूस होने लगा था कि दुनिया के हर पहलू को समझा जाए। इन घटनाओं ने यूरोप में पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि भी तैयार की।

मध्ययुग में अरबों और तत्पश्चात् तुर्कों ने विशाल अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यों का निर्माण किया। इधर 15वीं शताब्दी के पाँच दशक पूर्व तक यूरोप और एशिया के मध्य व्यापार कुस्तुनतुनिया के मार्ग से होता था। परन्तु 1453 ई० में कुस्तुनतुनिया पर तुर्की के आधिपत्य से यूरोपीय व्यापारियों के लिए इस मार्ग से व्यापार करना निरापद नहीं रहा। क्योंकि तुर्कों ने इस मार्ग से व्यापार के बदले भारी कर वसूलना शुरू कर दिया था, जिसका हल ढूँढ़ना यूरोपीय देशों के लिए आवश्यक था।

Compass

Because of the new inventions made in this age the sea voyage and the development of the navy became easier. The Europeans learnt the knowledge of compass from the Arabs. Notch or slot system developed in place of the traditional system of making boats. As a result, big and strong ships came to be built. Telescope had also been invented and this helped immensely in the sea expeditions. The maps had greatly improved. Even astrolabe was very useful in this regard. The Portuguese built a new type of fast moving ship Caravel.

With support from the new equipments and gadgets as well as their courage, the European sailors landed their ships in the Atlantic and the Mediterranean sea. In this process, in 1488, the Portuguese merchant Bartolomeu Dias reached Cape of Good Hope, the extreme southern point of the South Africa, via the western coast of Africa.

Contem poraneous picture of Ship

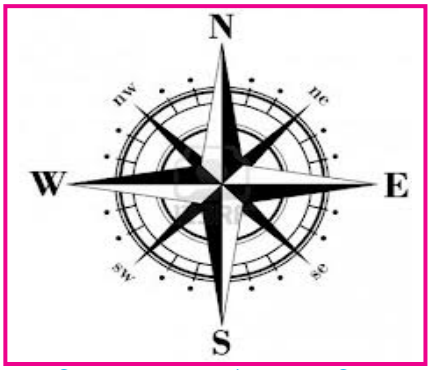

दिशासूचक यंत्र का चित्र

इस काल में हुए नये-नये आविष्कारों ने समुद्री यात्रा एवं नौसेना के विकास को आसान कर दिया। यूरोपवासियों ने कम्पास का ज्ञान अरबों से सीखा। इटली, स्पेन एवं पुर्तगाल के समुद्रतटीय इलाकों में नाव निर्माण कला में परम्परागत पद्धति की जगह खाँचा पद्धति विकसित हुई, जिससे बड़े एवं मजबूत जहाज बनाए जाने लगे। दूरबीन का आविष्कार भी हो चुका था जो सामुद्रिक अभियानों में काफी सहायक था। अब मानचित्र में काफी सुधार हो चुका था। इस संदर्भ में एस्ओलेब (अक्षांश जानने का उपकरण) भी महत्वपूर्ण था। पुर्तगालियों ने एक नई किस्म के हल्के और तेज चाल से चलने वाले जहाज कैरावल बनाये।

इस नये उपकरणों एवं साहस के बल पर यूरोपीय नाविकों ने अटलांटिक एवं भूमध्य सागर में अपने जहाज उतारे। इसी क्रम में 1488 ई० में पुर्तगाली व्यापारी बार्थोलोमियो डियाज अफ्रीका के पश्चिमी तट होते हुए दक्षिण अफ्रीका के दक्षिणतम बिन्दु उत्तम आशा अंतरीप (Cape of Good Hope) तक पहुँच गया।

तत्कालीन नाव का चित्र

Vasco da Gama

In 1492, Christopher Columbus discovered America. In 1498, Vasco da Gama, a courageous Portuguese sailor, reached Malabar coast of India (Calicut of Kerala). He was welcomed by the local ruler Zamorin. It is to be noted that Vasco da Gama's success owed also to some new resources. He met Abdul Majid, an Indian merchant, in South Africa and with his help he could get the direct route to come to India. His success encouraged the Europeans. The goods brought by Vasco da Gama from India were sold at a price 26 times greater in the European markets. The discovery of America or the 'New World' by Columbus in 1492 was a novel achievement of the Europeans. However, Columbus mistook it as a part of the Indian subcontinent and called its inhabitants the 'Red Indians'. Later Amerigo Vespucci, an Italian sailor, explored the new world comprehensively and called it a continent. This region came to be known as America after his name. In 1519 Magellan made the first circumnavigation of the earth in his ship and this confirmed the notion that all the oceans are interlinked. Later Colonel Cook also discovered Australia along with the islands of New Zealand. Sir John and Sebastian Cabot discovered the islands of Newfoundland. Different rulers of the European countries also played significant role in encouraging geographical explorations and discoveries, the chief among them being the Portuguese Prince Henry the Navigator and the Spanish Queen Isabella. Thus, by the 16th century, Europe had come to know the whole world.

Columbus

New world: The Europeans called the American continent the new world because before Columbus nobody knew about this part of the world.

(वास्कोडिगामा)

1492 ई० में क्रिस्टोफर कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज की गई। आगे 1498 ई० में पुर्तगाल का एक साहसी नाविक वास्कोडिगामा उत्तमआशा अंतरिप होते हुए भारत के मालाबार तट (केरल के कालीकट) तक पहुँच गया, जहाँ स्थानीय शासक 'जमोरीन' द्वारा उसका स्वागत किया गया। ज्ञातव्य है कि वास्कोडिगामा की सफलता के पीछे कुछ नवीन संसाधनों का भी योगदान था। भारत के एक व्यापारी अब्दुल मजीद की भेंट वास्कोडिगामा से दक्षिण अफ्रीका में हुई तथा इसी के सहयोग से उसे भारत आने का सीधा मार्ग मिल गया। इससे यूरोपीयन देशों के साहस में वृद्धि हुई। वास्कोडिगामा द्वारा भारत से लाए गए वस्तुओं को 26 गुणा मुनाफे पर यूरोपीय बाजारों में बेचा गया। 'अमेरिका' अर्थात् नई दुनिया की खोज यूरोपीयनों की एक नई उपलब्धि थी, जिसे 1492 में ही कोलम्बस ने प्राप्त किया। यद्यपि कोलम्बस ने अमेरिका को भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा समझा और यहाँ के निवासियों को रेड इंडियन कहा। बाद में इटली के नाविक अमेरिगो वेस्पुची ने नई दुनिया को विस्तार से ढूँढ़ा और इसे एक महाद्वीप बताया। इसी के नाम पर इस क्षेत्र का नाम अमेरिका पड़ा। 1519 ई० में मैग्लन ने पूरी दुनिया का चक्कर जहाज से लगाया और यह धारणा पुष्ट हो गई कि सभी समुद्र एक दूसरे से जुड़े हैं। आगे कैप्टन कुक ने ऑस्ट्रेलिया की भी खोज की, साथ-साथ न्यूजीलैंड के द्वीपों का भी पता लगाया। सर जॉन और सेवास्टिन कैबोट ने न्यूफाउंडलैंड के द्वीपों का पता लगया। । भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहन देने में विभिन्न यूरोपीय देशों के शासकों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमें पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी-द-नेवीगेटर तथा स्पेन की महारानी ईसाबेला प्रमुख थी। इस प्रकार 16 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक लगभग समस्त दुनिया की जानकारी यूरोप की हो चुकी थी।

(कोलम्बस)

नई दुनिया : अमेरिकी महाद्वीप को यूरोपीयों द्वारा नई दुनिया कहा गया। क्योंकि कोलम्बस की यात्रा से पूर्व इसकी कोई जानकारी नहीं थी।

प्रमुख खोज यात्राएं
प्रशांत महासागर

प्रमुख खोज यात्राएं
प्रशांत महासागर

Results of Geographical explorations and Discoveries

The results of geographical explorations were important and far-reaching. People for the first time, came to know about a big part of the universe and people of different countries came in each other's contact. The different civilizations of Asia and Europe that used to live in isolation, came in one another's contact. The discovery of the new countries promoted not only trade with the new colonies but also provided them opportunity to spread their civilization, culture, religion and literature. However, the European colonisation emerged as its negative consequence. These European countries exploited their colonies for their developmental and physical needs. More light can be thrown on the results of the geographical explorations under the following heads.

Results of Geographical explorations and Discoveries

- Impact on trade and commerce
- Development of colonial empires
- Development of commercialism
- Spread of Christianity and the western civilization
- Development of slave trade
- End of misconceptions and increase in the geographical knowledge

1. Impact on trade and commerce:

The discovery of new countries and the new trade ties brought revolutionary changes in the European trade and commerce. European countries began to be more prosperous by exploiting their colonies economically. As a result, the European trade reached its peak. This led to the development of currency system and then to cheque (hundi), debenture (rinpatra), trade credit. Trade no longer remained local; it began to take global form.

Before the exploration of the new countries, trade was confined chiefly to the Mediterranean Ocean and Baltic ocean, but now it spread to Atlantic, Indian and Pacific oceans. As a result, the cities such as Paris, London, Amsterdam, Antwerp, etc. became the chief centres of global trade and with this the monopoly of Italy over the European market came to an end. Instead, Spain, Portugal, Holland, England and France gained in influence. Later, Spain and Portugal were so engrossed in handling their huge empire that they lost their very empire. The precious metals or goods imported from the new countries discovered by the European countries,

भौगोलिक खोजों के परिणाम :

भौगोलिक खोजों के परिणाम :
- व्यापार-वाणिज्य पर प्रभाव
- औपनिवेशिक साम्राज्य का विकास
- वाणिज्यवाद का विकास
- ईसाई धर्म एवं पश्चिमी सभ्यता का प्रसार
- दास-व्यापार का विकास
- भ्रांतियों का अंत एवं भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि।

भौगोलिक खोजों के परिणाम काफी दूरगामी और महत्वपूर्ण साबित हुए। इस घटना ने पहली बार लोगों को संसार के एक वृहत भूखण्ड से परिचित कराया और विश्व के देश एक-दूसरे के सम्पर्क में आये। एशिया और यूरोप की विभिन्न सभ्यताओं का, जो पहले से विलग थी, परस्पर संपर्क स्थापित हुआ। नये देशों की खोजों के द्वारा न केवल नए उपनिवेशों के साथ व्यापार करने को प्रोत्साहन मिला वरन् उन्होंने वहाँ अपनी सभ्यता-संस्कृति, धर्म एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करने का भी प्रयास किया । परन्तु इसका नकारात्मक प्रभाव यूरोपीय उपनिवेशवाद के रूप में उभर कर सामने आया। अपनी विकसित एवं भौतिक आवश्यकताओं के निमित्त इन्होंने उन देशों का शोषण किया जो यूरोपीय देशों के उपनिवेश थे। भौगोलिक खोजों के परिणाम निम्नरूपेण स्पष्ट किये जा सकते हैं-

(1) व्यापार वाणिज्य पर प्रभाव : नये देशों की खोज एवं नये व्यापारिक संपर्कों से यूरोपीय व्यापार-वाणिज्य में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। उपनिवेशों के आर्थिक शोषण से यूरोपीय देश समृद्ध होने लगे। इस प्रगति ने यूरोपीय व्यापार को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया। फलस्वरूप मुद्रा व्यवस्था का विकास हुआ। हुंडी, ऋणपत्र आदि व्यापारिक साख का विकास हुआ। व्यापार अपने स्थानीय स्वरूप से विकसित हो कर वैश्विक रूप लेने लगा।

नये देशों की खोज के पूर्व व्यापार मुख्य रूप से भूमध्यसागर और बाल्टिक सागर तक ही सीमित था, परन्तु अब इसका स्थान अटलांटिक, हिंद तथा प्रशांत महासागरों ने लिया । फलतः पेरिस, लंदन, एम्सटरडम, एंटवर्प आदि शहर विश्वव्यापी व्यापार के प्रमुख केन्द्र बन गए और यूरोपीय व्यापार पर इटली का एकाधिकार जाता रहा। इसके बदले स्पेन, पुर्तगाल, हॉलैंड, इंग्लैंड तथा फ्रांस का प्रभाब बढ़ गया। कालांतर में अपने विशाल साम्राज्य को संभालने में स्पेन और पुर्तगाल इतने निमग्न हो गए कि इन्होंने अपना साम्राज्य ही खो दिया। यूरोपीय देशों द्वारा खोजे गए नये देशों से आयातित बहुमूल्य धातुओं विशेषकर

especially the gold and silver imported from America, changed the very form of economy. As a result, the European economy depended on silver for 80 years. This led to inflation. In the changed form of economy, commerce and trade became important and hence there was change in the class relation as well. Consequently, the merchant class became more influential than the feudal class.

Establishment of European companies in India

- Arrival of Portuguese-1498
- British East India Company - 1600
- Dutch - 1602
- French - 1664
- Danish - 1616
- Swedish- 1731

2. Development of colonial empire

After the geographical explorations the development of imperialism continued in the form of the founding of colonies and there was a fierce competition among the European countries in this regard. As a result, both the form and nature of trade underwent change. The organised trade companies took over in place of the individual merchants. These companies tried to get special rights and other facilities. Such companies came into being in countries such as England, Holland, Sweden, Denmark, France, etc. Some of these companies were sponsored by the tradesmen or merchants and others by the states. Later, colonies were founded in America, Africa, Australia and other groups of islands. In the beginning, Portugal and Spain were the leading colonisers but by the end of the 16th century and beginning of the 17th century, France also came into the race.

3. Development of commercialism

The modern capitalism came into being as a result of the discoveries of new countries and global extension of trade and commerce. In this system of economy, bullion gained in importance. The value of gold drew the attention of the European countries and so there was loot and storage of gold and silver at the international level. Spain was leading in finding the gold mines.

4. Spread of Christianity and the western civilization

As mentioned earlier, geographical discoveries helped spread of civilization, culture, religion and literature of the European countries. New geographical discoveries gave a new lease of life to the spread of Christianity which had almost ceased after the failure of religious war. The Christian missionaries went to Africa, Asia and America to spread their religion.

अमेरिका से आयातित सोना तथा चांदी ने अर्थव्यवस्था के स्वरूप को ही बदल दिया। फलतः 80 वर्षों तक यूरोपीय अर्थव्यवस्था चांदी पर निर्भर रही। इससे मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न हो गई। बदले हुए आर्थिक स्वरूप में व्यापार की प्रधानता बनी और वर्ग संबंधों में परिवर्तन आने लगे। इसके फलस्वरूप समाज के सामंती वर्ग के बदले में व्यापारी वर्ग का प्रभाव बढ़ा।

भारत में यूरोपीय कंपनियों की स्थापना
- पुर्तगालियों का आगमन–1498
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी–1600
- डच–1602
- फ्रांसीसी–1664
- डेनिश–1616
- स्वीडिश–1731

(2) औपनिवेशिक साम्राज्यों का विकास : भौगोलिक खोजों के उपरांत उपनिवेशों की स्थापना के रूप में साम्राज्यवाद का विकास जारी रहा और यूरोपीय राष्ट्रों में तीव्र प्रतिस्पर्द्धा भी चलती रही। इसके फलस्वरूप व्यापार के माध्यम और स्वरूप में भी परिवर्तन आये। व्यक्तियों की जगह अब संगठित व्यापारिक कंपनियों ने व्यापार का संचालन आरम्भ किया और इसी उद्देश्य से विशेषाधिकार तथा अन्य सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए ये कंपनियाँ प्रयत्नशील हुईं। इंग्लैंड, हॉलैंड, स्वीडेन, डेनमार्क, फ्रांस आदि देशों में ऐसी कंपनियाँ स्थापित हुई। इनमें से कुछ कम्पनियाँ व्यापारियों के द्वारा प्रायोजित थे और कुछ राज्य द्वारा। आगे अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य द्वीप समूहों में उपनिवेश एवं बस्तियाँ बसाई गई। प्रारम्भ में पुर्तगाल और स्पेन उपनिवेश स्थापित करने में अग्रणी रहे परन्तु 16 वीं सदी के अंत तथा 17 वीं सदी के प्रारम्भ में फ्रांस भी शामिल हो गया।

(3) वाणिज्यवाद का विकास : नये देशों की खोज तथा व्यापार के वैश्विक विस्तार के फलस्वरूप आधुनिक पूँजीवाद का जन्म हुआ। इस आर्थिक व्यवस्था में बुलियन की महत्ता बढ़ी। सोने की महत्ता ने यूरोपीय देशों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोने एवं चांदी की लूट हुई। साथ-साथ इसका भंडारण भी किया जाने लगा। इन भंडारों की प्राप्ति में स्पेन अग्रणी था।

(4) ईसाई धर्म एवं पश्चिमी सभ्यता का प्रसार : जैसा कि पूर्व में उल्लिखित है कि भौगोलिक खोजों ने यूरोपीय देशों की सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार किया। धर्मयुद्धों की असफलता के कारण ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार जो धीमा पड़ गया था, नये भौगोलिक खोजों ने इसमें प्राण डाल दिये। ईसाई धर्म प्रचारकों ने अफ्रीका, एशिया तथा अमेरिका के दुर्गम स्थलों में जाकर अपना धर्म प्रचार किया।

However, there was a negative consequence as well. Missionaries converted the people of these regions by force or by offering money for conversion and so there was protest against this forced conversion and cultural invasion. On the other hand, the spread of the religion lessened the power of the church. The knowledge gained through the geographical discoveries led to questioning against religion on several issues. Reasoning came to be used in religious matters as well. This formed the background of the religious reformation.

5. Development of the slave trade

The value of human labour in the trade-commerce, developed as a result of geographical discoveries, encouraged slave trade. The natives of the newly discovered countries such as America, Africa and Australia began to be sold in the European market. In the beginning, the slave trade was at the individual level but by the end of the 16th century it assumed the form of a formal trade. These slaves were used to cut jungles, do farming, make roads, fuel the ships and other tough works. They were also subjected to inhuman and barbaric torture. Thus, it proved to be a negative consequence of the geographical discoveries; the undeveloped, naïve and weak native people were exploited by the so-called civilised and developed ones.

6. End of misconceptions and increase in the geographical knowledge

Geographical discoveries helped in doing away with misconception in connection with geographical knowledge. As a result the people began to question the concepts spread by the church. Later it proved a major factor of the religious reformation movement. The discovery of the new hemisphere gave the unprecedented knowledge about the pettiness of Europe and the importance of the world and goaded the people for new inventions and discoveries. Its message is very evident in the Spanish coin *'there is more ahead.'*

The increased sea activities provided opportunities for the development of different equipments/ gadgets such as maps, compasses, constellation system used in sea voyages. As a result, there emerged a host of scholars and professional scientists associated with these disciplines. Later, this class played a significant role in the 'Renaissance'

Other results
- Emergence of new cities in Europe especially Italy
- Increase in the importance of the Mediterranean ocean
- Development of capitalism, commercialism and imperialism
- Increase in navigation activities

परन्तु इसका नकारात्मक प्रभाव यह पड़ा कि इन क्षेत्रों में धन का लालच देकर एवं जबरन धर्मान्तरण एवं सांस्कृतिक अतिक्रमण किया गया और इसका विरोध भी हुआ। दूसरी तरफ धर्म के व्यापक प्रसार ने चर्च की प्रभुसत्ता को कम किया। भौगोलिक खोजों के कारण हुई ज्ञान में वृद्धि से तत्कालीन धर्म के विषय में कई प्रश्न उठ खड़े हुए। धर्म को भी तर्क की कसौटी पर कसा जाने लगा जिसने धर्म सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि का निर्माण किया ।

(5) दास व्यापार का विकास : भौगोलिक खोजों के परिणामस्वरूप विकसित हुए व्यापार-वाणिज्य में 'मानव श्रम' की महत्ता ने दास व्यापार को प्रोत्साहित किया। नये अन्वेषित क्षेत्रों जैसे अमेरिका, अफ्रीका तथा ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों को पकड़कर उन्हें यूरोप के बाजारों में बेचा जाना शुरू हुआ। आरम्भ में गुलामों का व्यापार व्यक्तिगत स्तर पर था किन्तु 16 वीं शताब्दी के अंत में इसने बकायदा व्यापार का रूप धारण कर लिया। इन गुलामों से जंगल को काटने, खेती करने, सड़क बनाने, जहाजों में ईंधन झोंकने आदि कठिन कार्य करवाये जाते थे तथा इनपर अमानवीय बर्बर अत्याचार किये जाते थे। इस प्रकार भौगोलिक खोजों का यह नकारात्मक परिणाम था कि इसने तथाकथित सभ्य एवं विकसित लोगों द्वारा अविकसित, भोले-भाले एवं कमजोर लोगों का शोषण किया।

(6) भ्रांतियों का अंत एवं भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि : भौगोलिक खोजों ने भौगोलिक ज्ञान के संदर्भ में व्याप्त भ्रांतियों को तोड़ने का कार्य किया। इससे चर्च द्वारा प्रसारित अवधारणाओं पर अंगुली उठने लगी। कालान्तर में यह यूरोप में धर्म सुधार आंदोलन का कारण बना। नए गोलार्द्ध के आविष्कार से यूरोप की क्षुद्रता और दुनिया की महत्ता की अभूतपूर्व जानकारी ने मनुष्य को नए-नए आविष्कारों के रास्ते पर खड़ा कर दिया। इसका संदेश स्पेनिश सिक्के 'सामने और भी है' से स्पष्ट होता है।

अन्य परिणाम :
- यूरोप विशेषकर इटली में नये नगरों का उद्‌भव
- भूमध्यसागर के महत्त्व में वृद्धि
- पूँजीवाद, वाणिज्यवाद और साम्राज्यवाद का विकास
- नौसैनिक क्रियाकलापों में वृद्धि

बढ़े हुए सामुद्रिक गतिविधियों ने समुद्री यात्राओं में उपयोगी विभिन्न उपकरणों यथा-नक्शे, कम्पास, नक्षत्र प्रणाली आदि के विकसित होने का अवसर प्रदान किया। इससे संबंधित विद्वानों एवं पेशेवर वैज्ञानिकों के वर्ग का जन्म हुआ। कालांतर में इसी वर्ग ने 'पुनर्जागरण' में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

7. Other results

Inter-continental exchange of different new crops took place due to geographical discoveries. For example, goods like mocha, tea, sugarcane, maize(mecca), potato, tobacco, indigo etc. entered Europe and from there goods like tea, coffee, tobacco, potato etc. entered India.

Thus, it can be claimed that the geographical discoveries brought out a new outlook of the world. There was a change in the thought process and the scientific thought became acceptable, religious superstition began to be dispelled, on the other hand, commerce and imperialism developed with the discovery of new territories and new routes or passages. This Europeanized the whole world.

Exercise

Each of the questions given below has four options indicated by a, b, c & d. Of the four options, one is correct or the most suitable. While answering the questions, please write the option indicators a, b, c, or d against each question as the case may be.

I. Objective questions

1. Vasco da Gama was a traveller from -
(a) Spain (b) Portugal (c) England (d) America

2. From whom did the Europeans learn the use of compass?
(a) From India (b) From Rome
(c) From Arabs (d) From China

3. Who discovered Cape of Good hope?
(a) Columbus (b) Vasco da Gama (c) Magellan(d) Dias Bartolomeu

4. In which year was America discovered?
(A) 1453 (b) 1492 (c) 1498 (d) 1519

5. In which year did Constantinople fall?
(a) 1420 (b) 1453 (c) 1510 (d) 1498

6. Who was the first traveller to make the first circumnavigation of the earth?
(a) Magellan (b) Captain Cook
(c) Vasco da Gama (d) Marco Polo

(7) अन्य परिणाम : भौगोलिक खोजों से विभिन्न प्रकार के नवीन फसलों का अंतर महाद्वीपीय आदान-प्रदान हुआ। जैसे- यूरोप में कहवा, चाय, गन्ना, मक्का, आलू, तम्बाकू, नील आदि नवीन वस्तुओं का प्रवेश हुआ तथा यूरोप के माध्यम से चाय, कॉफी, तम्बाकू, आलू का भारत जैसे देशों में आगमन हुआ। भारतीय फसल आम, गन्ना आदि दूसरे क्षेत्रों में गये।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भौगोलिक खोजों से विश्व की एक नई रूपरेखा सामने आयी। विचारों में परिवर्तन आये तथा वैज्ञानिक विचारों को मान्याताएँ मिली। धार्मिक अंधविश्वास टूटने लगे। दूसरी तरफ नये क्षेत्रों के अन्वेषणों तथा नवीन मार्गों के खोज के फलस्वरूप पूँजीवाद, वाणिज्य और साम्राज्यवाद का विकास हुआ । इसने दुनिया का यूरोपीयकरण कर दिया।

अभ्यास :

निर्देश: नीचे दिये गये प्रश्न में चार संकेत चिह्न हैं। जिनमें एक सही या सबसे उपयुक्त है। प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रश्न संख्या के सामने वह संकेत चिह्न (क, ख, ग, घ) लिखें जो सही अथवा सबसे उपयुक्त हो।

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. वास्कोडिगामा कहाँ का यात्री था?
   (क) स्पेन (ख) पुर्तगाल
   (ग) इंग्लैंड (घ) अमेरिका
2. यूरोप वासियों ने दिशासूचक यंत्र का प्रयोग किनसे सीखा ?
   (क) भारत से (ख) रोम से
   (ग) अरबों से (घ) चीन से
3. उत्तमआशा अंतरीप **(Cape of Good Hope)** की खोज किसने की?
   (क) कोलम्बस (ख) वास्कोडिगामा
   (ग) मैग्लेन (घ) डियाज बार्थोलोमियो
4. अमेरिका की खोज किस वर्ष की गई ?
   (क) 1453 (ख) 1492
   (ग) 1498 (घ) 1519
5. कुस्तुनतुनिया का पतन किस वर्ष हुआ ?
   (क) 1420 (ख) 1453
   (ग) 1510 (घ) 1498
6. विश्व का चक्कर किस यात्री ने सर्वप्रथम लगाया ?
   (क) मैग्लेन (ख) कैप्टन कुक
   (ग) वास्कोडिगामा (घ) मार्कोपोलो

II. Tick (√) before the correct statement and cross (x) before the wrong one.

1. The native inhabitants of India are called Red Indians.
2. The discovery of the Cape of Good Hope paved the way to reach India.
3. India is situated on the eastern coast of Atlantic Ocean.
4. Marco Polo discovered India.
5. Jerusalem is in modern Israel.
6. Lisbon was a very big centre of slave trade.
7. Amerigu discovered the new world extensively.

III. Answer the following questions in one sentence.

1. Which merchant/ tradesman helped Vasco da Gama in reaching India?
2. Who discovered Newfoundland?
3. What is the name given to the fast moving ship made by the Europeans?
4. Which is the southernmost point of the south Africa?
5. Why did the religious war between the Christians and the Muslims take place in 11-12th century?
6. Who captured Constantinople in 1453?
7. Near which Ocean are Portugal and Spain situated?

IV. Short answer questions (Answer these questions in not less than 30 words and not more than 50 words.

1. Why is the medieval age of Europe called the Dark Age or the Age of Darkness?
2. What role did scientific gadgets play in geographical discoveries?
3. How did geographical discoveries affect trade-commerce?
4. How did geographical discoveries dispel misconceptions?
5. How did geographical discoveries bring change in the world map?

V. Long answer Questions (Answer these questions in not more than 200 words.)

1. What is meant by geographical discoveries? How did it reduce the distance within the world?
2. Explain the reasons of geographical discoveries?
3. Write the newly discovered lands on the world map and tell how will you have traded with India if you had been in Europe before the geographical discoveries?
4. What do you understand by the Dark age? How did geographical discoveries help in getting out of the Dark Age?
5. Describe the results of the geographical discoveries? What impact did it leave on the world?

II. नीचे दिये गए कथनों में जो सही हो उनके सामने सही (✓) तथा जो गलत हों उनके सामने गलत (✗) का चिह्न लगाएँ।

1. भारत के मूल निवासियों को रेड इंडियन कहा जाता है।
2. उत्तमाशा अंतरीप की खोज ने भारत तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया।
3. भारत अटलांटिक महासागर के पूर्वी तट पर स्थित है।
4. मार्कोपोलो ने भारत की खोज की।
5. जेरूसलम वर्तमान 'इजरायल' में है।
6. लिस्बन दास-व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था।
7. अमेरिगो ने नई दुनिया को विस्तार से खोजा।

III.. एक वाक्य में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें।

1. भारत आने में किस भारतीय व्यापारी ने वास्कोडिगामा की मदद की ?
2. न्यूफाउन्डलैंड का पता किसने लगाया ?
3. यूरोपीयों द्वारा निर्मित तेज चलने वाले जहाज को क्या कहा जाता था?
4. दक्षिण अफ्रीका का दक्षिणतम बिंदु कौन सा स्थल है?
5. 11वीं-12वीं शताब्दी में ईसाई एवं मुसलमानों के बीच धर्मयुद्ध क्यों हुआ था?
6. 1453 में कुस्तुनतुनिया पर किसने आधिपत्य जमाया ?
7. पुर्तगाल एवं स्पेन किस महासागर के पास अवस्थित हैं ?

IV. लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्नों का उत्तर कम से कम 30 एवं अधिकतम 50 शब्दों में दें।

1. यूरोप में मध्यकाल को अंधकार का युग क्यों कहा जाता है?
2. भौगोलिक खोजों में वैज्ञानिक उपकरणों का क्या योगदान था?
3. भौगोलिक खोजों ने व्यापार-वाणिज्य पर किस प्रकार प्रभाव डाले?
4. भौगोलिक खोजों ने किस प्रकार भ्रांतियों को तोड़ा ?
5. भौगोलिक खोजों ने किस प्रकार विश्व के मानचित्र में परिवर्तन किया?

V. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में दें।

1. भौगोलिक खोजों का क्या तात्पर्य है? इसने किस प्रकार विश्व की दूरियाँ घटाई?
2. भौगोलिक खोजों के कारणों की व्याख्या करें।
3. नये अन्वेषित भूभागों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करें। और यह बतावें कि भौगोलिक खोजों से पूर्व आप यदि यूरोप में होते तो भारत से किस प्रकार व्यापार करते।
4. अंधकार युग से क्या समझते हैं? अंधकार युग से बाहर आने में भौगोलिक खोजों ने किस प्रकार मदद की?
5. भौगोलिक खोजों के परिणामों का वर्णन करें। इसने विश्व पर क्या प्रभाव डाला?

Chapter-2

AMERICAN STRUGGLE FOR INDEPENDENCE

The beginning of modern era in the world history is associated with many events. The discovery of new sea routes in the 15th century by European countries is also included in them. Its goal was to develop new commercial ways so that the economy of European countries might be enriched by trade and commerce. In order to achieve that, Columbus discovered American continent in 1492. Again Amerigo Vespucci told us comprehensively about this large mainland. Gradually European countries established their colonies in this region. France and England mainly established their supremacy in North America.

At that very time, new political thoughts were being expanded in Europe and ideas like individual freedom, protest against despotic power, equality and fraternity were being popular among the people especially among intellectuals. Geographical distance of American colonies from England and ideological difference of inhabitants gradually created such circumstances that England and its colonies really came on separate edges. The changing economic situation of that time also increased conflict between both. Gradually colony dwellers came forward to get rid of the supremacy of England.

Reason :

American struggle for independence is an important event in the world history. It has the following reasons:

1. Lack of political autonomy in colonies: There were mostly Englishmen in American colonies who had seen English parliamentary system and laws. So they wanted that type of democratic system in their colonies while the British were against it. The Governors of Colonies were nominated by the King of England.

इकाई-2

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम

विश्व इतिहास में आधुनिक काल का प्रारंभ जिन घटनाओं के साथ जोड़ा जाता है उनमें यूरोपीय देशों द्वारा 15 वीं शताब्दी में नए समुद्री मार्गों की खोज भी शामिल है। इसका उद्देश्य नए व्यापारिक मार्गों को विकसित करना था ताकि यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्था को व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से समृद्ध बनाई जा सके। इसी क्रम में 1492 में कोलम्बस ने अमेरिकी महाद्वीप की खोज की। पुनः अमेरिगो वेस्पुची ने इस वृहद भूखंड के बारे में विस्तृत जानकारी दी। धीरे-धीरे यूरोपीय देशों ने इस क्षेत्र में अपने उपनिवेश भी बसा लिए। उत्तरी अमेरिका में मुख्य रूप से फ्रांस और इंग्लैण्ड ने अपना वर्चस्व स्थापित कर दिया।

लगभग उसी समय यूरोप में नए राजनैतिक विचारों का प्रतिपादन भी हो रहा था और व्यक्ति की स्वतंत्रता, निरंकुश सत्ता का विरोध, समानता और बंधुत्व जैसे विचार लोगों के बीच, विशेष कर प्रबुद्ध वर्ग के बीच लोकप्रिय होते जा रहे थे। इंग्लैण्ड से अमेरिकी उपनिवेशों की भौगोलिक दूरी और वहाँ के निवासियों की वैचारिक भिन्नता ने धीरे-धीरे एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जहाँ वैचारिक स्तर पर इंग्लैण्ड और उसके उपनिवेश वस्तुतः दो अलग-अलग स्तरों पर आ गए। उस समय की बदलती हुई आर्थिक व्यवस्था ने भी इन दोनों के बीच मतभेदों को बढ़ाया। धीरे-धीरे उपनिवेशवासी इंग्लैण्ड के वर्चस्व से मुक्त होने के लिए अग्रसर हुए। इसी का परिणाम अमेरिकी स्वंत्रता संग्राम के रूप में सामने आया।

कारण :

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है जिसके निम्नलिखित कारण थे:-

1. उपनिवेशों में राजनीतिक स्वायत्तता का अभाव :

अमेरिकी उपनिवेशों में अधिकांश अंग्रेज लोग थे जिन्होंने इंग्लैण्ड की संसदीय व्यवस्था एवं विधि-विधान को देखा था। अतः वे अपने उपनिवेश में भी उसी तरह की प्रजातांत्रिक व्यवस्था चाहते थे जबकि ब्रिटिश शासक इसके खिलाफ थे। उपनिवेशों के गवर्नर इंग्लैण्ड के राजा द्वारा मनोनीत किए जाते थे ।

Who were endowed with many privileges but were not responsible to colony dwellers. As a result, there was always a situation of conflict. The colony dwellers were not considered able to govern so they were very dissatisfied.

2. Geographical distance: There was a great distance between England and America. They both were situated at different edges of Atlantic Ocean. Since there was lack of the means of transportation and communication at that time, the British government was unable to have effective control over colonies. So, the colony dwellers got benefit during freedom struggle.

•Reasons of American Struggle for Independence

- Lack of political autonomy in colonies
- Rise of the middle class
- Geographical distance
- Conflict between religions and social system
- Effect of seven-year war
- Anti-development economic policy
- Objectionable taxes
- The role of writers and preachers
- Despotic policy of George III
- Immediate reason: Boston Tea Party

3. Conflict between religion and social system: There was conflict between American colonies and England on religious and social levels**.** On the one hand the Britishers followed Anglican ideology and believed in the supremacy of the church, on the other hand the American people had faith in Puritan ideology. Having suffered religious harassment, the Protestants and the Puritans had taken shelter in America, leaving England. They were inspired by the feeling of struggle and freedom from the very beginning and many a times they had demonstrated their military capacity. That is the reason that the Americans did not want to be associated with their motherland. The British society was based on feudal and aristocratic system whereas American society was based on equality and democratic system. Thus, there was religious and social equality in America which helped them strongly in freedom struggle.

4. Effect of seven-year war : A Seven-Year War was waged between England and France from 1756 to 1763. Before this war, the colony dwellers were strongly associated with England because they were unable to save themselves from the French in Canada. But in this war, France was defeated and they came out of that fear. Now the only aim of the colony dwellers was to

जिन्हें विशेषाधिकार भी प्राप्त थे और वे उपनिवेशवासियों के प्रति उत्तरदायी नहीं थे। फलतः संघर्ष की स्थिति बनी रहती थी। उपनिवेशवासियों को शासन के योग्य नहीं माना जाता था जिसके कारण उनमें भारी असंतोष था।

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के कारण :

- उपनिवेशों में राजनीतिक स्वायत्तता का अभाव
- मध्यम वर्ग का उदय
- भौगोलिक दूरी
- धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था में मतभेद
- सप्तवर्षीय युद्ध का प्रभाव
- प्रगति विरोधी आर्थिक नीति
- लेखकों एवं प्रचारकों की भूमिका
- जॉर्ज तृतीय की निरंकुश नीति
- तात्कालिक कारण–बोस्टन चाय पार्टी

2. भौगोलिक दूरी :

इंग्लैण्ड और अमेरिका की भौगोलिक दूरी काफी अधिक थी। यह दोनों क्षेत्र अटलांटिक महासागर के दो अलग-अलग छोर पर स्थित थे। चूँकि उस समय यातायात एवं संचार साधनों का अभाव था, अतः व्यवहारिक रूप से ब्रिटिश सरकार अपने उपनिवेशों पर प्रभावशाली नियंत्रण बनाए रखने में असमर्थ थी जिसका फायदा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उपनिवेशवासियों को मिला।

3. धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था में मतभेद :

अमेरिकी उपनिवेश एवं ब्रिटेन के बीच धार्मिक एवं सामाजिक स्तर पर भी मतभेद थे, जहाँ एक ओर ब्रिटिशवासी ऐंग्लिकन मत को मानते थे और चर्च के आधिपत्य में विश्वास करते थे वहीं दूसरी ओर अमेरिकी जनता प्यूरिटन मतावलंबी थी। धार्मिक उत्पीड़न से तबाह होकर प्रोटेस्टेंटों एवं प्यूरिटनों ने इंग्लैण्ड छोड़कर अमेरिका में शरण ली थी। उनमें प्रारंभ से ही जुझारूपन एवं स्वतंत्रता की भावना विद्यमान थे तथा सैनिक क्षमता का प्रदर्शन भी वे कई बार कर चुके थे। यही कारण है कि अमेरिका वासी अपने मातृदेश के साथ संबंध नहीं रखना चाहते थे।

ब्रिटिश समाज सामंतवादी एवं कुलीन व्यवस्था पर आधारित थी जबकि अमेरिकी समाज समतामूलक एवं प्रजातांत्रिक व्यवस्था पर आधारित था। इस प्रकार अमेरिका में धार्मिक एवं सामाजिक समरसता विद्यमान थी जिसने स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया।

4. सप्तवर्षीय युद्ध का प्रभाव :

सप्तवर्षीय युद्ध इंग्लैण्ड एवं फ्रांस में 1756 से 1763 ई० के बीच हुआ था। इस युद्ध से पूर्व तक उपनिवेशवासी इंग्लैण्ड से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे क्योंकि वे कनाडा में फ्रांसीसियों के विरुद्ध अकेले अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे। लेकिन इस युद्ध में फ्रांस की पराजय के साथ

dispossess England. Prof. Pollard commented on this war. "The defeat of France provoked the Americans' desire of freedom."

5. Anti-development economic policy: A great conflict arose due to economic reasons. The basic concept of colonialism is that the ruling country has right to exploit the colony economically and utilize its resources. On the other hand, the concept of free trade was developing in which the control over trade by the state was opposed. According to this concept, the colony dwellers did not like the interference of England in their trade and other activities. So, the developing middle class in colonies wanted the end of the aristocratic rule by England.

6. Objectionable taxes : England had to face a great loss in the seven-year war. So as compensation, the then Prime Minister Grenville passed Stamp Act in 1765. According to this act, it was mandatory to fix a stamp of 20 shilling on all the court papers, newspapers etc. This act raised a great fury among colony dwellers and they decided to boycott the goods imported from Britain. In 1767 the British Parliament imposed taxes on all the consumer items. These items were paper, glass, tea and varnish. The colony dwellers raised their strong voices against these taxes and Samuel Adams gave a slogan - "No representation, No taxes." To oppose the action of British government, the colony dwellers established organisations like 'the sons of freedom' and 'the daughters of freedom.'

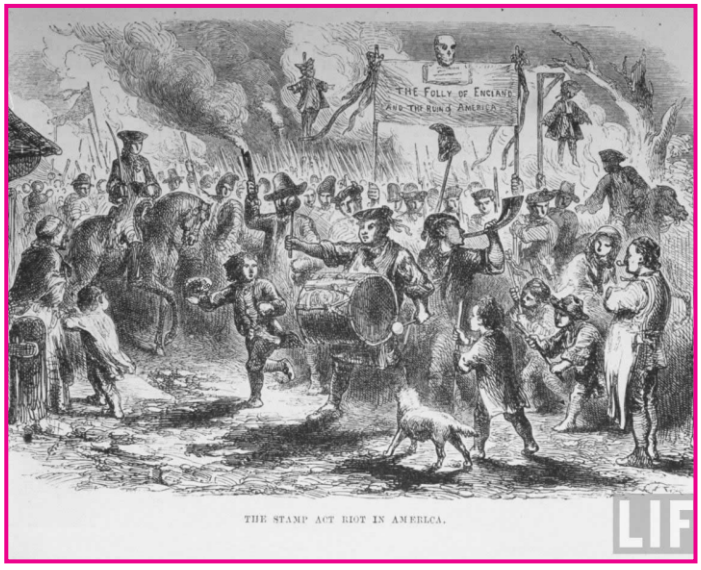

Protest against Stamp Act

ही यह भय समाप्त हो गया। अब उपनिवेशवासियों का एकमात्र लक्ष्य इंग्लैण्ड को बेदखल करना था। इस युद्ध पर टिप्पणी करते हुए प्रो० पोलार्ड ने कहा था– ''फ्रांस की पराजय ने अमेरिकावासियों की स्वतंत्रता की इच्छा को भड़काया।''

5. प्रगति विरोधी आर्थिक नीति :

सबसे गंभीर मतभेद आर्थिक कारणों से उत्पन्न हुए थे। उपनिवेशवाद का बुनियादी सिद्धांत यह था कि उपनिवेशों के आर्थिक शोषण और उनके संसाधनों के दोहन का अधिकार मातृदेश को है। दूसरी ओर उन्मुक्त व्यापार की धारणा विकसित हो रही थी जिसमें राज्य द्वारा व्यापार को नियंत्रित करने का विरोध किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार उपनिवेशवासी अपने व्यापार एवं अन्य क्रियाकलापों में इंग्लैण्ड के हस्तक्षेप को नापसंद करते थे। अत: उपनिवेशों में विकसित हो रहा मध्यम वर्ग इंग्लैण्ड के कुलीन वर्गीय शासन का अंत चाहता था।

6. आपत्तिजनक कर :

सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड की काफी आर्थिक क्षति हुई थी। अत: क्षतिपूर्ति हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री ग्रेनविल ने 1765 ई० में स्टांप एक्ट पारित किया जिसके अनुसार सभी अदालती कागजों, अखबारों आदि पर 20 शिलिंग का स्टांप लगाना अनिवार्य था। इस कानून से उपनिवेशों में व्यापक विरोध की भावना जाग उठी और उपनिवेशवासियों ने ब्रिटेन से आने वाली सभी वस्तुओं का बहिष्कार करने का निश्चय किया। 1767 ई० में ब्रिटिश संसद ने उपभोक्ता वस्तुओं पर कर लगाया। ये वस्तुएँ थी – कागज, शीशा, चाय एवं रोगन। उपनिवेशवासियों ने इन करों का व्यापक विरोध किया तथा स्टांप एक्ट का विरोध करते हुए उपनिवेशवासी सैमुअल एडम्स ने 'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं' का नारा दिया। ब्रिटिश सरकार की कार्रवाइयों का विरोध करने के लिए उपनिवेशवासियों ने 'स्वाधीनता के पुत्र' एवं 'स्वाधीनता की पुत्रियाँ' आदि संस्थाएँ स्थापित की।

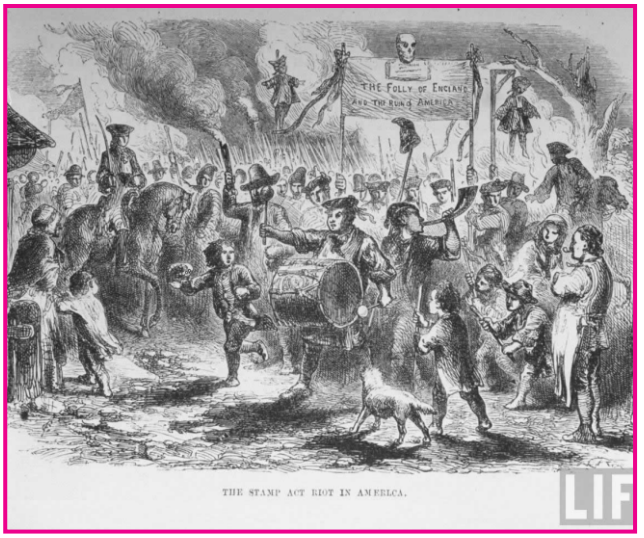

स्टांप एक्ट का विरोध करते हुए उपनिवेशवासी

7. The role of writers and preachers : The writers and preachers played a great role in awakening the feelings of freedom. In 1776, Thomas Paine published a magazine 'Common Sense'. It effectively and excitedly advocated the necessity of independence. It opposed monarchy strongly. Thomas Jefferson supported the right to rebel and encouraged their desire of freedom.

8. Despotic policy of George III : The British ruler, George III, adopted despotic policy for American colony. This policy was not popular even in England. He believed in the doctrine of individual ruling while the power of the council of ministers began to increase in England. The irresponsible ways of George III ruined the possibilities of peaceful solution of the crisis aroused in colonies which became an important factor of freedom struggle.

9. Immediate reason - Boston Tea Party: According to Tea Act in 1773, East India Company got the monopoly of exporting tea leaf from India to America.

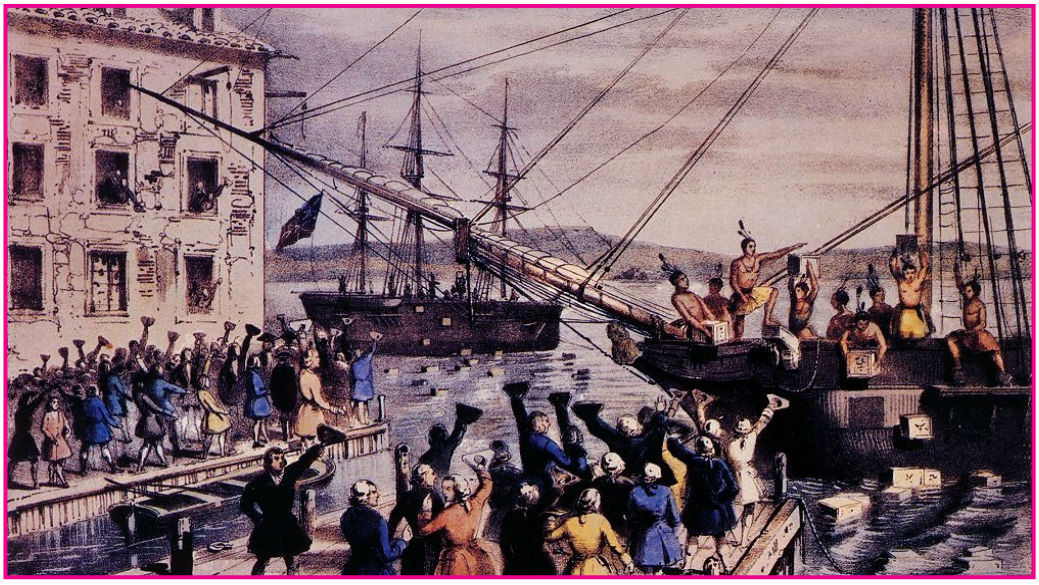

Incident of Boston Tea Party

7. लेखकों एवं प्रचारकों की भूमिका :

स्वतंत्रता की भावना जगाने में लेखकों एवं प्रचारकों की अहम् भूमिका रही है। 1776 ई० में टॉमस पेन की लघु पत्रिका कॉमनसेंस प्रकाशित हुई। इसमें अत्यंत प्रभावशाली एवं उत्तेजक शैली में स्वतंत्रता की आवश्यकता पर बल दिया गया। उसने राजतंत्र पर भी करारा प्रहार किया। टॉमस जैफर्सन ने उपनिवेशवासियों के विद्रोह करने के अधिकार का समर्थन किया और उनकी बढ़ती हुई स्वतंत्रता की इच्छा को प्रोत्साहन दिया।

8. जॉर्ज तृतीय की निरंकुश नीति :

इंग्लैण्ड के शासक जॉर्ज तृतीय ने सत्ता संभालते ही अमेरिकी उपनिवेश के प्रति निरंकुश नीति अपनाई। उसकी यह नीति इंग्लैण्ड में भी अलोकप्रिय थी। वह व्यक्तिगत शासन के सिद्धांत में विश्वास रखता था जबकि इंग्लैण्ड में मंत्रिमंडल की शक्तियाँ बढ़ने लगी थी। जॉर्ज तृतीय के अनुत्तरदायी रवैए ने उपनिवेशों के साथ उत्पन्न हुए संकट के शांतिपूर्ण समाधान की संभावनाओं को वस्तुतः ध्वस्त कर दिया जो स्वतंत्रता संग्राम हेतु उत्तरदायी कारक के रूप में सामने आया।

9. तात्कालिक कारण: बोस्टन चाय पार्टी :

1773 ई० में चाय कानून द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत से सीधे अमेरिका चाय भेजने का

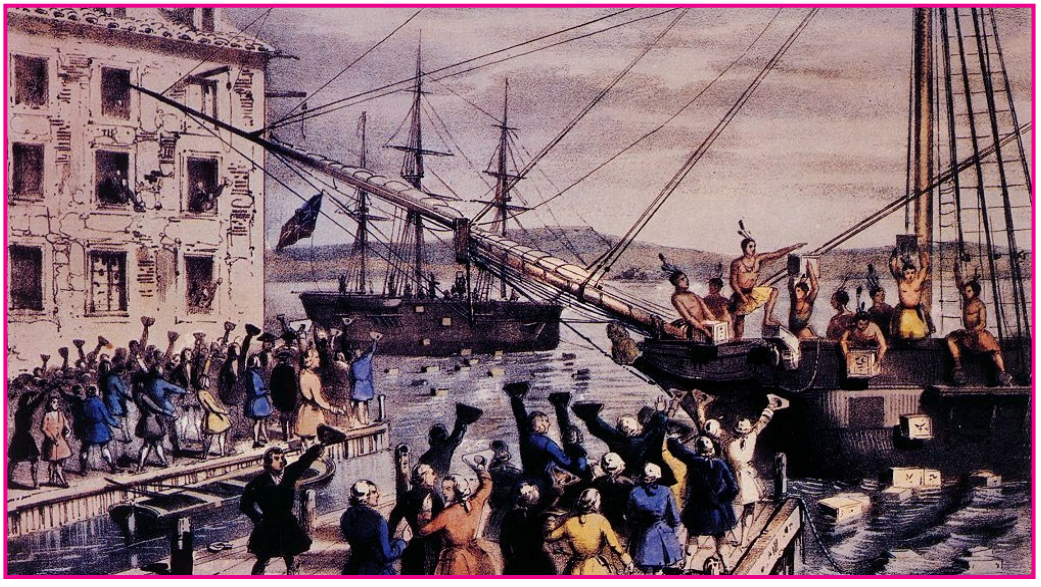

बोस्टन चाय पार्टी की घटना

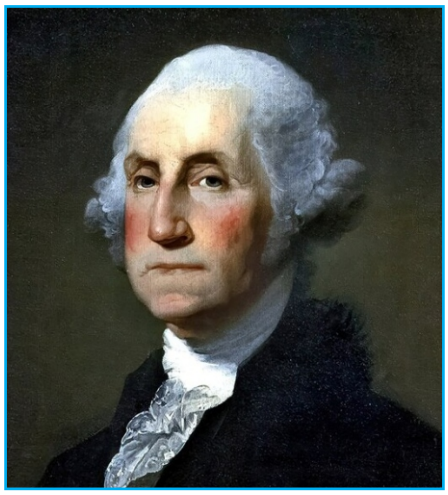

George Washington

The colony dwellers opposed it very strongly. When the ship loaded with tea leaf reached the Boston harbour of America, some of the citizens clad like tribals (Red Indian) went on the ship and threw the tea boxes into the sea. So, the British government imposed commercial ban on the Boston harbour and pushed the American colony into the fire of rebel.

On 5th September 1774, the representatives of 13 colonies organised a Continental Conference in Philadelphia in which it was decided to oppose the British rules and boycott the trade. The first battle between the British army and the company dwellers broke out on 18 April, 1775 in Lexington. After that the Second Continental Conference was held in Philadelphia on July 4, 1776. In this conference, 'the manifesto of Freedom' prepared by Thomas Jefferson was issued and George Washington was appointed General of American colony.

Announcement of American Independence

लदा हुआ जहाज अमेरिका के बोस्टन बंदरगाह पर पहुँचा तो वहाँ के कुछ नागरिक आदिवासियों (रेड इंडियन) जैसे कपड़े पहने उस जहाज पर पहुँचे और उन्होंने चाय की सभी पेटियाँ समुद्र में फेंक दी। इस घटना को 'बोस्टन टी पार्टी' के नाम से जाना जाता है। अत: ब्रिटिश सरकार ने बोस्टन बंदरगाह पर व्यापारिक प्रतिबंध लगा दिया और इस प्रकार अमेरिकी उपनिवेश को विद्रोह की आग में धकेल दिया।

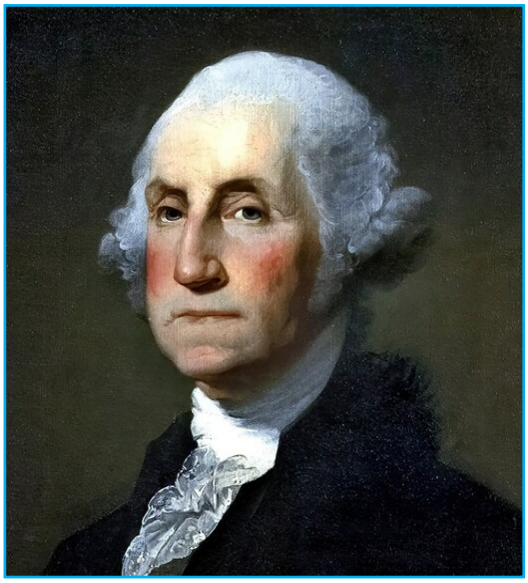

जॉर्ज वाशिंगटन

5 सितम्बर 1774 ई० को 13 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों का फिलाडेल्फिया शहर में एक महादेशीय सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें ब्रिटिश कानूनों का विरोध तथा व्यापार के बहिष्कार का निर्णय हुआ। 18 अप्रैल 1775 को ब्रिटिश सेना तथा उपनिवेश वासियों के बीच लेक्सिंगटन में प्रथम संघर्ष हुआ। इसके पश्चात् 4 जुलाई 1776 ई० में फिलाडेल्फिया में दूसरा महादेशीय सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें टॉमस जैफर्सन द्वारा तैयार किया गया 'स्वतंत्रता का घोषणा पत्र' जारी किया

अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा

Thus began the American struggle for freedom and it ended on February 3, 1783 by Paris treaty, The Constitution of America was formed in 1787 and came into action in 1789. George Washington was nominated the first President of America.

Effects:

American independence struggle is considered to be the line of demarcation in the world history. Its immediate and far reaching implications are remarkable:

1. The British lost America, which was their valued possession. A powerful nation, United States of America came into existence beyond the Atlantic ocean and influenced the world.
2. American freedom struggle was a revolt against the ban on trade and commerce. So it strengthened the theory of 'Laissez-faire' by Adam Smith.
3. George III and his ministers were blamed for the defeat of England and as a result:
    a. The dream of George III of becoming a dictator was dashed off.
    b. The Council of Ministers of Lord North was dismissed and a liberal Council of Minsters was appointed.
    c. Several steps for reformation in England were taken up very shortly.
        i. The Parliament of Ireland became nearly free (1782)
        ii. Catholic Irish people got the right to vote (1793).
        iii. The Irish Parliament was associated with Westminster Parliament.(1800)
4. American freedom struggle influenced France, too. The French army under the leadership of Lafayette took part in this struggle. When they came back to their motherland, they tried to awaken the people against the despotic monarchy. On the other hand the economy of France was badly affected.

गया तथा जॉर्ज वाशिंगटन को अमेरिकी उपनिवेश का सेनापति नियुक्त किया गया। इस प्रकार अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम पूरी तरह आरंभ हो गया, जो 3 फरवरी, 1783 को पेरिस की संधि द्वारा समाप्त हुआ तथा 1787 ई० में संविधान का निर्माण हुआ, जो 1789 ई० में लागू हुआ। जॉर्ज वाशिंगटन को प्रथम राष्ट्रपति बनाया गया।

परिणाम :

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम को विश्व इतिहास में एक विभाजन रेखा के रूप में देखा जाता है। इसके तात्कालिक एवं दीर्घकालिक परिणाम दोनों ही निर्णायक थे।

1. ब्रिटेन का एक कीमती उपनिवेश हाथ से निकल गया तथा अटलांटिक महासागर के पार संयुक्त राज्य अमेरिका के रूप में एक शक्तिशाली राष्ट्र का उदय हुआ जिसने पूरे विश्व को प्रभावित किया।
2. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम एक तरह से वाणिज्यवादी प्रतिबंधों के विरुद्ध एक विद्रोह था। अत: इसने 'एडम स्मिथ' के लैसेज फेयर (मुक्त व्यापार) के सिद्धांत को मजबूत किया।
3. ब्रिटेन की हार का दोष जॉर्ज तृतीय तथा उसके मंत्रियों के मत्थे मढ़ा गया, फलत:-
   (क) तानाशाह बनने का जॉर्ज तृतीय का सपना चूर हो गया ।
   (ख) लार्ड नॉर्थ का मंत्रिमंडल बर्खास्त तथा अधिक उदार मंत्रिमंडल नियुक्त हुआ।
   (ग) इंग्लैण्ड में जल्द ही कई सुधार लागू हुए, जैसे-
      (i) आयरलैंड की संसद को लगभग स्वतंत्र स्थान प्राप्त हआ (1782 ई० में)।
      (ii) कैथोलिक आयरिश लोगों को मताधिकार मिला। (1793 ई० में)
      (iii) आयरिश संसद, वेस्टमिंस्टर संसद से जुड़ा । (1800 ई० में)
4. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने फ्रांस को भी प्रभावित किया। इस संग्राम में 'लाफायेत' के नेतृत्व में फ्रांसीसी सैनिकों ने भाग लिया था। अत: जब वे स्वदेश लौटे तो निरंकुश राजतंत्र के प्रति जनता को जागरूक करने का प्रयास किया। दूसरी ओर फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था भी बुरी तरह प्रभावित हुई।

5. The participation of people in politics came into practice.
6. The people got religious and internal freedom and the basic freedom was accepted through fundamental rights.
7. The first written constitution came into force in America in 1789 by which the women got the right to property and succession laws were made judicious.
8. America was declared a democratic country and Minster Quirk's theory of 'the separation of powers' was accepted.
9. The right of adults to vote did not come into action and women were kept deprived of the right to vote. The right to vote was based on property which was not judicious.
10. The United States of America emerged as a new nation for the first time where written constitution, theory of the separation of powers, theory of secularism and the theory of individual freedom were considered as the fundamental principles of political system. These theories were expanded in Europe also and the French revolution in 1789 adopted them as guiding principles and established them across the world.

The Impact of Industrialization

During American Freedom Struggle, the Industrial Revolution from West Europe was permeating into American society. So, there emerged immense possibilities of economic development. There also developed a new work culture; several industries and factories were established. Raw materials to be used in these factories were already available. As a result of industrialisation, the agriculture sector also got encouragement and support of the economic sector and registered unprecedented success that helped in the emergence of the USA as a strong and powerful developed nation.

5. राजनीति में जनता की भागीदारी का मार्ग प्रशस्त हुआ।

6. जनता को धार्मिक एवं अन्त:करण की स्वतंत्रता मिली तथा मौलिक अधिकारों के माध्यम से लोगों की मूलभूत स्वतंत्रता स्वीकार कर ली गई।

7. विश्व का प्रथम लिखित संविधान अमेरिका में 1789 ई० में लागू किया गया जिसमें महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार मिला तथा उत्तराधिकार कानून को न्यायसंगत बनाया गया।

8. अमेरिका गणतंत्र बना तथा वहाँ मॉण्टेस्क्यू के 'शक्ति पृथक्करण सिद्धांत' को मान्यता मिला।

9. वयस्क मताधिकार लागू नहीं हुआ तथा स्त्रियों को भी मताधिकार से वंचित रखा गया। मताधिकार का आधार संपत्ति को बनाया गया जो उचित नहीं था।

10. इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका का गठन एक नए राज्य के रूप में हुआ जिसमें पहली बार लिखित संविधान, शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत, धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सिद्धांत राजनैतिक व्यवस्था के मूल आधार माने गए। इन सिद्धांतों का प्रसार यूरोप में भी हुआ और फ्रांस की राज्यक्रांति ने 1789 में इन्हीं सिद्धांतों को मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में समस्त विश्व के लिए स्थापित कर दिया।

औद्योगीकरण का प्रभाव

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही पश्चिमी यूरोप की औद्योगिक क्रांति नवनिर्मित अमेरिकी समाज में प्रवेश कर रही थी। अत: इससे आर्थिक प्रगति की अपार संभावनाओं का उदय हुआ। अब यहाँ एक नई कार्य-संस्कृति विकसित हुई तथा अनेक उद्योग-धंधों एवं कल-कारखानों का निर्माण हुआ जिसके लिए कच्चा माल पहले से ही मौजूद था। औद्योगीकरण के फलस्वरूप कृषि को भी प्रोत्साहन मिला। अत: आर्थिक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हासिल हुई जिसका परिणाम एक सशक्त एवं विकसित देश के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका का उदय था।

The reasons for the failure of England

Though England was a powerful nation and had several colonies around the world, it had to face defeat in American freedom struggle. The following are the causes of its failure:

1. American colonies were situated at a distance of 300 miles beyond the Atlantic Ocean. So, it was not easy to send military forces and food items there in time. The British army, on the other hand, were not familiar with the geography of American region.
2. The American power was underestimated and most of the British took it only as a civil war.
3. The inhabitants of the colony were united and filled with zeal. They were ready to cross any limit for their freedom.
4. The British Generals made some strategic mistakes.
5. There was some severe disagreement among the British politicians. Due to the policy of rigidity of George III. The able and experienced leaders kept themselves aloof from the government.
6. Britain remained deprived of foreign support while American colonies got the full external support. France in particular provided military and financial support to the inhabitants of colonies.
7. America had a capable leader like George Washington who defeated the English army with great patience, courage and skill.

इंग्लैण्ड की असफलता के कारण

यद्यपि इंग्लैण्ड काफी शक्तिशाली था एवं विश्व में उसके कई उपनिवेश भी थे। परन्तु उसे अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में हार का मुँह क्यों देखना पड़ा? इंग्लैण्ड की असफलता के निम्न कारण थे:-

1. अमेरिकी उपनिवेश अटलांटिक महासागर के पार 3,000 मील की दूरी पर स्थित थे। अत: वहाँ समय से सेना एवं रसद पहुँचने में कठिनाई होती थी। दूसरी ओर अमेरिका की भौगोलिक स्थिति से भी अंग्रेजी सैनिक परिचित नहीं थे।
2. अमेरिका की शक्ति को नजरअंदाज किया गया एवं अधिकांश अंग्रेज इसे गृहयुद्ध ही समझते रहे।
3. उपनिवेशवासियों में एकता एवं उत्साह था। वे स्वतंत्रता के लिए कुछ भी करने को तैयार थे।
4. ब्रिटिश सेनापतियों ने कुछ सामरिक भूलें की।
5. ब्रिटिश राजनेताओं के बीच गंभीर मतभेद थे। जॉर्ज तृतीय की हठधर्मिता की नीति के कारण योग्य एवं अनुभवी नेता सरकार से अलग रहे।
6. ब्रिटेन विदेशी सहायता से वंचित रहा जबकि अमेरिकी उपनिवेशों को विदेशी सहायता प्राप्त हुई। विशेष कर फ्रांस ने उपनिवेशवासियों को धन-जन से काफी मदद पहुँचाई।
7. अमेरिका को जॉर्ज वाशिंगटन जैसा सुयोग्य नेता मिल गया जिसने बड़े धैर्य, साहस एवं कुशलता के साथ अंग्रेजी सेना को पराजित किया।

Table - 1

13 Colonies of America

The names of colonies:

1. New Hampshire
2. Massachusetts
3. Rhode Island
4. Connecticut
5. New York
6. New jersey
7. Pennsylvania
8. Delaware
9. Maryland
10. Virginia
11. North Carolina
12. South Carolina
13. Georgia

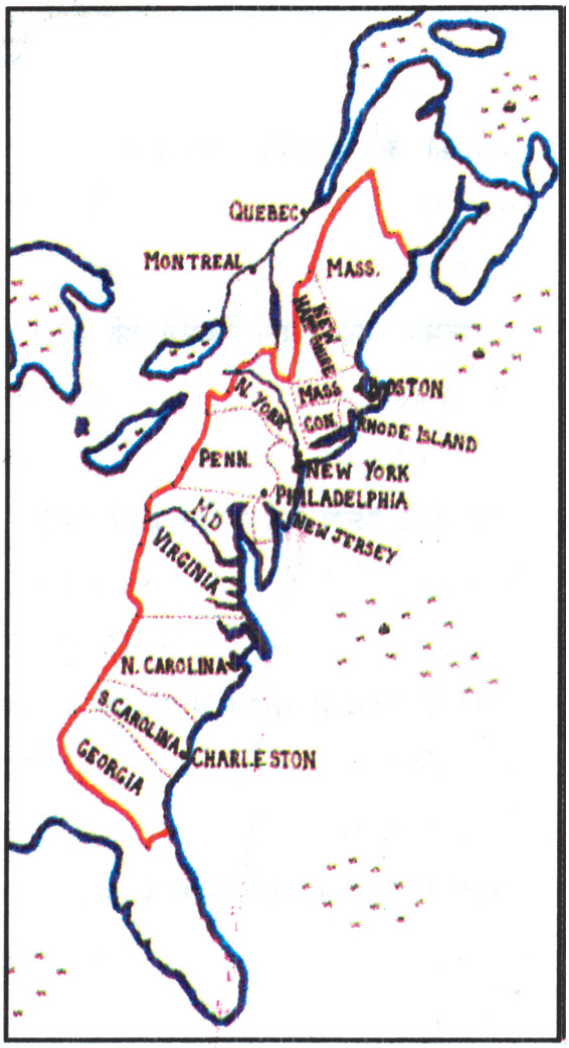

तालिका-1

अमेरिका के 13 उपनिवेश

उपनिवेशों के नाम:

1	न्यू हैंपशायर
2	मैसाचुसेट्स
3	रोड आइलैंड
4	कनेक्टिकट
5	न्यूयॉर्क
6	न्यूजर्सी
7	पेनसिलवेनिया
8	डेलावेयर
9	मेरीलैण्ड
10	वर्जीनिया
11	उत्तरी कैरोलाइना
12	दक्षिणी कैरोलाइना
13	जॉर्जिया

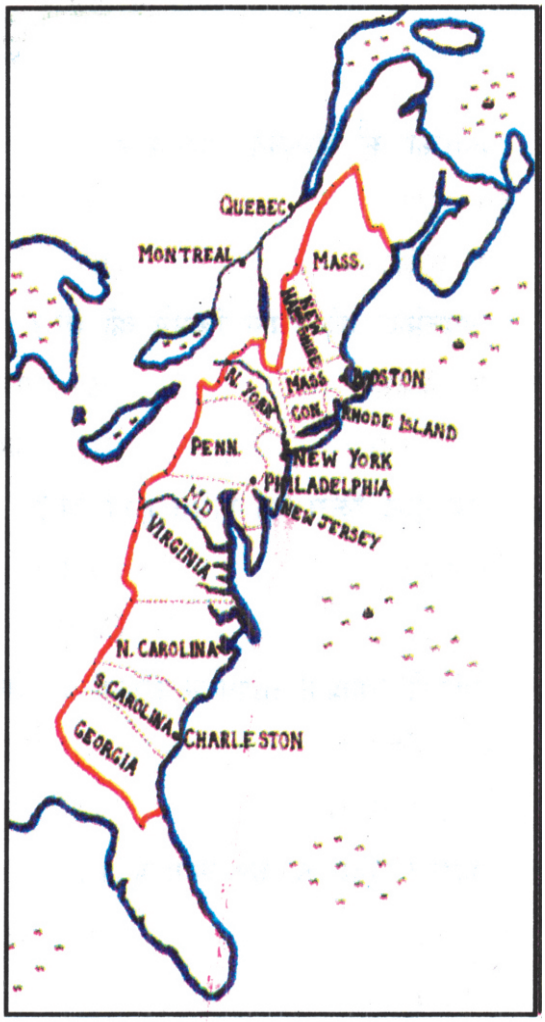

EXERCISE

I. Objective type questions:

1. Where is the capital of the United States of America?
   (a) New York (b) California
   © Washington (d) None of these

2. Who wrote 'Common Sense'?
   (a) Jefferson (b) Thomas Paine
   (c) Washington (d) Lafayette

3. When was the Stamp Act passed?
   (a) 1765 (b) 1764
   (c) 1766 (d) 1767

4. Who was the British General in American freedom struggle?
   (a) Washington (b) Valles Ely
   (c) Cornwallis (d) Curzon

5. When did the constitution of the USA come into force?
   (a) 1787 (b) 1789
   (c) 1791 (d) 1793

6. In which country was the written constitution first promulgated?
   (a) England (b) France
   (c) America (d) Spain

7. By which treaty did the American freedom struggle get acceptance?
   (a) The treaty of Paris (b) The treaty of Villafranca
   (c) The treaty of Newly (d) The treaty of Sevres

8. Who was the American General in American freedom struggle?
   (a) Grenville (b) Jefferson
   (c) Lafayette (d) Washington

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. अमेरिका की राजधानी कहाँ है ?

(क) न्यूयॉर्क (ख) कैलिफोर्निया

(ग) वाशिंगटन (घ) कोई नहीं।

2. 'कॉमनसेंस' की रचना किसने की थी ?

(क) जैफर्सन (ख) टॉमस पेन

(ग) वाशिंगटन (घ) लाफायेत

3. स्टांप एक्ट किस वर्ष पारित हुआ था ?

(क) 1765 (ख) 1764

(ग) 1766 (घ) 1767

4. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में अँग्रेजों का सेनापति कौन था ?

(क) वाशिंगटन (ख) वेलेजली

(ग) कॉर्नवालिस (घ) कर्जन

5. अमेरिकी संविधान कब लागू हुआ ?

(क) 1787 (ख) 1789

(ग) 1791 (घ) 1793

6. विश्व में प्रथम लिखित संविधान किस देश में लागू हुआ ?

(क) इंग्लैण्ड (ख) फ्रांस

(ग) अमेरिका (घ) स्पेन

7. किस संधि के द्वारा अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम को मान्यता मिली ?

(क) पेरिस की संधि (ख) विलाफ्रांका की संधि

(ग) न्यूली की संधि (घ) सेब्रे की संधि।

8. अमेरिकी स्वतंत्रता में अमेरिका का सेनापति कौन था ?

(क) ग्रेनविल (ख) जैफर्सन

(ग) लाफायेत (घ) वाशिंगटन

9. Who was the first president of the United States of America?
(a) George Washington (b) Abraham Lincoln
(c) Roosevelt (d) Al gore

10. Which two countries were indulged in the seven-year war?
(a) Britain-America (b) France Canada
(C) Britain -France (d) America Canada

II. Fill in the blanks:

1. _____ gave the theory of 'Laissez-Faire'?
2. _____ propounded the theory of the 'Separation of powers'?
3. General Lafayette was a resident of _____.
4. George III was the _____ of England.
5. The secular stage was first established in _____.
6. _____ discovered the New World (America).
7. The British had _____ colonies in America.
8. Modern democratic rule was first established in _____.
9. The immediate reason for American freedom struggle was_____.
10. _____ wrote the 'Rights of Man'.

III. Pick out the right/wrong statement and put a tick (√) or cross (x) mark in the box given alongside.

1. George Washington was the first president of the USA ☐
2. America is situated in Europe ☐
3. During American freedom struggle, the organisation named 'the son and daughter of freedom' emerged ☐
4. Columbus did not discover America. ☐
5. France was with England in American freedom struggle. ☐
6. Jefferson prepared the manifesto of American freedom. ☐
7. Stamp Act was passed in the time of Grenville. ☐

9. **अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ?**

(क) जॉर्ज वाशिंगटन (ख) अब्राहम लिंकन

(ग) रूजवेल्ट (घ) अलगोर

10. **सप्तवर्षीय युद्ध किन दो देशों के बीच हुआ था?**

(क) ब्रिटेन-अमेरिका (ख) फ्रांस-कनाडा

(ग) ब्रिटेन-फ्रांस (घ) अमेरिका-कनाडा

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. लैसेज फेयर का सिद्धांत ..... ने दिया था।
2. शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत ..... ने दिया था।
3. सेनापति लाफायेत ..... का रहने वाला था।
4. जॉर्ज तृतीय इंग्लैण्ड का ..... था।
5. धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना सर्वप्रथम ..... में हुई।
6. नई दुनिया (अमेरिका) का पता ..... ने लगाया था।
7. अमेरिका में अँग्रेजों ..... के उपनिवेश थे।
8. सर्वप्रथम आधुनिक गणतंत्रात्मक शासन की स्थापना ..... में हुई।
9. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का तात्कालिक कारण ..... था।
10. 'राइट्स ऑफ मैन' की रचना ..... ने की थी।

III. सही/गलत कथन का चुनाव करें तथा उसके सामने कोष्ठक में उपयुक्त चिह्न अंकित करें:

1. जॉर्ज वाशिंगटन अमेरिका के प्रथम प्रधानमंत्री थे। ☐
2. अमेरिका यूरोप महादेश में स्थित है। ☐
3. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वाधीनता के पुत्र एवं पुत्री नामक संगठन का निर्माण हुआ था। ☐
4. अमेरिका की खोज कोलम्बस ने नहीं किया था। ☐
5. अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम में फ्रांस ने इंग्लैण्ड का साथ दिया था। ☐
6. अमेरिका स्वतंत्रता का घोषणा पत्र जैफर्सन ने तैयार किया था। ☐
7. स्टांप एक्ट ग्रेनविल के समय पारित हुआ था। ☐

IV. Answer in 10 words.

(1) Democracy (2) Fundamental right (3) Franchise
(4) Colony (5) Monarchy

V. Short answer type questions:

1. Why was America or 'The New World' discovered?
2. The discovery of the New World proved a boon for England. How?
3. The theory of 'Laissez Faire' motivated the colony dwellers for revolution. How?
4. How can you say that the American freedom struggle left an impact on France?
5. Did the result of the American freedom struggle leave impact on the colonial world?

VI. Long answer type question:

1. Discuss the three main reasons for American freedom struggle.
2. How has American freedom struggle motivated the world democratically?
3. Examine the results of the American freedom struggle critically.
4. What are the reasons for the defeat of the British in American freedom struggle?

IV. 10 शब्दों में उत्तर दें।

1. गणतंत्र
2. मौलिक अधिकार
3. मताधिकार
4. उपनिवेश
5. राजतंत्र

V. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अमेरिका या नई दुनिया की खोज क्यों हुई?
2. नई दुनिया की खोज इंग्लैण्ड के लिए वरदान साबित हुआ, कैसे ?
3. मुक्त व्यापार के सिद्धांत ने उपनिवेशवासियों को क्रांति के लिए प्रेरित किया, कैसे?
4. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने फ्रांस पर भी प्रभाव डाला है, कैसे?
5. क्या अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के परिणामों ने औपनिवेशिक विश्व को प्रभावित किया?

VI. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के तीन प्रमुख कारणों की विवेचना कीजिए।
2. लोकतांत्रिक स्तर पर अमेरिकी संग्राम ने विश्व को कैसे प्रभावित किया है?
3. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के परिणामों की आलोचनात्मक परीक्षण करें।
4. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में अँग्रेजों के पराजय के क्या कारण थे?

CHAPTER – 3

THE FRENCH REVOLUTION

The French revolution of 1789 was a landmark in the history of Europe, ending an era and heralding another one. The revolution having abolished monarchy in France installed new thoughts of 'Liberty', 'equity' and 'fraternity and new principle of human right that - 'man is born free' and thus gave challenge to the old traditions of Europe. Outbreak of such type of independence of thought was the result of renaissance in Europe, that gave birth to many nationalist revolutions in Europe. These revolutions were against feudalist and autocratic system of government as well as the social system responsible for exploitation. In this course, the freedom struggle of America started in 1776 and in 1783 independence of its colonies overthrew the old regime of France and paved, the way for establishment of a society with independent thoughts. As France had to support America in this war, against Britain so the wave of independence reached France after America and the armies supported the public in France.

To know why and how the French revolution took place, we shall have to study the politics and society of that time. Though France was a powerful country in the eighteenth century and occupied a vast area in the North America, Western archipelago and on the island of Madagascar in Africa, yet the foundation of power was not strong. Lack of economic resources due to protected war and extravagance of the rulers put great pressure of taxes on the people of France and the oppression of social inequalities brought them on the brink of revolution. Hence, explanation fo the reasons responsible for revolution can be done in the following ways :

इकाई–3

फ्रांस की क्रांति

सन् 1789 की फ्रांस की क्रांति यूरोप के इतिहास में एक युगान्तकारी घटना थी, जिसने एक युग का अन्त और दूसरे युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया। इस क्रांति ने फ्रांस में राजतंत्र को समाप्त कर सामाजिक व्यवस्था के नये विचारों– 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' तथा मानव अधिकार के नये सिद्धान्तों– 'आदमी स्वतंत्र पैदा होता है', को प्रतिष्ठापित किया और यूरोप की पुरानी रीतियों तथा संस्थाओं को चुनौती दी। इस तरह के विचार–स्वातंत्र्य का प्रादुर्भाव यूरोप में पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप हुआ था, जिसने यूरोप में कई राष्ट्रवादी क्रांतियों को जन्म दिया। ये क्रांतियाँ सामन्तवादी एवं निरंकुश शासन व्यवस्था तथा शोषण करने वाली सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ थीं। इसी क्रम में सन् 1776 ई० में शुरू हुआ अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम और सन् 1783 ई० में ब्रिटेन के विरुद्ध उसके उपनिवेशों की स्वाधीनता ने फ्रांस की पुरातन व्यवस्था को समाप्त कर स्वतंत्र विचार वाले समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। चूँकि फ्रांस ने इस युद्ध में ब्रिटेन के खिलाफ अमेरिका की मदद की थी, अतः अमेरिका के बाद स्वतंत्रता की लहर फ्रांस में आई और इन सैनिकों ने फ्रांस में जनता का साथ दिया।

फ्रांस की क्रांति क्यों और कैसे हुई, यह समझने के लिए हमें तत्कालीन राजनीति एवं समाज का अध्ययन करना होगा। यद्यपि अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस एक शक्तिशाली राज्य था, उसने उत्तरी अमेरिका के एक विस्तृत क्षेत्र, पश्चिमी द्वीप समूह और अफ्रीका में मेडागास्कर के टापू पर अधिकार कर लिया था, फिर भी सत्ता की नींव मजबूत नहीं थी। लम्बे समय तक चले युद्धों के कारण आर्थिक संसाधनों की कमी तथा शासकों की फिजूलखर्ची ने फ्रांस की जनता पर अत्यधिक करों का बोझ डाल दिया और सामाजिक विषमताओं के उत्पीड़न ने उन्हें क्रांति के कगार पर ला दिया। अतः क्रांति के उत्तरदायी कारणों की व्याख्या निम्न तरीके से की जा सकती है।

3.1 Political cause:

France had monarchical system of government . The reputation and honour of the empire in the reign of Louis XIV of Bourbon dynasty was on the top but his successors proved incompetent. Louis XVI was enthroned in 1774 He was a great despotic, extravagant and incompetent rulers. He was married to the princess of Austria, Marie Antoinette who used to waste money on festivities and interferd in the state affairs for appointment of her own men on the higher posts. Fifteen thousand employees in the Versailles Palace of King had no work but got heavy amount as salaries. Nine percent of revenue was spent on them. In the reign of Louis XVI, France got additional burden of loan of 10 billion liver (the then French currency) in getting thirteen colonies of America free from Britain. The continued lack of economic resources compelled the king to raise the taxes on public for meeting with his regular expenses.

Political reasons:

- Despotic and incompetent
- The cabinet did not meet rule for 175 years.
- The policy of highly centralized government

There was lack of control on the despotic kingship. Although the States General was the parliamentary institution, yet it was a big example of the autocracy of the King after 1614 for 175 years. There was no meeting of the cabinet. It vindicated the autocracy of Louis XIV, who said "I am the state", but since he was a competent and able ruler, he suppressed the revolts successfully. Thus, he was having the sole power of the state, but his successors lacked such qualities.

To have a check on the autocracy and arbitrariness of the King, there was an institution in France, named Parlma, established in the form of the court. It was 17 in number. The post of judges were reserved for nobility and aristocratic class and the posts were hereditary. As per need, the King compelled them to agree to his will on the basis of money. Thus, practically and virtually the King had its control over it.

3.1 राजनैतिक कारण :

फ्रांस में राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी। बूर्बो राजवंश के लुई XIV के शासन काल में साम्राज्य की प्रतिष्ठा उच्च शिखर पर थी, लेकिन उसके बाद के शासक अयोग्य सिद्ध हुए। सन् 1774 ई० में लुई XVI गद्दी पर बैठा, जो अत्यधिक निरंकुश, फिजूलखर्च एवं अयोग्य था। उसका विवाह ऑस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी अन्तोयनेत के साथ हुआ था, जो उत्सवों में काफी रुपये लुटाती थी, और अपने खास आदमियों को ओहदे दिलाने के लिए राजकार्य में दखल देती रहती थी। राजा के वर्साय स्थित महल में पन्द्रह हजार अधिकारी ऐसे थे जो कोई भी काम नहीं करते थे, मगर अपार धनराशि वेतन के रूप में लेते थे। राजस्व का 9 प्रतिशत इन्हीं पर व्यय होता था। लुई XVI के शासन काल में अमेरिका के तेरह उपनिवेशों को ब्रिटेन से आजाद कराने में फ्रांस पर 10 अरब लिव्रे (तत्कालीन फ्रांस की मुद्रा) से भी अधिक का कर्ज बढ़ गया था। पहले से ही चली आ रही आर्थिक संसाधनों की कमी ने राजा को अपने नियमित खर्च को चलाने के लिए जनता पर करों में वृद्धि के लिए बाध्य किया।

राजनैतिक कारण

- निरंकुश एवं अयोग्य शासन संसद की बैठक 175 वर्षों तक नहीं बुलाई गयी।
- अत्यधिक केन्द्रीयकरण की नीति।
- स्वायत्त शासन का अभाव मेरी अन्तोयनेत का प्रभाव

निरंकुश राजतंत्र पर नियंत्रण का अभाव था। यद्यपि स्टेट्स जनरल (States General) संसदीय संस्था थी, लेकिन राजा की निरंकुशता का यह एक बड़ा उदाहरण था कि सन् 1614 ई० के बाद 175 वर्षों तक इसकी कोई बैठक नहीं हुई थी। लुई XIV की निरंकुशता इस बात से पता चलता है कि वह कहा करता था कि 'मैं ही राज्य हूँ' (I am the state) लेकिन चूँकि वह योग्य शासक था, विद्रोहियों को कुशलतापूर्वक दबा देता था। अत: उस समय राज्य की पूरी शक्ति उसके हाथ में निहित हो गयी थी, लेकिन उसके उत्तराधिकारियों में इस तरह के गुणों का अभाव था।

राजा की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता पर अंकुश लगाने के लिए फ्रांस में पार्लमा नामक संस्था थी, जिसकी संख्या 17 थी और जिसका गठन न्यायालय के रूप में किया गया था। न्यायाधीशों का पद कुलीन वर्ग के लिए सुरक्षित होता था और ये पद वंश क्रमानुगत होते थे। आवश्यकता पड़ने पर राजा इन्हें पैसे के बल पर अपनी बात मनवाने के लिए बाध्य कर देते थे। इस तरह व्यवहार में इस पर भी राजा का ही नियंत्रण होता था।

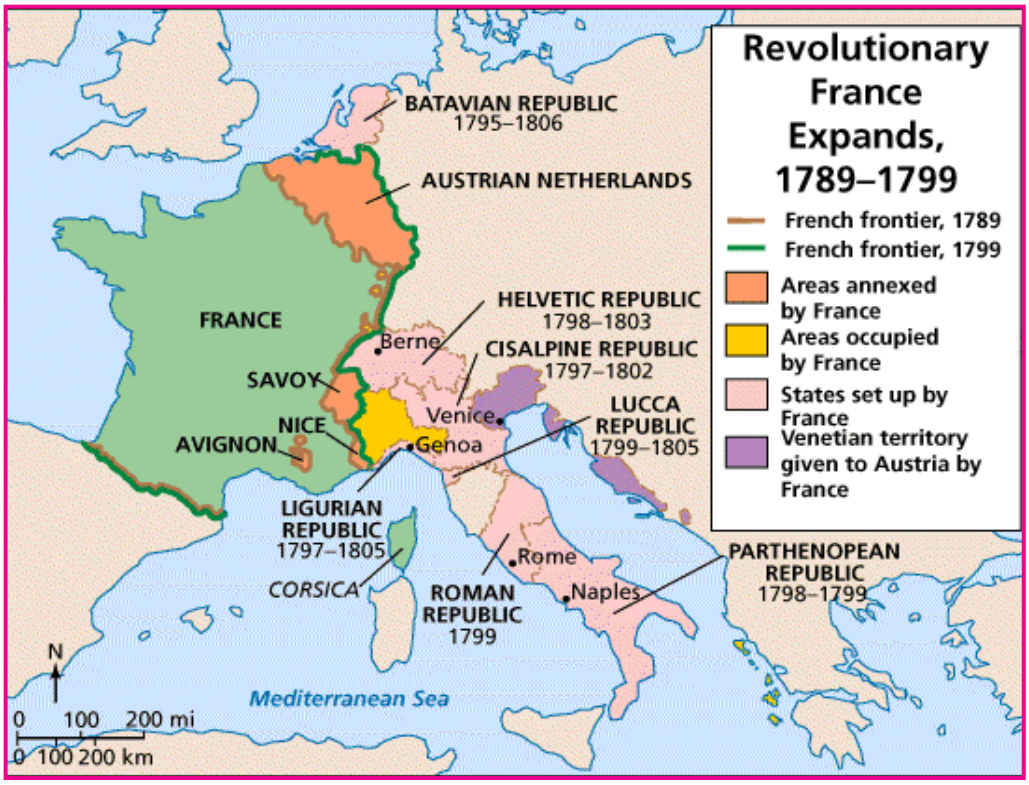

Political map during the French Revolution

The tendency of centralisation was the biggest defect of the French administration. There was lack of autonomous government, while in the neighbouring England, the autonomous institutions ran the government. In France, everywhere, there was dominance of Versailles palace. In addition to the King, Marie Antoinette misused the power. That made the people totally against the concepts of monarchy. By 1789 the people became impetuous for participating in the government. That time there was no institution in France to control their violent attitudes.

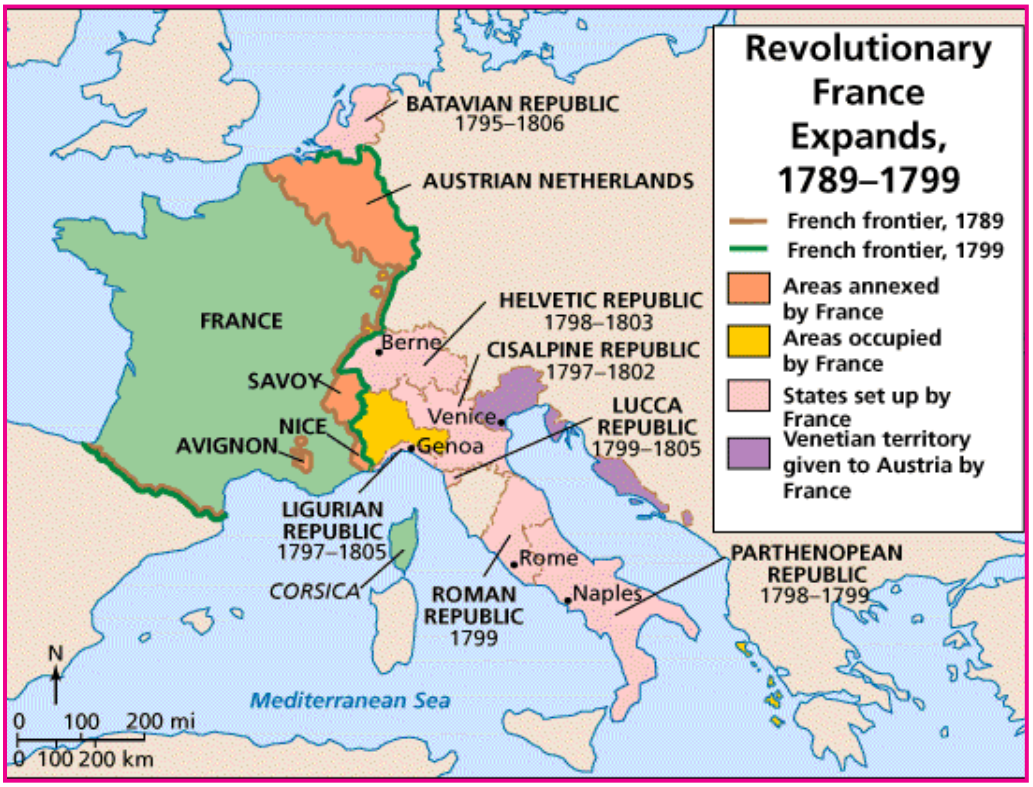

सन् 1789 ई0 फ्रांस का राजनीतिक मानचित्र

केंद्रीयकरण की प्रवृत्ति फ्रांसीसी शासन की सबसे बड़ी बुराई थी। स्वायत्त शासन का सर्वथा अभाव था, जबकि पड़ोस के इंग्लैंड में इस तरह के शासन का संचालन स्वायत्त शासन की संस्थाओं द्वारा होता था। फ्रांस में हर जगह वर्साय के राजमहल की ही प्रधानता थी। राजा के अलावे मेरी अन्तोयनेत के द्वारा शासन का दुरुपयोग किया जाता था, जिससे जनसाधारण की धारणायें राजतंत्र के बिलकुल खिलाफ हो गयी। सन् 1789 ई० तक आते-आते जनसाधारण शासन में भाग लेने के लिए उतावले होने लगे। उस समय वहाँ कोई भी ऐसी संस्था नहीं थी, जो उनकी उग्र मनोवृत्ति पर रोक लगा सके।

Social cause :

In the eighteenth century, the French society was divided into three Estates or classes. The first Estate comprised clergy with about 1 lakh 30 thousand population (1,30,000), the second Estate was the group of Nobility, having about 80,000 families or 40 lakh people. These two groups were exempted from paying taxes.At that time the population of France was about 2.5 crores. They owned 40 percent of the total land in France.

90 percent people belonged to the third Estate and had no special power. They were forced to provide services to their masters, to work in the houses and fields of their masters, provide military services or indulge in road construction works. They had to pay all types of taxes. Doctors, lawyers, judges, lecturers, businessmen, teachers, writers, artisans and labourers were included in this group and lived in the urban areas.

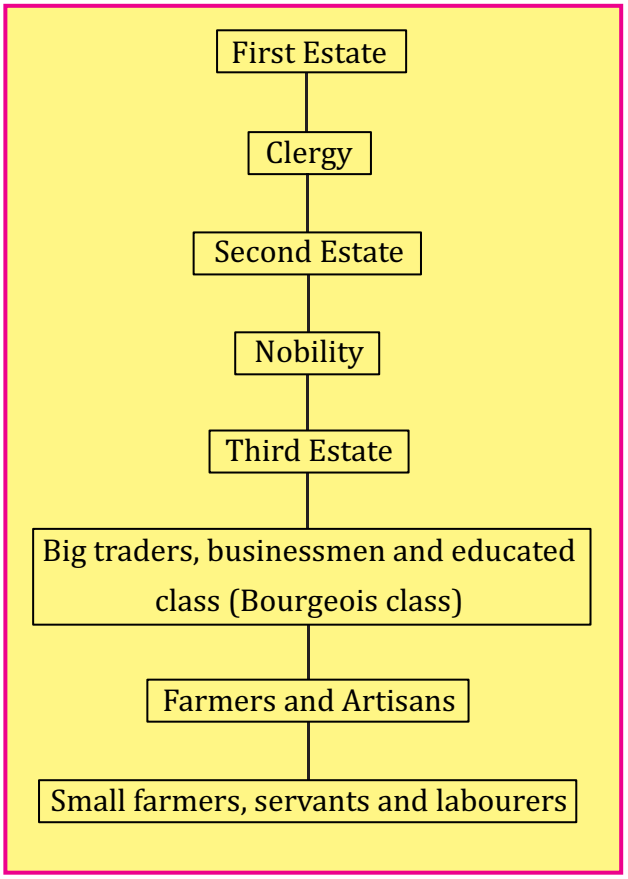

These middle class people were called Bourgeois, who played very important role in the French revolution.

The middle class was extremely discontented, the most important reason for it was that being capable and prosperous, they did not avail of the social status like that of nobility. Inspite of prosperity and progress, they were deprived of all types of political rights. All high posts of the states were reserved for the aristocrats. They were of the views that the basis of social status should be heredity rather than ability. The behaviour of the nobility towards bourgeois was very rough and rude.

सामाजिक कारण :

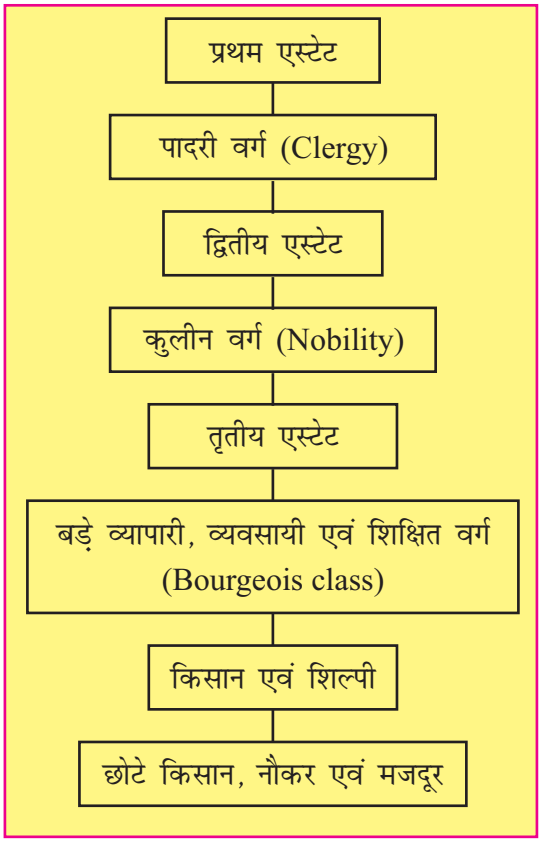

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी समाज तीन एस्टेट्स (Estates) अर्थात् श्रेणी में बँटा हुआ था। प्रथम एस्टेट् में पादरी (Clergy) थे, जिनकी संख्या लगभग एक लाख तीस हजार (1,30,000) थी। दूसरे एस्टेट् में अभिजात वर्ग (Nobility) था, जिसमें लगभग अस्सी हजार (80,000) परिवार या चालीस लाख (40,00,000) व्यक्ति थे। ये दोनों वर्ग करों से मुक्त थे। उस समय फ्रांस की जनसंख्या लगभग ढाई करोड़ (2,50,00,000) थी। फ्रांस की कुल भूमि का 40 प्रतिशत इन्हीं के पास था।

90 प्रतिशत जनता तीसरे एस्टेट् में थी, जिनको कोई भी विशेषाधिकार प्राप्त नहीं था। ये अपने स्वामी की सेवा, स्वामी के घर एवं खेतों में काम करना, सैन्य सेवायें देना अथवा सड़कों के निर्माण में सहयोग देना आदि कार्यों के लिए बाध्य थे। उन्हें सभी प्रकार के कर देने पड़ते थे। इसी वर्ग में डॉक्टर, वकील, जज, अध्यापक, व्यापारी, शिक्षक, लेखक, शिल्पी एवं मजदूर आदि शामिल थे, जो शहरी क्षेत्र में रहते थे। यह वर्ग मध्यम वर्ग (Bourgeois) कहलाता था, जिन्होंने फ्रांस की क्रांति में अहम् भूमिका निभाई।

मध्यम वर्ग में सबसे अधिक असंतोष था, जिसका सबसे बड़ा कारण यह था कि सुयोग्य एवं सम्पन्न होते हुए भी उन्हें कुलीनों जैसा सामाजिक सम्मान प्राप्त नहीं था। वे सम्पन्नता और उन्नति से वंचित थे। राज्य में सभी बड़े पद कुलीनों के लिए सुरक्षित थे। उनका मानना था कि सामाजिक ओहदे का आधार योग्यता होना चाहिए, न कि वंश ।

Naturally, they felt very humiliated. For this reason, the most important slogan of the French revolution was 'Equality', started by bourgeois class.

The condition of the peasants, in the French society, was miserably sad. They had to pay many types of taxes. It is said that before the revolution in France, the nobles fight, the Clergy pray and the people pay.

Social Causes

- Unequal taxation system
- Awakening among bourgeois class for political rights.
- Discontentment towards social inequalities.
- Miserable condition of the farmers

Economic cause

The external wars and squandering of money had weakened the economic condition of France. Every year the expenditure exceeded the income. So, imposition of taxes was in vogue. The tax system was based on the principle of inequality and partiality. The way of fixation and realisation of taxes were also not equal. After every five or six years the French government gave contract to the capitalists for realisation of taxes. These capitalists were known as 'tax-farmer'. They realised maximum taxes from the tenants , paid a fixed amount to the government and the rest amount was kept by them. Thus, the poor farmers had been facing great economic difficulties.

Economic Causes

- Unequal taxation system
- Burden of land tax, religious tax and other feudalist taxes.
- Problem of unemployment
- Restriction of guild, provincial income tax, discontentment among the traders due to feudalist income tax

मध्यम वर्ग के साथ कुलीन वर्ग के लोग बहुत बुरा और असमानता का व्यवहार करते थे। यह बात उन्हें बहुत अपमानजनक लगती थी। इसी वजह से फ्रांस की क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण नारा 'समानता' था, जिसे मध्यम वर्ग ने आगाज किया।

सामाजिक कारण :

1. मध्यम वर्ग में राजनैतिक अधिकारों के प्रति सजगता।
2. सामाजिक असमानता से असंतोष ।
3. कृषकों की दयनीय स्थिति।

फ्रांसीसी समाज में कृषकों की स्थिति तो और भी दयनीय थी। उन्हें अनेक प्रकार का कर देना पड़ता था। कहा जाता है कि क्रांति के पूर्व फ्रांस में कुलीन लड़ते थे, पुजारी पूजा करते थे और जन साधारण उनका खर्च जुटाते थे। (The Nobles fight, the Clergy pray and the People pay.) ।

आर्थिक कारण :

विदेशी युद्ध और अपव्यय ने फ्रांस की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल कर दी थी। प्रतिवर्ष आय से अधिक व्यय होता था। इसलिए कर लगाने की प्रथा प्रचलित थी। यह कर व्यवस्था असमानता और पक्षपात के सिद्धान्त पर आधारित थी। कर निश्चित करने और वसूलने का तरीका भी समान नहीं था। प्रत्येक पाँच या छः वर्ष बाद फ्रांस की सरकार पूँजीपतियों को कर वसूलने का ठेका देती थी। ये पूँजीपति 'टैक्स-फार्मर' कहे जाते थे। ये रैयतों से अधिक से अधिक टैक्स वसूलते थे, और सरकार को निश्चित रकम देने के बाद बाकी रकम को अपने जेब में रख लेते थे। इस तरह बेचारे किसान अत्यधिक आर्थिक कष्ट का सामना कर रहे थे।

आर्थिक कारण :

1. असमान कर प्रणाली।
2. भूमिकर, धार्मिक कर एवं अन्य सामन्ती कर का बोझ ।
3. बेरोजगारी की समस्या।
4. गिल्ड की पाबन्दी, प्रान्तीय आयात कर एवं सामन्ती आयात कर से व्यापारियों में असंतोष।

Economic dis-contentment among people of France brought the country to the brink of revolution. Various types of taxes were imposed upon them to meet the burden on state exchequer. Peasants had to pay the taxes on land. In addition to that they had to pay the religious tax to the Church. Many types of indirect taxes were paid even on the commodities of daily use such as salt and tobacco. In addition to this, they had to pay for many gifts, toll taxes, tributes etc. as feudalist tax. Thus, the economic condition of the French people was becoming pitiable day by day.

In addition to the economic burden of taxes, the problem of unemployment prevalent in the society played a very important role in making the economic condition of France pitiful and miserable. In those days, industrial revolution had taken place and the use of machine had begun in the country. As a consequence manual workers, artisans and cottage industries suffered badly and became unemployed. During the revolution, they supported the revolutionaries against the King.

Besides, the unorganised government system had made the mercantile life of France was handicapped. The French faced many types of troubles in exchange of trade due to lack of uniformity in their live. Various types of restrictions such as ban on guilds, trade related rules in towns, provincial income tax, feudalist tax etc. were imposed on traders. the development of trade had almost stopped under the circumstances. The traders wanted to get trade free from all restraints.

Military Cause

- Disparity in appointment
- Fixation of low salary
- Arrangement of substandard food diet.

Thus, in a situation of dissatisfaction and injustice, the economic growth of the country was blocked and extravagance of Louis XVI and Marie Antoinette for their pleasure, extremely affected the state exchequer. In these circumstances, the government instead of being economical, focused on taking loan and imposing taxes.

Military cause

There was immense dissatisfaction among the armies of France. The farmers were appointed in military. They were indignant because of low salary, strict administration and substandard diet. They were appointed on lower military posts only. The higher offices were reserved for nobility.

फ्रांस के लोगों में आर्थिक असंतोष ने देश को क्रांति के कगार पर पहुँचा दिया। राजकोष के घाटे के भरपाई के लिए उनपर तरह-तरह के कर लगाए गए थे। किसानों को भूमि कर 'टैले' (Taille) चुकाना पड़ता था। इसके अलावे 'टाइथ' (Tithe) नामक धार्मिक कर भी इन्हें चर्च को देना पड़ता था। अनेक तरह के अप्रत्यक्ष कर नमक और तम्बाकू जैसी दैनिक उपभोग की वस्तुओं पर भी देना पड़ता था। साथ ही कई भेंट, टोल टैक्स, नजराने आदि भी सामन्ती_कर के रूप में उन्हें देना पड़ता था। इस तरह फ्रांस की आम जनता की आर्थिक स्थिति दिन-प्रतिदिन दयनीय होती जा रही थी।

करों के आर्थिक बोझ के अलावे फ्रांस की आर्थिक स्थिति को दयनीय बनाने में वहाँ के समाज में व्याप्त बेकारी की समस्या ने भी अहम् भूमिका अदा की। उस समय औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी और देश में मशीनों का प्रयोग आरम्भ हो चुका था। इसकी वजह से हाथ से काम करने वाले कारीगर और मजदूर घरेलू उद्योग-धन्धे विनष्ट हो जाने से बेरोजगार हो गए थे। इन्होंने क्रांति के समय राजा के खिलाफ क्रांतिकारियों का साथ दिया।

इसके अलावे अव्यवस्थित शासन व्यवस्था ने फ्रांस के व्यापारिक जीवन को भी पंगु बना दिया था। फ्रांसीसियों के जीवन में एकरूपता नहीं रहने के कारण उन्हें व्यापारिक विनिमय में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। तरह-तरह के प्रतिबन्ध जैसे-गिल्ड की पाबन्दी, शहरों के व्यापार सम्बन्धी नियम, प्रान्तीय आयात कर, सामन्तवादी कर इत्यादि व्यापारियों पर लगाए गए थे। इन बंधनों में जकड़े रहने के कारण व्यापार का विकास लगभग रुक गया था। व्यापारी चाहते थे कि देश के व्यापार को हर तरह के बंधनों से मुक्त कर दिया जाये।

इस तरह असंतोषजनक एवं अन्यायपूर्ण वातावरण में देश का विकास अवरुद्ध होने के साथ-साथ सरकारी फिजूलखर्ची, जो लुई-XVI एवं मेरी अन्तोयनेत अपने ऐशो-आराम एवं भोग-विलास की वस्तुओं पर करते थे, ने राजकोष को प्रभावित किया। ऐसी स्थिति में सरकार मितव्ययिता से काम लेने की जगह कर्ज लेने और कर लगाने पर ज्यादा केंद्रित थी।

सैनिक कारण :

1. नियुक्ति में असमानता
2. कम वेतन का निर्धारण
3. खराब भोजन की व्यवस्था

सैनिक कारण :

फ्रांस के सैनिकों में भी बहुत अधिक अंसतोष था। सैनिक के पद पर किसानों को बहाल किया जाता था। कम वेतन, कठोर अनुशासन और खराब भोजन आदि से वे रूष्ट रहते थे। सेना के निम्न पदों पर उनकी नियुक्ति होती थी, उच्च पद कुलीनों के लिए सुरक्षित थे।

The French Force also supported revolutionaries because of economic and social condition in due course.

Personal and Religious Cause

- Lack of freedom of speech, writing and expression of thoughts
- Absence of religious freedom
- Arresting of people without accusation
- Lack of uniformity in law

Personal and religious cause

There was absence of all types of freedom in France. There was no freedom of speech, writing, expression of thoughts and religious liberty. Catholic religion was state's religion and Protestants were severely punished. Not only that, there was also lack of personal freedom. The king or any of his men could arrest any person. the warrant of arrest was issued in absence of accusation and charge; it was called letters-de-cachet.

In France, there was lack of uniformity in law', there were 400 laws in force. Nobody knew that under which law the judgement of his case would be declared.

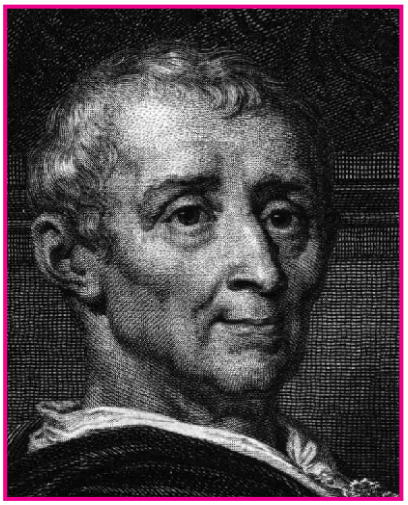

Montesquieu

Intellectual cause

In respect of French revolution, it is said that it was a bourgeoisie revolution, in which the educated class revealed the then political, social, economic and religious faults. The French intellectuals initiated the intellectual movement. (Montesquieu), (Voltaire) and (Rousseau) were the prominent figures among them.

Voltaire

Montesquieu in his book, 'The Spirit of Laws', gave the theory of separation of power for keeping the three wings of the government Executive, Legislature and Judiciary separate from one another.

Voltaire revealed the weaknesses of Church, society and monarchy. Although he was not pro-democracy yet he was a strong supporter monarchy in favour of people.

आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति की वजह से फ्रांस की सेना ने भी आगे चलकर क्रांतिकारियों का साथ दिया।

व्यक्तिगत एवं धार्मिक कारण :

फ्रांस में सभी तरह की स्वतंत्रताओं का अभाव था। भाषण, लेखन, विचार की अभिव्यक्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता का पूर्ण अभाव था। वहाँ राजधर्म कैथोलिक धर्म था और प्रोटेस्टेंट धर्म के वैयक्तिक स्वतंत्रता का भी अभाव था। राजा या उसका कोई भी आदमी किसी व्यक्ति को गिरफ्तार कर सकता था। इसके लिए फ्रांस में बिना अभियोग के गिरफ्तारी वारंट होता था, जिसको लेटर्स-द-कैचेट (Letters-de-cachet) कहते थे।

व्यक्तिगत एवं धार्मिक कारण:

1. भाषण, लेखन और विचार की स्वतंत्रता का अभाव।
2. धार्मिक स्वतंत्रता का अभाव।
3. बिना अभियोग के व्यक्तियों को गिरफ्तार करना।
4. कानूनों में एकरूपता का अभाव ।

फ्रांस में कानूनों में भी एकरूपता नहीं थी, देश के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 400 कानून लागू थे। किसी को भी यह जानकारी नहीं होती थी कि उसके मुकदमें का फैसला किस कानून के तहत होगा।

बौद्धिक कारण :

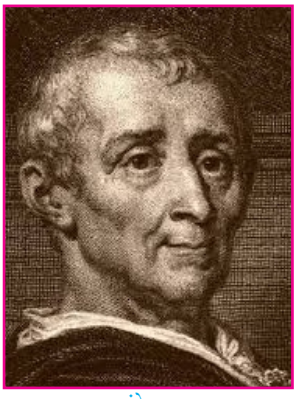
मांटेस्क्यू

फ्रांसीसी क्रांति के विषय में यह कहा जाता है कि यह एक मध्यवर्गीय क्रांति थी, जिसमें शिक्षित वर्ग के लोगों ने तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दोषों का पर्दाफाश किया और जनमानस में आक्रोश पैदा किया। फ्रांसीसी बुद्धिजीवियों ने फ्रांस में बौद्धिक आन्दोलन का सूत्रपात किया। इनमें प्रमुख मांटेस्क्यू (Montesquieu), वॉल्टेयर (Voltaire) और रूसो (Rousseau) थे। मांटेस्क्यू ने अपनी पुस्तक 'विधि की आत्मा' (The Spirit of Laws) में सरकार के तीन अंगों कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को अलग-अलग रखने के विषय में बताकर शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त का पोषण किया। वॉल्टेयर ने चर्च, समाज और राजतंत्र के दोषों का पर्दाफाश किया। यद्यपि वह जनतंत्र का पक्षधर नहीं था, तथापि राजतंत्र प्रजाहित में होना चाहिए,

वॉल्टेयर

Montesquieu and Voltaire wanted reforms but Rousseau wanted a drastic change. He, in his famous book, 'Social Contract', accepted the state as an institution formed by the people and General will as sovereign. So, he was a supporter of democracy.

The essays of Didro's encyclopedia spread the revolutionary ideas in France. The famous economist like Quesnay and Turgot, in France, criticized economic exploitation and economic control in the society and supported policy of Laissez-faire.

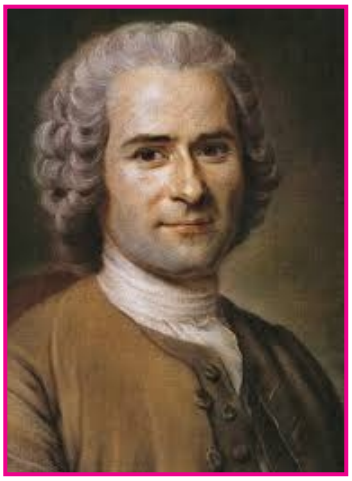

Rousseau

The Effect of Foreign incidents

The Glorious Revolution in England. The Glorious Revolution in England in 1688, and formation of constitutional government paved the way for political change in France.

The Impact of foreign independence:

- The Glorious Revolution in England.
- The American struggle for freedom

The Freedom Struggle America's

During the American freedom struggle, the French Army took part against England under the leadership of Lafayette. the democratic government was formed in America. It was a source of inspiration for the French people and the revolution got further strength. The economic condition of France became so pitiable that the country was unable to control it and finally it became immediate cause of the revolution.

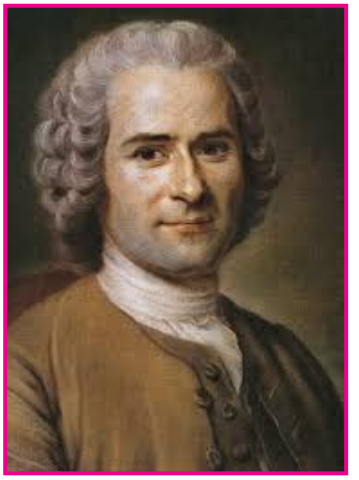

इसका प्रबल समर्थक था। मांटेस्क्यू और वॉल्टेयर सुधार चाहते थे। परन्तु रूसो पूर्ण परिवर्तन चाहता था। उसने अपने प्रसिद्ध पुस्तक 'सामाजिक संविदा' (Social Contract) में राज्य को व्यक्ति द्वारा निर्मित संस्था, और सामान्य इच्छा (General will) को संप्रभु माना है। अत: वह जनतंत्र का समर्थक था। दिदरो के 'वृहत ज्ञानकोष' (Encyclopaedia) के लेखों ने फ्रांस में क्रांतिकारी विचारों का प्रचार किया। फ्रांस में क्वेजनो (Quesney) एवं तुर्गो (Turgot) जैसे अर्थशास्त्रियों ने समाज में आर्थिक शोषण एवं आर्थिक नियंत्रण की आलोचना करते हुए मुक्त व्यापार (Laissez-faire) का समर्थन किया।

विदेशी घटनाओं का प्रभाव :

विदेशी घटनाओं का प्रभाव
1. इंग्लैंड की गौरवपूर्ण क्रांति
2. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम

इंग्लैंड की गौरवपूर्ण क्रांति- सन् 1688 ई० की इंग्लैंड की महान् क्रांति (Glorious Revolution) एवं उसके द्वारा वैधानिक शासन की स्थापना ने फ्रांस में भी राजनैतिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम- अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में लाफायेत के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने इंग्लैंड के विरुद्ध भाग लिया था, जिससे वहाँ गणतांत्रिक शासन की स्थापना हुई थी। फ्रांस की जनता के लिए इसने प्रेरणा स्रोत का कार्य किया। इससे एक और भी तरह से क्रांति को बल मिला। इसमें अत्यधिक धन व्यय ने फ्रांस की आर्थिक स्थिति को इतना दयनीय बना दिया कि उसे सम्भालना देश के लिए असम्भव बन गया, और अन्त में यह फ्रांस की क्रांति का तात्कालिक कारण बन गया।

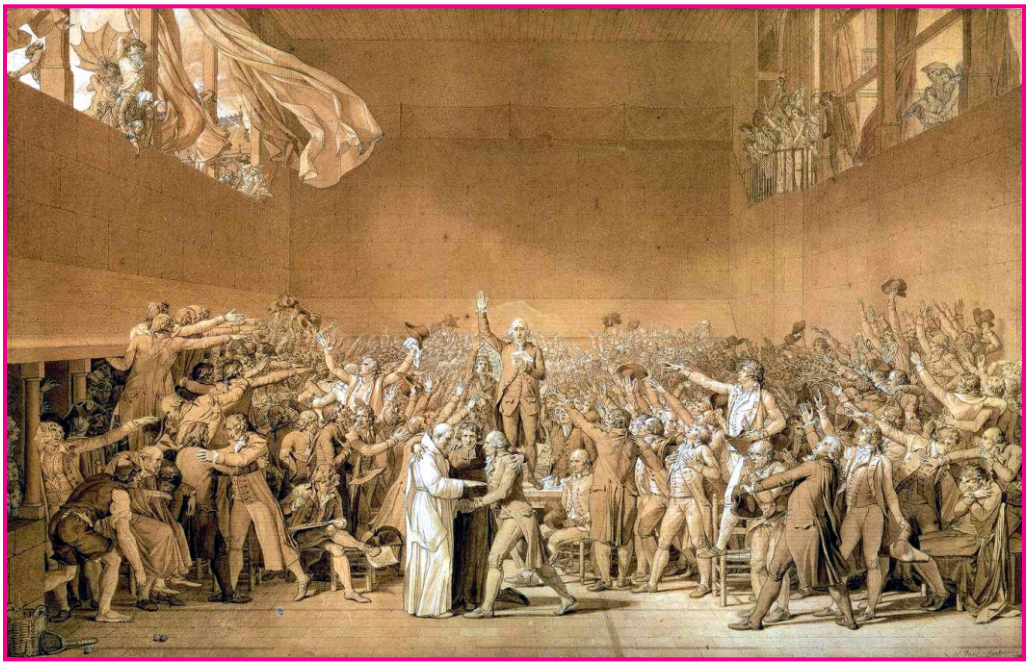

The Oath of Tennis Court

3.2 The events of Revolution

In 1789, Louis XVI was in need of money. So, he called a meeting of States General on 5th may, 1789. 300 representatives, each of the first estate and the second estate and 600 representatives of the third estate ensured their participations. The third estate demanded right to vote for all representatives,

on the basis of democratic principles. The demand was turned down by the King. So, all representatives of the third estate came out raising voices against the decision. On June 20th, when they assembled to organise a conference, they saw that the estate, venue of their conference was full of the royal guards. So, all the representatives of the third estate gathered in the Tennis Court. They declared their as the National Assembly and took oath that the Assembly would not be dissolved until a new constitution was ready which would minimise the power of the King.

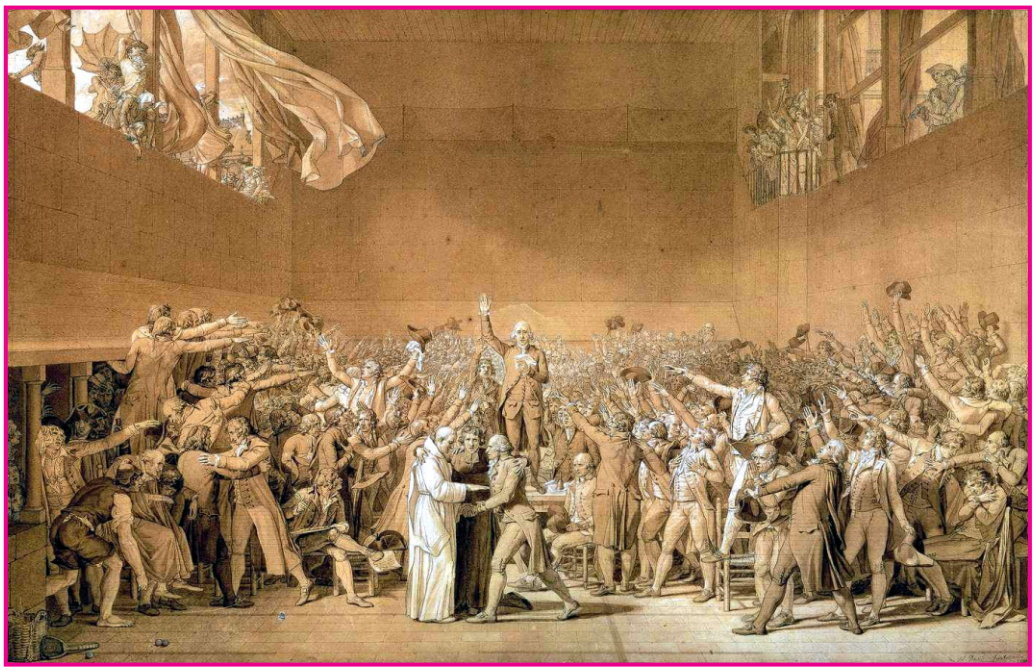

टेनिस कोर्ट शपथ

3.2 क्रांति का घटना क्रम :

सन् 1789 ई० में लुई XVI को धन की आवश्यकता हुई। इसके लिए 5 मई, 1789 ई० को उसने एस्टेट्स जेनरल की बैठक बुलाई। इसमें प्रथम एवं द्वितीय एस्टेट के क्रमशः 300-300 प्रतिनिधि एवं तृतीय एस्टेट के 600 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तृतीय एस्टेट ने लोकतांत्रिक सिद्धान्त को आधार बनाकर सभी प्रतिनिधियों के लिए मत देने का अधिकार मांगा। यह राजा द्वारा अस्वीकृत हो गया। तभी तीसरे एस्टेट के सभी प्रतिनिधि विरोध जताते हुए बाहर निकल गए। 20 जून को जब वे अधिवेशन करने के लिए एकत्रित हुए तब उन्होंने देखा कि जिस हॉल में उनका अधिवेशन होने वाला था, वहाँ शाही अंगरक्षकों का पहरा था। अतः सभी तृतीय एस्टेट के प्रतिनिधि टेनिस कोर्ट में एकत्रित हुए। इन्होंने अपनी सभा को नेशनल एसेम्बली (National Assembly) घोषित किया तथा यह शपथ ली कि राजा की शक्तियों को कम करने वाला संविधान जब तक बनकर तैयार नहीं हो जाता, यह सभा भंग नहीं होगी।

Rumours regarding dissolving the Assembly by King and arresting of its members spread. Hearing this people gathered there in a huge number, leaders like Mirabeau and Abbe Sieyes were leading them. Though Mirabeau belonged to feudal family still he was in favour of ending the special powers of feudal lords.

The Fall of Bastille

On 14 July 1789, the revolutionaries besieged the state prison of Bastille in Paris. The fort of Bastille was a symbol of despotism of monarchy. After a four hours besiege, they succeeded in breaking the gate of the prison and making the prisoners free. The end of Bastille prison signified the downfall of despotic power. That is why 14th July is celebrated as the Independence Day in France.

After 14 July 1789, Louis XVI was a King only in name and the National Assembly began to prepare laws for the country. The Assembly passed the Declaration of the Rights of Man and Citizen on 27 August 1789. Through this declaration all the people got the right to expression of thought and follow religion of their choice.

राजा द्वारा इसे भंगकर सदस्यों को बंदी बनाने की अफवाह उठी, तभी बहुत बड़ी संख्या में लोग वहाँ इकट्ठे हुए। उनलोगों का नेतृत्व मिराब्यू एवं अब्बे सियेस जैसे नेता कर रहे थे। यद्यपि मिराब्यू सामन्त परिवार का था, फिर भी वह सामन्तों के विशेषाधिकारों को समाप्त करने का पक्षधर था।

बैस्टिल का पतन

14 जुलाई, 1789 को क्रांतिकारियों ने पेरिस स्थित राज्य के कारागृह बैस्टिल (Bastille) को घेर लिया। बैस्टिल का दुर्ग राजतंत्र के निरंकुशता का प्रतीक था। चार घंटे डेरा डालने के बाद वे जेल का फाटक तोड़ने एवं बन्दियों को मुक्त कराने में सफल हुए। बैस्टिल कारागृह की समाप्ति निरंकुश शासन के पतन का प्रतीक था। फ्रांस में 14 जुलाई ही स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 जुलाई, सन् 1789 के बाद लुई XVI नाम मात्र के लिए राजा बना रहा और नेशनल एसेम्बली देश के लिए अधिनियम बनाने लगी। इसी सभा ने 27 अगस्त, 1789 को 'मानव और नागरिकों के अधिकार' (The Declaration of the rights of Man and Citizen) को स्वीकार किया । इस घोषणा से प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार प्रकट करने और अपनी इच्छानुसार धर्मपालन करने के अधिकार को मान्यता मिली।

Together with individual freedom, they got freedom of speech. The press was also granted freedom. Now the State was not allowed to arrest anyone without filing a case and could not acquire their land without paying compensation. The most important decision for the middle class people was that the taxes were equally imposed on all classes and they were permitted to have personal property. The revolutionary decision was extremely important not only for France but for the entire Europe.

Rights of Man and Citizen

The National Assembly in 1791 prepared the draft of constitution in which the theory of separation was adopted. Thus, the Constitutional Assembly came into force in France.

Although Louis XVI accepted the new constitution, yet violent revolt started after the death of Mirabeau. The nobility opposed the constitution even in the foreign countries. In April 1792, the National Assembly declared war against Prussia and Austria. Till that time, all the citizens had not got right to Austria vote. the Election to the National Assembly had to be conducted indirectly. The issues discussed above had become a matter of criticism. Among the critics, prominent were the members of the Jacobin Club comprising the shopkeepers, artisans, watch-makers, labourers, day labourers etc. The Jacobin Club was named after the former Convent of Saint Jacob with Maximilien Robes pierre as its head.

व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ प्रेस एवं भाषण की स्वतंत्रता भी मानी गयी। अब राज्य किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये गिरफ्तार नहीं कर सकता था, तथा मुआवजा दिए बिना उसके जमीन पर कब्जा नहीं कर सकता था । मध्यम वर्ग के लिए सबसे महत्वपूर्ण निश्चय वे थे, जिनके अनुसार कर का भार सभी वर्गों पर समान रूप से डालने का निश्चय किया गया, और सभी को निजी सम्पत्ति रखने का अधिकार दिया गया । फ्रांस के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप के लिए यह क्रांतिकारी घोषणा अत्यधिक महत्वपूर्ण थी।

मानव और नागरिकों के अधिकार

सन् 1791 ई० में नेशनल एसेम्बली ने संविधान का प्रारूप तैयार कर लिया, जिसमें शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त को अपनाया गया। इस तरह फ्रांस में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई।

यद्यपि लुई XVI ने नये संविधान को मान लिया, परन्तु मिराब्यू की मृत्यु के पश्चात् देश में हिंसात्मक विद्रोह की शुरूआत हो गयी। विदेशों में भी कुलीन वर्गों के द्वारा संविधान का विरोध किया गया। अप्रैल 1792 में नेशनल एसेम्बली ने ऑस्ट्रिया, तथा प्रशा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। क्रांतिकारी युद्धों से जनता को काफी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी। उस समय सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार नहीं मिला था। नेशनल एसेम्बली का चुनाव भी अप्रत्यक्ष रूप से किया जाना था । उपरोक्त बातें आलोचना का विषय बन गया था। आलोचकों में प्रमुख जैकोबिन क्लब के सदस्य थे, जिसमें छोटे दुकानदार, कारीगर, घड़ीसाज, नौकर एवं दिहाड़ी मजदूर आदि शामिल थे । जैकोबिन क्लब पेरिस के भूतपूर्व कान्वेंट ऑफ सेंट जेकब के नाम पर रखा गया था, जिसका नेता मैक्समिलियन रॉब्सपियर था ।

3.3.The Reign of Terror

Robespierre was supporter of the leftist ideology. So, being disgusted with dearness and shortage of food items, he started violent revolution and established Reign of Terror. Around seventeen thousand people were prosecuted and hanged in fourteen months. Robespierre was the foster of direct democracy. the Election was conducted by guaranting right to vote to all persons above the age of 21 whether they possessed property or not. On 17 September 1792, the newly elected Assembly was christened as 'Convention' and the power of the king was withdrawn. Louis XVI was prosecuted on charges of treason and hanged on 21 January 1793. Mary Antoinette was also hanged later on.

Till October 1793, the reign of terror established by Robespierre was at its zenith. The Convention declared French as the only national language. Rules were compiled; the tradition of sending slaves to colonies and the tradition of primogeniture (system in which the eldest son receives all the property when his father dies) were abolished. The New National Calendar (22 September, 1792) came into force. All these were established by Robespierre as a token of dignity and excellence of absolute power. But all these proved just temporary. Due to his terrorist activities a special court awarded him death punishment on July 1794. After that a new constitution was framed in 1795 through which Republican Government came into force. Later on Napoleon Bonaparte declared himself as chief of the republic and imposed his own code of law. His reform measures immensely helped France to progress.

3.4 The Consequences of the Revolution

The End of Ancient Regime: By ending the ancient regime, the French Revolution gave birth to modern era in which 'Liberty ', 'Equality 'and 'Fraternity' got impetus.

Secular State: The revolution established a secular state by separating religion from the State. Intellectualism emerged in the religious sphere and religious freedom was granted to the people.

3.3. आतंक का राज्य :

रॉब्सपियर वामपंथी विचारधारा का समर्थक था। अत: खाद्य पदार्थों की महँगाई एवं अभाव से नाराज होकर उसने हिंसक विद्रोह की शुरूआत की और आतंक का राज्य स्थापित किया । चौदह महीनों में लगभग सत्रह हजार व्यक्तियों पर मुकदमे चलाये गए और उन्हें फाँसी दे दी गयी। रॉब्सपियर प्रत्यक्ष प्रजातंत्र का पोषक था। 21 वर्ष से अधिक उम्र वालों को मतदान का अधिकार देकर, चाहे उनके पास सम्पत्ति हो या न हो, चुनाव कराया गया। 21 सितम्बर, 1792 को नव निर्वाचित एसेम्बली को कन्वेंशन नाम दिया गया तथा राजा की सत्ता को समाप्त कर दिया गया । देश द्रोह के अपराध में लुई XVI पर मुकदमा चलाया गया और 21 जनवरी, 1793 को उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया। बाद में मेरी अन्तोयनेत को भी फाँसी दे दी गयी ।

रॉब्सपियर द्वारा स्थापित आंतक का राज्य अक्टूबर 1793 में उत्कर्ष पर था । कन्वेंशन द्वारा राष्ट्र की एकमात्र भाषा फ्रेंच घोषित की गयी। कानूनों का संकलन कराया गया, उपनिवेशों में गुलाम बनाकर भेजने की प्रथा समाप्त की गयी। प्रथम पुत्र को ही उत्तराधिकार बनाने की प्रथा को समाप्त किया गया । राष्ट्र का नया कैलेण्डर (22 सितम्बर, 1792) लागू किया गया। इन सभी को रॉब्सपियर ने सर्वोच्च सत्ता की प्रतिष्ठा के रूप में स्थापित किया। परन्तु ये अस्थाई सिद्ध हुए । उसकी हिंसात्मक कार्रवाइयों की वजह से विशेष न्यायालय ने जुलाई 1794 में उसे मृत्युदंड दिया । उसके बाद सन् 1795 ई० में नया संविधान बनाया गया, जिसने फ्रांस में गणतांत्रिक शासन की शुरूआत की। आगे चलकर नेपोलियन बोनापार्ट ने स्वयं को इस गणराज्य का प्रधान घोषित कर अपनी विधि संहिता लागू किया। उसके सुधार कार्यों ने तत्कालीन फ्रांस के उत्थान में काफी सहयोग प्रदान किया।

3.4 क्रांति के परिणाम :

पुरातन व्यवस्था का अन्त: फ्रांस की क्रांति ने वहाँ की पुरातन व्यवस्था (Ancient Regime) को समाप्त कर आधुनिक युग को जन्म दिया, जिसमें 'स्वतंत्रता', 'समानता' तथा 'बन्धुत्व' (Liberty] Equality and Fraternity) को प्रोत्साहन मिला। सामन्तवाद का अंत हो गया।

धर्मनिरपेक्ष राज्य : इस क्रांति ने राज्य को धर्म से अलग कर धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की। धार्मिक क्षेत्र में बुद्धिवाद का उदय हुआ और जनता को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गयी।

Results

- The End of Ancient Regime
- The Establishment of Secular State
- The Establishment of Democracy
- The Recognition of Individual's dignity
- The Beginning of Socialism
- The Growth in trade and commerce
- The Abolition of Slavery
- The Responsibility of education upon government
- The Beginning of National Calendar
- The Women Movement

The Establishment of Democracy: The French revolution ended the doctrine of Divine Right and established democracy.

The Dignity of Individual: For the first time the National Assembly emphasised on the greatness of individuals and the fundamental rights and duties for the citizens were declared.

The Beginning of Socialism: The French Revolution provided strength to the socialist attitudes too. The Jacobins safeguarded the rights of the common people and favoured the poor against the rich. Their political rights were declared.

The Growth in Trade and Commerce: As a consequence of the revolution the guild system, provincial income-tax and other economic sanctions were lifted from the merchants that led to the development of trade and commerce. It was the reason that during the 19th century France was next to England in the field of trade and commerce.

The Abolition of Slavery: The revolution abolished slavery. In 1794, the Convention passed the ' Slave Emancipation Law'; though later on it was abolished by Napoleon. In 1884, slavery was eradicated finally from the French colonies.

The Responsibility of education upon the government: In France, education was confined to the churches. Now this accountability was shifted to the government. As a consequence of this, Paris University and many educational institutions and research centres were opened in France.

The National Calendar: A new National Calendar was implemented in France. The calendar was divided into twelve months on the basis of seasons and they were named after Brumaire, Thermidor etc.

The Women Movements: The women of France had also participated in the French revolution with a view to bringing about a change in the French society. They had established an organisation 'The society of Revolutionary and Republican Women'. Olympe de Gouges, a leader, had played very important role in the organisation. Under her leadership, the demand of political rights for women as equivalent to male was accepted,

परिणाम

1. पुरातन व्यवस्था का अंत
2. धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना
3. जनतंत्र की स्थापना
4. व्यक्ति की महत्ता की स्वीकृति
5. समाजवाद का प्रारम्भ
6. वाणिज्य व्यापार में वृद्धि
7. दास प्रथा का उन्मूलन
8. सरकार पर शिक्षा का उत्तरदायित्व
9. राष्ट्रीय कैलेंडर की शुरूआत
10. महिला आन्दोलन

जनतंत्र की स्थापना : फ्रांस की क्रांति ने राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त को समाप्त किया और जनतंत्र की स्थापना की।

व्यक्ति की महत्ता : फ्रांस के नेशनल एसेम्बली ने पहली बार व्यक्ति की महत्ता पर बल दिया। नागरिकों के मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की घोषणा की गयी।

समाजवाद का प्रारम्भ : फ्रांस की क्रांति ने समाजवादी प्रवृत्तियों को भी बल दिया। जैकोबिन्स ने सामान्य जनता के अधिकारों की रक्षा की एवं अमीरों की जगह गरीबों का पक्ष लिया। उनके राजनैतिक अधिकारों की घोषणा भी की गयी।

वाणिज्य-व्यापार में वृद्धि : क्रांति के फलस्वरूप गिल्ड प्रथा, प्रान्तीय आयात कर तथा अन्य व्यापारिक प्रतिबन्ध व्यापारियों पर से हटा दिए गए, जिससे वाणिज्य एवं व्यापार का विकास हुआ। यही कारण था कि उन्नीसवीं शताब्दी में व्यापार के क्षेत्र में फ्रांस इंगलैंड के बाद द्वितीय स्थान पर था।

दास प्रथा का उन्मूलन : इस क्रांति ने फ्रांस में दास प्रथा का उन्मूलन किया। सन् 1794 में कन्वेंशन ने ''दास मुक्ति कानून'' पारित किया। यद्यपि आगे चलकर इसे नेपोलियन के द्वारा समाप्त कर दिया गया था। सन् 1848 ई० में अंतिम रूप से फ्रांसीसी उपनिवेशों से दास प्रथा का उन्मूलन किया गया।

सरकार पर शिक्षा का उत्तरदायित्व : फ्रांस में अभी तक चर्च में शिक्षा का प्रबन्ध था।

अब इसकी जिम्मेवारी सरकार पर आ गयी। परिणामस्वरूप पेरिस विश्वविद्यालय तथा कई शिक्षण संस्थान एवं शोध संस्थान फ्रांस में खोले गए।

राष्ट्रीय कैलेंडर : फ्रांस में एक नया राष्ट्रीय कैलेंडर लागू किया गया, जिसको ऋतुओं के आधार पर बारह महीनों में बाँटा गया और उनका नया नाम ब्रुमेयर, थर्मिडार आदि रखा गया।

महिला आन्दोलन: फ्रांस के समाज में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से फ्रांस की क्रांति में महिलाएँ भी शामिल हुयीं थीं। इन्होंने 'द सोसायटी ऑफ रिवलूशनरी एण्ड रिपब्लिकन वीमेन' नामक संस्था का गठन किया, जिसमें ओलम्प दे गूज नामक नेत्री की अहम् भूमिका थी। इनके नेतृत्व में महिलाओं को पुरुषों के समान राजनैतिक अधिकार की मांग को स्वीकार कर लिया गया,

but they were not guaranted political rights in the beginning. The French revolution taught a lesson of awakening due to which the women movement continued for a long time. And as result of that the French women got the right to franchise in 1946.

3.5. The Effect of the Revolution on other countries

The effect of French revolution influenced not only France but also other countries of Europe too. The people of Italy and Germany and other countries welcomed Napoleon as 'the harbinger of revolution'.He was given this welcome because of the reforms made by him France. In course of his victory campaign, he gave a lesson of nationalism to the people of those countries.

The Effect on Italy: That time Italy was divided into different groups. After the French Revolution, Napoleon gathered his troops in the different parts of Italy and made preparation for war and organised Italy State. By fighting unitedly, the sense of nationalism developed among them and this paved the way for future unification of Italy.

Effects on other countries

- Effect on Italy
- Effect on Germany
- Effect on Poland
- Effect on England

The Effect on Germany: At that time German was also divided in to 300 small states that were condensed into 38 states by the efforts of Napoleon. Germans followed the spirit of the French revolution - 'Liberty', 'Equality', and 'Fraternity' -and later on the unification of Germany received strength through it.

The Effect on Poland: Napoleon, the forerunner of French revolution infused restlessness for independence in Poland. Earlier it was divided among Russia, Prussia and Austria. Though Poland did not get independence quickly but nationalism was transfused among them through the French revolution. As a result a long term effort an independent state of Poland could be established after the Second World War.

The Effect of England: England was also influenced by the victory campaign of Napoleon but later on became the reason for its downfall. Nevertheless the influence of the Revolution appeared in England to a great extent. The people of England started raising voice against feudalism. As a result, in 1832 'Parliament Reforms Act' was passed in England by which the power of landlords was abolished and many avenues were opened for reforms in favour of the people of England. The revolution provided immense contribution in the development of the Industrial Revolution of England.

परन्तु राजनैतिक अधिकार शुरू में उन्हें नहीं मिल पाये। फ्रांस की क्रांति ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजगता का पाठ पढ़ाया, जिसके कारण आगे चलकर वर्षों तक महिला आन्दोलन चलता रहा। परिणामस्वरूप सन् 1946 ई० में फ्रांस की महिलाओं ने मताधिकार प्राप्त करने में सफलता हासिल किया।

3.5 अन्य देशों पर क्रांति का प्रभाव :

अन्य देशों पर प्रभाव
1. इटली पर प्रभाव
2. जर्मनी पर प्रभाव
3. पोलैंड पर प्रभाव
4. इंग्लैंड पर प्रभाव

फ्रांस की क्रांति का प्रभाव सिर्फ फ्रांस पर ही नहीं बल्कि यूरोप के अन्य देशों पर भी पड़ा। नेपोलियन फ्रांस में सुधार के कार्यों को करते हुए अपने विजय अभियान के दौरान जब इटली और जर्मनी आदि देशों में पहुँचा, तब उसे वहाँ की जनता ने भी 'क्रांति का अग्रदूत' कहकर स्वागत किया। उसने इन देशों के नागरिकों को राष्ट्रीयता का संदेश देने का कार्य किया।

इटली पर प्रभाव : इटली इस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य' स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आई और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

जर्मनी पर प्रभाव : जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया। इस क्रांति के 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' की भावना को जर्मनी के लोगों ने अपनाया और आगे चलकर इससे जर्मनी के एकीकरण को बल मिला।

पोलैंड पर प्रभाव : फ्रांसीसी क्रांति के अग्रदूत नेपोलियन ने पोलैंड में स्वतंत्रता की लहर फूंकी। पहले यह रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि, पोलैंड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन उनमें राष्ट्रीयता का संचार इसी क्रांति ने किया। एक लम्बी अवधि के प्रयास के फलस्वरूप प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पोलैंड का स्वतंत्र राज्य कायम हो सका।

इंग्लैंड पर प्रभाव : नेपोलियन का विजय अभियान इंग्लैंड पर भी हुआ, जो आगे चलकर इंग्लैंड के पतन का कारण बना। फिर भी इस क्रांति का इतना अधिक असर इंग्लैंड में दिखा ही वहाँ की जनता ने भी सामन्तवाद के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैंड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमींदारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हुआ। भविष्य में, इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के विकास में इस क्रांति का बहुत अधिक योगदान था।

3.6. The Nature of the Revolution:

In terms of the French revolution, it is said that its nature was totally decisive, therefore, the pace and direction of the revolution was same as the other revolutions. However, before deciding the nature of a revolution, it is important to see the causes of the revolution; which class of the society took main part in the revolution and which class of the society received maximum advantages. Many historians have told us that the French Revolution of 1789 was a bourgeois (middle class) revolution. According to them, the revolution established the government of another privileged class instead of an already privileged class. There was no dearth of capital among the middle class of France. They often used to give loan to the government but they had no participation in power. However, there were many causes of the French Revolution, but the discontentment among the middle class and arousing public consciousness by them made the revolution inevitable. All the philosophers who aroused the intellectual consciousness belonged to the middle class. Most of the leaders who headed the revolution also came of the middle class. It is true that the peasant and the workers unitedly made the revolution success; but power did not come in their hands. The abolition of feudalism by the National Assembly on 4 August 1789 and the economic policies adopted by them clarified that the bourgeois group had the upper hand in the revolution. The middle class got advantages fo the revolution; the common people were not given the right to vote. By formulating a law, the National Assembly banned the organisation of the factory workers. Use of the slogan of the revolution 'Liberty', 'Equality' and 'Fraternity' was just for abolition of special privileges of the clergy and feudal; and to get special privileges for the middle class. From 1789 to 1815 the authority of power remained in the hands of middle class. This was the reason that the Jacobin group had done temporary effort for administering political and economic rights to the proletarian group. On the basis of the facts the views of the historians that the nature of the French revolution was middle class seems factual because the bourgeois was the remarkable cause of the revolution, because the bourgeois was the came of the revolution, They headed the revolution as well and they got maximum advantages.

Conclusively, the French Revolution of 1789 initiated such an era in France in which foundation of liberty, equality and fraternity was laid down and human rights was protected. At the same time, the other European countries were also influenced by these thoughts and a chain of reforms of new age started there also.

3.6 क्रांति का स्वरूप :

फ्रांसीसी क्रांति के स्वरूप के सम्बन्ध के विषय में कहा जाता है कि यह पूर्णरूप से निश्चयात्मक थी अर्थात् क्रांति की गति और दिशा वही थी जो लगभग सभी क्रांतियों की होती है। फिर भी किसी क्रांति के स्वरूप को निश्चित करने के पहले यह देखना आवश्यक होता है कि उस क्रांति के क्या कारण थे, उस क्रांति में समाज के किस वर्ग के लोगों ने मुख्य रूप से भाग लिया और उस क्रांति से किस वर्ग के लोगों को अधिक लाभ हुआ। कई इतिहासकारों ने सन् 1789 ई० की फ्रांसीसी क्रांति को एक बुर्जुआई (मध्यम वर्गीय) क्रांति कहा है। उनके अनुसार इस क्रांति ने एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की जगह दूसरे विशेषाधिकारी वर्ग का शासन स्थापित कर दिया। फ्रांस में मध्यमवर्ग के पास पूँजी की कमी नहीं थी। ये यदा-कदा सरकार को कर्ज देने का काम भी करते थे, लेकिन सत्ता में इनकी कोई भी सहभागिता नहीं होती थी। यद्यपि फ्रांस की क्रांति के अनेक कारण थे, परन्तु मध्यम वर्ग के असंतोष और इसी वर्ग के द्वारा जनचेतना को जागृत करना ने क्रांति को अवश्यम्भावी बना दिया। जितने भी दार्शनिक थे, जिन्होंने बौद्धिक चेतना जगाई, सभी मध्यम वर्ग के थे, क्रांति के अधिकांश नेता भी मध्यम वर्ग के थे, जिन्होंने क्रांति का संचालन किया। यह सच है कि मजदूर तथा किसानों ने मिलकर क्रांति को सफल बनाया, लेकिन उसके बाद भी सत्ता उनके हाथ में नहीं आई। 4 अगस्त 1789 को जब नेशनल एसेम्बली द्वारा सामन्तवाद की समाप्ति हुई तो उसके द्वारा अपनायी गयी आर्थिक नीतियों ने स्पष्ट कर दिया कि क्रांति पर बुर्जआ वर्ग हावी हो गया है। इस क्रांति से मध्यम वर्ग को ही लाभ हुआ, साधारण जनता को तो मताधिकार भी नहीं दिया गया। नेशनल एसेम्बली ने एक कानून बना कर मिलों में काम करने वाले मजदूरों के संगठन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। क्रांति का नारा 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' का प्रयोग पादरियों तथा सामन्तों के विशेषाधिकारों को समाप्त करने एवं मध्यम वर्ग के लोगों के लिए विशेष सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए था। सन् 1789 ई० से 1815 तक शासन पर मध्यम वर्ग का ही अधिकार रहा। यही कारण था कि जैकोबिन दल ने 'आतंक का राज्य' स्थापित कर सर्वहारा वर्ग को राजनैतिक तथा आर्थिक अधिकार दिलाने का अस्थाई प्रयास किया था। उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए इतिहासकारों की यह बात तथ्यपरक प्रतीत होती है कि फ्रांस की क्रांति का स्वरूप मध्यवर्गीय था, क्योंकि मध्यमवर्ग के लोग ही इसके विशेष कारण के रूप में थे, क्रांति का नेतृत्व भी इन्होंने ही किया, और सर्वाधिक लाभ भी इसी वर्ग को प्राप्त हुआ।

निष्कर्षतः, सन् 1789 की फ्रांस की क्रांति ने फ्रांस में एक ऐसे युग का सूत्रपात किया जिसमें 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' की नींव पड़ी तथा मानवाधिकारों की रक्षा हुई। साथ ही यूरोप के अन्य देश भी इन विचारों से प्रभावित हुए और वहाँ भी सुधारों के एक नये युग का सिलसिला शुरू हुआ।

EXERCISE

I. Objective Questions:

1 .When did the French Revolution happen?

a. 1776 b. 1789 c. 1776 d. 1832

2. When did Bastille fall?

a. 5 May 1789 b. 20 June 1789
c. 14 July 1789 d. 27 August 1789

3. Who belonged to the First Estate?

a. commoner b. peasants
c. clergy d. king

4. Who belonged to the Second Estate?

a. clergy b. king
c. nobility d. middle class

5. Who belonged to the Third Estate?

a. philosophers b. nobility
c. clergy d. judges

6. Voltaire was a.....

a. scientist b. mathematician
c. writer d. craftsman

7. Which principle did Rousseau follow?

a. socialism b. General Will
c. separation of powers d. autocracy

8. Which book was written by Montesquieu?

a. Social Contract b. Law of the Spirit
c. Das Capital d. Macro Knowledge

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. फ्रांस की राजक्रांति किस ई० में हुई?

(क) 1776 (ख) 1789

(ग) 1776 (घ) 1832

2. बैस्टिल का पतन कब हुआ ?

(क) 5 मई 1789 (ख) 20 जून 1789

(ग) 14 जुलाई 1789 (घ) 27 अगस्त 1789

3. प्रथम एस्टेट में कौन आते थे?

(क) सर्वसाधारण (ख) किसान

(ग) पादरी (घ) राजा

4. द्वितीय एस्टेट में कौन आते थे?

(क) पादरी (ख) राजा

(ग) कुलीन (घ) मध्यमवर्ग

5. तृतीय एस्टेट में इनमें से कौन थे?

(क) दार्शनिक (ख) कुलीन

(ग) पादरी (घ) न्यायाधीश

6. वॉल्टेयर क्या था?

(क) वैज्ञानिक (ख) गणितज्ञ

(ग) लेखक (घ) शिल्पकार

7. रूसो किस सिद्धान्त का समर्थक था?

(क) समाजवाद (ख) जनता की इच्छा (General Will)

(ग) शक्ति पृथक्करण (घ) निरंकुशता

8. मांटेस्क्यू ने कौन-सी पुस्तक लिखी?

(क) सामाजिक संविदा (ख) विधि की आत्मा

(ग) दास कैपिटल (घ) वृहत ज्ञानकोष

9. Who was the king of France at the time of the State Revolution?

a. Napoleon b. Louis XIV

c. Louis XVI d. Moravia

10. When is the Independence Day celebrated in France?

a. 4 July b. 14 July

c. 27 August d. 31 July

II. Fill in the blanks:

1. Louis XVI took the throne in .....AD.
2. .....was wife of Louis XVI.
3. The Parliamentary System of France was called.....
4. The capitalist contractual tax collectors were known as.....
5. The Principle of .....was established by Montesquieu.
6. 'The Social contract' is the famous book of.....
7. The National Assembly of France declared.....on 27 August 1789.
8. .....was the famous leader of the Jacobin Club.
9. Slavery was completely abolished in.....
10. The women of France got right to franchise in .....AD.

III. Short Answer Questions:

1. What were the political causes of the French Revolution?
2. What were the social causes of the French Revolution?
3. Throw light on the economic causes of the French Revolution.
4. Explain the intellectual causes of the French Revolution.

9. फ्रांस की राजक्रांति के समय वहाँ का राजा कौन था?

(क) नेपोलियन (ख) लुई XIV

(ग) लुई XVI (घ) मिराब्यू

10. फ्रांस में स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है?

(क) 4 जुलाई (ख) 14 जुलाई

(ग) 27 अगस्त (घ) 31 जुलाई

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. लुई XVI सन् ..... ई० में फ्रांस की गद्दी पर बैठा।
2. ..... लुई XVI की पत्नी थी।
3. फ्रांस की संसदीय संस्था को ..... कहते थे।
4. ठेका पर टैक्स वसूलने वाले पूँजीपतियों को ..... कहा जाता था।
5. ..... के सिद्धान्त की स्थापना मॉन्टेस्क्यू ने की।
6. ..... की प्रसिद्ध पुस्तक 'सामाजिक संविदा' है।
7. 27 अगस्त 1789 को फ्रांस की नेशनल एसेम्बली ने ..... की घोषणा थी।
8. जैकोबिन दल का प्रसिद्ध नेता ..... था।
9. दास प्रथा का अंतिम रूप से उन्मूलन ..... ई० में हुआ।
10. फ्रांसीसी महिलाओं को मतदान का अधिकार सन् ..... ई० में मिला ।

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. फ्रांस की क्रांति के राजनैतिक कारण क्या थे?
2. फ्रांस की क्रांति के सामाजिक कारण क्या थे?
3. क्रांति के आर्थिक कारणों पर प्रकाश डालें।
4. फ्रांस की क्रांति के बौद्धिक कारणों का उल्लेख करें।

5. What do you understand by 'letter de cachet'?
6. What was the influence of the American freedom struggle on the French Revolution?
7. What do you understand by human and peoples' right?
8. What was the effect of French Revolution on England?
9. How did the French Revolution effect England?
10. How was Germany influenced by the French Revolution?

IV. Long Answer Questions:

1. What were the causes of the French Revolution?
2. Mention the outcomes of the French Revolution?
3. The French Revolution was a bourgeois revolution. How?
4. What was the contribution of the philosophers of France in the French Revolution?
5. Mention the achievements of the French Revolution.
6. How did the French Revolution influence the European countries?
7. 'The French Revolution was a landmark'. Support the statement.
8. How was Louis XVI responsible for the French Revolution?
9. What was the role of Jacobins in the French Revolution?
10. Which reforms were passed in France by the National Assembly and the National convention?

5. 'लेटर्स-डी-कैचेट' से आप क्या समझते हैं?
6. अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम का फ्रांस की क्रांति पर क्या प्रभाव पड़ा?'
7. 'मानव एवं नागरिकों के अधिकार से' आप क्या समझते हैं?
8. फ्रांस की क्रांति का इंग्लैंड पर क्या प्रभाव पड़ा?
9. फ्रांस की क्रांति ने इटली को प्रभावित किया, कैसे?
10. फ्रांस की क्रांति से जर्मनी कैसे प्रभावित हुआ?

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फ्रांस की क्रांति के क्या कारण थे?
2. फ्रांस की क्रांति के परिणामों का उल्लेख करें।
3. फ्रांस की क्रांति एक मध्यमवर्गीय क्रांति थी, कैसे ?
4. फ्रांस की क्रांति में वहाँ के दार्शनिकों का क्या योगदान था?
5. फ्रांस की क्रांति की देनों का उल्लेख करें।
6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित किया।
7. 'फ्रांस की क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी' इस कथन की पुष्टि करें।
8. फ्रांस की क्रांति के लिए लुई XVI किस तरह उत्तरदायी था?
9. फ्रांस की क्रांति में जैकोबिन दल की क्या भूमिका थी ?
10. नेशनल एसेम्बली और नेशनल कन्वेंशन ने फ्रांस के लिए कौन-कौन से सुधार पारित किए।

CHAPTER- 4

HISTORY OF WORLD WARS

The First World War (1914-1918)

The year 1914 is worth mentioning for such a war that engulfed the entire world and the countries indulged in the war destroyed all their resources. Almost all countries of the world, directly or indirectly, were affected by the war. The war changed the political, economic conditions and geographical boundaries of many countries. The causes of the war can be traced in the following forms:

The Imperialistic Competition

The process of colonialism for expansion of market had started just after the Industrial Revolution. Therfore, the formation of a colonial region was impossible without giving challenges to the previous imperialist domination. Germany and Italy entered the race very late. So, they got very few colonies, but their desires for imperialism were endless. By 1914, Germany had achieved many industrial sector. It had left Britain and France behind. Germany was in great need of market for raw materials as well as finished goods. The old imperialist countries had already divided most of the countries of Asia and Africa among themselves. In such a condition, the German imperialists wanted to control the economy of decadent Turkey. For this, Germany required approval of the Sultan of Turkey over its railways line project between Berlin and Baghdad. France and Russia opposed this plan of Turkey.

इकाई–4

विश्व युद्धों का इतिहास

प्रथम विश्वयुद्ध (1914–1918) :

विश्व इतिहास में 1914 का वर्ष एक ऐसे युद्ध के लिए उल्लेखनीय है, जिसने सम्पूर्ण विश्व को अपनी आगोश में ले लिया और युद्धरत देशों ने अपने सम्पूर्ण संसाधन इसमें झोंक दिए। विश्व के लगभग तमाम देश इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए। इस युद्ध ने कई देशों की राजनैतिक, आर्थिक स्थिति और नक्शा बदल दिया। इस युद्ध के कारणों को निम्नलिखित रूप में खोजा जा सकता है–

साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा :

औद्योगिक क्रांति के बाद से ही बाजारों के विस्तार के लिए उपनिवेशों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गयी थी। ऐसे में पूर्व के साम्राज्यवादी आधिपत्य को चुनौती दिये बिना नए औपनिवेशिक क्षेत्र का निर्माण संभव नहीं था। इस दौड़ में जर्मनी और इटली का प्रवेश बहुत बाद में हुआ। इस कारण उन्हें कम ही उपनिवेश हाथ लगे लेकिन उनकी साम्राज्यवादी लिप्सा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। 1914 ई० तक जर्मनी औद्योगिक क्षेत्र में काफी प्रगति कर चुका था। वह ब्रिटेन और फ्रांस को भी काफी पीछे छोड़ चुका था। जर्मनी को भी उद्योग के लिए कच्चे माल और फिर तैयार माल के लिए बाजार की आवश्यकता थी। किन्तु एशिया और अफ्रीका के अधिकांश हिस्से को पुराने साम्राज्यवादी देश आपस में बाँट चुके थे। ऐसी परिस्थिति में जर्मन साम्राज्यवादियों ने पतनशील तुर्की साम्राज्य की अर्थव्यवस्था पर अपना नियंत्रण करना चाहा। इसके लिए जर्मनी ने तुर्की के सुल्तान से बर्लिन से बगदाद तक रेलवे लाइन बिछाने की योजना पर स्वीकृति चाही। जर्मनी की इस योजना का फ्रांस तथा रूस ने विरोध किया ।

The imperialist ambition of Japan was increased after its victory in Russo Rassian-Japanese war in 1905. By the end of nineteen century, America had also emerged as a powerful nation and it was taking interest in maintaining the freedom of trade because its interest was in danger due to emergence of other powers.

The Radical nationalism

By the second half of the 19th Century radical nationalism in the European countries, was on rise The people of the same castes, religions, languages and historical traditions wanted formation of separate country.

Most of the residents of Austria-Hungary and the Turkish Empire belonged to Slav community. They started an all Slav movement which was based on the philosophy that all Slavs are one nation. It made the relation of Austria-Hungry bitter with Russia. Similarly an all German movement started with the objective of expansion of German empire in the Balkan Peninsula. Thus, radical nationalism created a tense situation among the countries of Europe.

The Militarism

The European countries were paying all their attentions on the military power. The main European countries like France, Germany and others were spending 85% of their income on military preparedness. In 1913-14, the number of regular army was 8 lacs in France, 7 lacs 60 thousand in Germany and 15 lacs in Russia. From early time, Britain had its domination in the field of naval power. Germany took it as a challenge and started increasing its marine fleet to demean England. Germany manufactured a ship named Imperator, the biggest ship of that time. Thus, Germany became the second strongest nation after England.

Formation of Alliance (Blocks)

Being victim of Covetous was, All the strongest Countries had started formation of blocks (alliances) to fulfill their imperialistic desires. Every nation was finalising its strategy to meet its selfish imperialist needs.

महत्वाकांक्षा और परवान चढ़ने लगी थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक अमेरिका भी एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आ चुका था और वह व्यापार की स्वतंत्रता बनाए रखने में दिलचस्पी ले रहा था, दूसरी ताकत के उभरने से उसके हितों को खतरा था।

उग्र राष्ट्रवाद :

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक यूरोप के देशों में राष्ट्रीयता का संचार उग्र रूप से होने लगा। समान जाति, धर्म, भाषा और ऐतिहासिक परम्परा के लोग एक साथ मिलकर अलग देश का निर्माण चाहने लगे। तुर्की साम्राज्य तथा ऑस्ट्रिया-हंगरी में अधिकांश निवासी स्लाव जाति के थे। उनलोगों ने सर्वस्लाव आन्दोलन की शुरूआत की जो इस सिद्धान्त पर आधारित था कि यूरोप के सभी स्लाव जाति के लोग एक राष्ट्र हैं। इसने ऑस्ट्रिया-हंगरी का रूस के साथ सम्बंध कटु बना दिया। इसी तरह सर्वजर्मन आन्दोलन शुरू हुआ जिसका लक्ष्य बाल्कन प्रायद्वीप में जर्मन साम्राज्य का विस्तार था। इस प्रकार उग्र राष्ट्रवाद ने यूरोप के देशों के आपसी सम्बन्ध को तनावग्रस्त बना दिया।

सैन्यवाद :

यूरोपीय देश अपनी सैनिक शक्ति पर सारा ध्यान केन्द्रित कर रहे थे। फ्रांस, जर्मनी आदि प्रमुख यूरोपीय देश अपनी राष्ट्रीय आय का लगभग 85% सैनिक तैयारियों पर व्यय कर रहे थे। 1913-14 ई० में फ्रांस के पास लगभग 8 लाख, जर्मनी में 7 लाख 60 हजार और रूस में 15 लाख की स्थायी सेना थी। जल सेना के क्षेत्र में शुरू से ही इंग्लैंड का आधिपत्य था, जर्मनी ने इसको चुनौती के रूप में लिया और इंग्लैंड को नीचा दिखाने के लिए जहाजी बेड़ा बनाना शुरू किया। 1912 में जर्मनी ने इम्परेटर नामक जहाज बनाया जो उस समय का सबसे बड़ा जहाज था। इस प्रकार जर्मनी, इंग्लैंड के बाद दूसरा शक्तिशाली राष्ट्र बन गया।

गुटों का निर्माण :

साम्राज्यवादी लिप्सा के शिकार शक्तिशाली देश अपने-अपने हितों के अनुरूप गुटों का निर्माण करने लगे थे। एक समान स्वार्थ को केन्द्र में रखकर राष्ट्र रणनीति तय करने लगे थे। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण यूरोप गुटों में बँट गया। यूरोप धीरे-धीरे सैनिक शिविर का रूप लेता जा रहा था। यूरोप में यह प्रक्रिया उन्नीसवीं शताब्दी से ही जारी थी। यूरोप में गुटबन्दी का

Consequently, the entire Europe got divided into blocks. Gradually, Europe was turning into a military camp. This process was in progress in Europe from the nineteenth century. The Chancellor of Germany, Bismarck is known as the founder of factionalism. He made a duplex treaty with Austria in 1879. A triple alliance came into existence in 1882 comprising Germany, Austria-Hungary and Italy. Bismarck had founded this triple alliance against France. Though the credibility of Italy was doubtful, because its main objective was to usurp some parts of Austria-Hungary in Europe and to win Tripoli with the support of France. France, Russia and Britain made a triple national treaty against the triple alliance. It was an accommodating alliance based on some common benefits and understanding. The presence of both the blocks prepared the field for a terrible war.

The Events leading to first world war

Before the beginning of the First World War in 1914, there were some incidents which brought the war closer. They were the issues belonging to Balkan Peninsula and questions related to Morocco. On the basis of a mutual agreement in 1904, Britain was free to establish colony in Egypt and France got Morocco. Germany was greatly irritated by this. Germany was clamouring for independence of Morocco and France was more concerned about its own interest. By 1911, France had captured most of Morocco.

In 1904, Austria captured Turkey. Serbia was also interested in the region. They were interested in establishing a joint Slav State in the Balkan. For this it had the support of Russia. Russia warned Austria to start a war. Germany did not like it and openly came in favour of Austria. Finally, Russia had to retreat, but this aggravated enmity between Russia and Germany. At the same time, the attitude of Germany was equally venomous against France. The Chancellor of Germany Bismarck ,wanted France to be powerless. He had grasped the rich French states of Alsace and Lorraine. Germany had strongly opposed France in Morocco also. Consequently, the gap widened and it brought the world war nearer.

जन्मदाता जर्मनी के चांसलर बिस्मार्क को माना जाता है। उसने सन् 1879 में ऑस्ट्रिया के साथ द्वैध संधि की। 1882 ई० में एक त्रिगुट (ट्रिपल एलांयस) बना जिसमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली शामिल हुए। यह त्रिगुट बिस्मार्क ने फ्रांस के विरुद्ध बनाई थी। यद्यपि इटली की विश्वसनीयता संदिग्ध थी, क्योंकि उसका मुख्य उद्देश्य यूरोप में ऑस्ट्रिया-हंगरी से कुछ इलाके छीनना और फ्रांस की सहायता से त्रिपोली को जीतना था। इस त्रिगुट के विरोध में फ्रांस, रूस और ब्रिटेन ने 1907 ई० में एक त्रिदेशीय संधि (ट्रिपल एतॉत) बनाई। यह सामान्य हितों और समझदारी पर आधारित ढीला-ढाला गठजोड़ था। इन दोनों गुटों की उपस्थिति ने युद्ध की भयावहता को तय कर दिया।

घटनाक्रम :

1914 ई० में प्रारंभ हुए प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व के वर्षों में इस तरह से घटनाएँ घटित हो रही थीं, जैसे- मोरक्को का प्रश्न हो या बाल्कन प्रायद्वीप का मुद्दा, ये सभी युद्ध को निकट लाने का कार्य कर रहे थे। 1904 ई० में आपसी समझौते के फलस्वरूप ब्रिटेन को मिस्र में उपनिवेश स्थापित करने की छूट मिली और फ्रांस को मोरक्को प्राप्त हुआ। इससे जर्मनी को बड़ा क्षोभ हुआ। जर्मनी, मोरक्को की स्वतंत्रता की दुहाई दे रहा था और फ्रांस अपने हित के आगे अंधा बना हुआ था। 1911 ई० में फ्रांस ने मोरक्को के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया।

1904 ई० में ऑस्ट्रिया ने तुर्की पर अपना अधिकार जमा लिया। इस क्षेत्र को सर्बिया भी लेना चाहता था। वह बाल्कन क्षेत्र में एक संयुक्त स्लाव राज्य कायम करना चाहता था। इसके लिए उसे रूस का समर्थन प्राप्त था। रूस ने ऑस्ट्रिया को युद्ध छेड़ने की धमकी दी। इस पर जर्मनी खुलकर ऑस्ट्रिया के पक्ष में आ गया। अंततः रूस को पीछे हटना पड़ा, लेकिन इस घटना से रूस और जर्मनी में कटुता और बढ़ी। साथ ही जर्मनी, फ्रांस के प्रति भी उतना ही विषाक्त था। जर्मनी का चांसलर बिस्मार्क फ्रांस को पंगु बना देना चाहता था। उसने फ्रांस के धनी प्रदेश अल्सास तथा लोरेन पर अपना अधिकार कर लिया था। जर्मनी ने मोरक्को में भी फ्रांस का डटकर विरोध किया था। फलतः यह खाई बढ़ती गयी और इसने विश्वयुद्ध को और नजदीक किया ।

The Beginning of War

The war started from an ordinary incident. If the entire Europe had not been divided into blocks and an environment of bitterness and enmity had not been prevalent, the incidents could not have happened. Arch Duke Ferdinand was assassinated on 28th June, 1914 at Sarajevo, the capital of Bosnia. For this incident, Austria held Serbia responsible and put demands before Serbia which Serbia turned down, taking it as a very severe blow to its independence. Consequently, Austria declared war against Serbia on 28th July, 1914. Russia assured Serbia of full support and started preparation for war. Germany declared war against Russia on 1st August, 1914 and against France on 3rd August, 1914. German Army entered Belgium on August 4th to put pressure on France. On the same day, Britain declared war against Germany and now it started to take a very extensive shape. Some other countries also entered the war. Japan declared war against Germany, with a view to usurping German colonies in the Far-East. Turkey and Bulgaria went in the favour of Germany. Italy, inspite of being a member of the Triple Alliance sat on the fence for sometime and finally joined war against Germany and Austria-Hungary. Thus the assassination of Arch Duke Ferdinand came up as the immediate cause of war.

The End of war and Peace Treaties

Another incident took place in 1917. It was separation of Russia from war. Till now, more than 6 lakhs soldiers of Russia had been killed. The economic condition of Russia had also become worse. With Bolshevik government coming into power, its leader Lenin issued a notification having proposal of establishing peace in other's region without arms and without compensation for war. Though these conditions and withdrawal of Russian army from war was inevitability of its own internal organization, Germany took it as weakness of Russia and put some difficult terms and conditions before it. Inspite of that, Russia accepted it and withdrew from war. A Russia-Germany peace treaty took place in March 1918 and Russia completely separated itself from war.

युद्ध की शुरूआत :

युद्ध की शुरूआत एक मामूली घटना से हुई। अगर सम्पूर्ण यूरोप गुटों में न बँटा होता और कटुता एवं विद्वेष का माहौल पहले से व्याप्त न होता तो शायद यह घटना नहीं हो पाती। 28 जून 1914 को आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड की बोस्निया की राजधानी साराजेवो में हत्या हो गई। ऑस्ट्रिया ने इस घटना के लिए सर्बिया को जिम्मेवार ठहराया और सर्बिया के समक्ष माँगें रखीं। सर्बिया ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया क्योंकि इसे वह स्वतंत्रता पर कुठाराघात समझता था। फलतः 28 जुलाई 1914 को ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। रूस ने सर्बिया को पूर्ण सहायता का वचन दिया और युद्ध की तैयारी करने लगा। जर्मनी ने 1 अगस्त 1914 को रूस और 3 अगस्त 1914 को फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। फ्रांस पर दबाव डालने के लिए जर्मन सेनाएँ 4 अगस्त को बेल्जियम में घुस गई। उसी दिन ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी और इस तरह यह व्यापक रूप धारण करने लगा। इसी क्रम में दूसरे देश भी लड़ाई में शामिल होते गये। जापान ने सुदूर-पूर्व में जर्मनी के उपनिवेश हथियाने के उद्देश्य से जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। तुर्की और बुल्गारिया जर्मनी की तरफ हो गए। त्रिगुट का सदस्य होने के बावजूद इटली कुछ समय तक तटस्थ रहा। अंततः वह भी जर्मनी और ऑस्ट्रिया-हंगरी के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया। इस प्रकार आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड की हत्या युद्ध के तात्कालिक कारण के रूप में सामने आया।

युद्ध का अंत और शांति-संधियाँ :

1917 ई० में एक और महत्वपूर्ण घटना घटी, वह था रूस का युद्ध से अलग हो जाना। अब तक रूस के 6 लाख से अधिक सैनिक मारे जा चुके थे। रूस की अर्थव्यवस्था भी अत्यन्त दयनीय हो गई थी। बोल्शेविक सरकार के सत्ता में आते ही, इसके नेता लेनिन ने एक विज्ञप्ति जारी की, जिसमें दूसरे के क्षेत्रों को हथियार बिना और युद्ध के हर्जाने लिए बिना शांति स्थापित करने के प्रस्ताव रखे गये थे। यद्यपि ये शर्तें और युद्ध से रूस का हटना, उसकी अपनी आंतरिक व्यवस्था की अपरिहार्यता थी, लेकिन जर्मनी ने इसे रूस की कमजोरी माना और कुछ मुश्किल शर्तें रूस के समक्ष रख दिया। इसके बावजूद भी रूस इसे स्वीकार कर युद्ध से हट गया। मार्च 1918 में रूस-जर्मनी में एक शांति-संधि हुई और रूस युद्ध से पूर्णतः अलग हो गया।

After Russia leaving the war, voices were raised to end the war. The countries indulged in war, did not express their wish openly but their country men raised voices against the war. Military rebellion took place in some places. The morale of common people all over the world became high because of the new Bolshevik government in Russia. The people of war affected countries raised voices against their own government. The U-boat submarine of Germany started to sink the ships moving towards British seaport. At the sinking of the ship 'Lusitania', America reacted very strongly as the American citizens were on board. When Germany did not stop this act even after America's ultimatum on April 6th, 1917, America declared war against Germany. The situation of war totally changed after involvement of America in the war. In July, 1918 British, France and Americans started a joint military campaign and Germany and its allies started losing. Bulgaria left the war in September and Turkey surrendered in October. the political discontentment was increasing in Germany and Austria-Hungary. The Emperor of Austria and Hungary surrendered on November 3, 1918. A revolution erupted in Germany and it became a republic. German Emperor Kaiser William-II migrated to Holland. The New German government signed a ceasefire treaty on 11th November, 1918 and thus, the war came to an end.

In such conditions, the American President Woodrow Wilson offered a peace programme in 1918. That was known as fourteen points programme. It covered matters related to carry out open dialogues between states, freedom of the sea, reduction in weapon, independence of Bulgaria, restoration of Alsace-Lorraine to France, establishment of independent states in Europe, and formation of an International Organisation to guarantee independence to countries. Thus, some points of Wilson were included in the Peace Treaty.

The Treaty of Versailles

A conference of the victorious powers (Allies) was held between January and June 1919 at Versailles, a sub-urban town of Paris and then in Paris itself. Although 27 countries participated in the conference but three countries Britain, France and America were playing dominant role. More influential in the debate were the American president Woodrow the Prime Minister of Britain Lord George and the Prime Minister

रूस का युद्ध से हट जाने के बाद युद्ध समाप्ति की आवाजें उठने लगीं। युद्धरत देशों ने प्रकटत: तो अपनी इच्छा नहीं जाहिर की, लेकिन इन देशों की जनता ने युद्ध के खिलाफ आवाज उठाना शुरू कर दिया। जगह-जगह सैनिक विद्रोह होने लगे, रूस की नई सरकार से पूरे विश्व में आम जनता का मनोबल ऊँचा हुआ। युद्धरत देश की जनता अपनी ही सरकार के खिलाफ आवाज उठाने लगी। जर्मनी के यू नौका नामक पनडुब्बियों ने ब्रिटिश बन्दरगाह की तरफ जाने वाले जहाजों को डुबोना शुरू किया जिसमें 'लुसीतानिया' नामक जहाज को डुबाने से अमेरिका में प्रतिक्रिया हुई क्योंकि उसमें अमेरिकी नागरिक सवार थे। अमेरिका के मना करने पर भी जब जर्मनी ने अपनी कार्यवाही नहीं रोकी तब अमेरिका ने 6 अप्रैल 1917 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अमेरिका के युद्ध में शामिल होने से युद्ध की स्थिति ही बदल गई। जुलाई 1918 में ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने संयुक्त सैनिक अभियान आरंभ किया और जर्मनी तथा उसके सहयोगी देशों की हार होने लगी। बुल्गारिया सितम्बर में युद्ध से अलग हो गया। अक्टूबर में तुर्की ने आत्मसमर्पण कर दिया। ऑस्ट्रिया-हंगरी और जर्मनी में राजनीतिक असंतोष बढ़ रहा था। 3 नवम्बर 1918 को ऑस्ट्रिया तथा हंगरी के सम्राट ने आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मनी में एक क्रांति फूट पड़ी और जर्मनी एक गणराज्य बन गया। जर्मन सम्राट कैसर विलियम द्वितीय पलायन कर हॉलैंड चला गया। नई जर्मन सरकार ने 11 नवम्बर, 1918 को युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर किए और इस प्रकार युद्ध समाप्त हो गया।

ऐसे में अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने जनवरी 1918 में शांति का एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जो चौदह सूत्रों के नाम से चर्चित हुआ। इसमें राज्यों के बीच खुली बातचीत चलाना, जहाजरानी की स्वतंत्रता, हथियारों में कमी, बेल्जियम की स्वतंत्रता, फ्रांस को अल्सास तथा लोरेन की वापसी, यूरोप में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना, सभी राज्यों की स्वतंत्रता की जमानत के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना जैसी बातें शामिल थीं। इस प्रकार शांति-संधि में विल्सन के कुछ सूत्रों को शामिल किया गया।

वर्साय की संधि :

जनवरी और जून 1919 के बीच विजयी शक्तियों (मित्र राष्ट्रों) का एक सम्मेलन पेरिस के उपनगर वर्साय में और फिर पेरिस में हुआ। हालाँकि इस सम्मेलन में 27 देश भाग ले रहे थे, लेकिन तीन देश ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ही निर्णायक भूमिका निभा रहे थे। अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लॉयड जार्ज और फ्रांस के प्रधानमंत्री

George Clemenceau of France and President Woodrow Wilson of the United States. They finalised the conditions of peace treaty and imposed it forcefully over the defeated countries. The defeated nations were not given any importance. Russia was also kept out side of the process of peace-treaty. The main treaty was made with Germany on 28th June, 1919. This is known as the Versailles Treaty. Germany was compelled to sign the treaty. In the treaty, Germany was held responsible for the war. The territory of Alsace-Lorraine was restored to France. The war fields of Saar region of Germany was brought under League of Nations. Germany had to give some parts of its pre-war territory to Denmark, Belgium, Poland and Czechoslovakia. It was decided to make Rhine basin area military free zone. German troop was limited to 1 lakh and deprived of the right to keep air-force and submarine. The victorious countries distributed the German colonies among themselves. Britain and France distributed Toga and Cameroon among themselves. The colonies located in South-West Africa and eastern Africa were handed over to Britain, Belgium, South Africa and Portugal. All German colonies in Pacific region and all domain in China were given to Japan. China was supported by Allies during war and its representative had participated in the Paris conference. But its regions controlled by Germany were not returned to China, rather handed over to Japan. Germany had to pay compensation to the Allies.

Versailles Treat

जॉर्ज क्लीमेंशु, ये ही तीन प्रमुख व्यक्ति थे जो शांति-संधि की शर्तें तय कर रहे थे और पराजित राष्ट्रों के मत्थे इसे मढ़ रहे थे। सम्मेलन में पराजित राष्ट्रों को कोई महत्व नहीं दिया गया। रूस को भी इस शांति-संधि प्रक्रिया से बाहर रखा गया। मुख्य संधि जर्मनी के साथ 28 जून 1919 को हुई। इसे वर्साय की संधि के नाम से जाना जाता है। पराजित जर्मनी को संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया। संधि में जर्मनी को युद्ध का जिम्मेवार बताया गया। फ्रांस को अल्सास-लोरेन का क्षेत्र वापस दे दिया गया। जर्मनी की सार क्षेत्र की कोयला खदानों को 15 वर्ष के लिए फ्रांस को दे दिया गया तथा इसका प्रशासन राष्ट्रसंघ के अधीन कर दिया गया। जर्मनी को अपने युद्धपूर्व क्षेत्र का कुछ भाग डेनमार्क, बेल्जियम, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया को भी देना पड़ा। राइन नदी की घाटी क्षेत्र को सेना रहित करने का फैसला किया गया। संधि के तहत जर्मनी की सेना 1 लाख तक सीमित कर दी गयी। उससे वायुसेना और पनडुब्बियाँ रखने के अधिकार छीन लिये गए। जर्मनी के सारे उपनिवेश विजित राष्ट्रों ने आपस में बाँट लिये। टोगा और कैमरून को ब्रिटेन और फ्रांस ने आपस में बाँट लिया। दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका में स्थित जर्मन उपनिवेश ब्रिटेन, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका और पुर्तगाल को दे दिए गए। प्रशांत क्षेत्र में स्थित उसके उपनिवेश तथा चीन में उसके सारे अधिकार क्षेत्र जापान को दे दिए गए। युद्ध के दौरान चीन मित्र राष्ट्रों का सहयोगी था और पेरिस सम्मेलन में उसका प्रतिनिधि भी शामिल हुआ था। परन्तु जर्मनी के अधिकार या नियंत्रण वाले चीनी क्षेत्र चीन को नहीं लौटाए गए बल्कि वे जापान को दे दिए गए। युद्ध में मित्र राष्ट्रों को जो हानि एवं क्षति हुई थी, उसका हर्जाना भी जर्मनी को भरना था। इसके लिए 6 अरब 10 करोड़ पौंड की भारी रकम निश्चित की गई।

वर्साय की संधि

for their losses and damages. For this a heavy amount of 6 billion and 10 crore pounds was fixed.

Separate treaties were made with German allies. Austria-Hungary was bifurcated. Austria was asked to grant independence to Hungary, Czechoslovakia, Yugoslavia and Poland. She had to give her territories to these countries and Italy. Many changes were made in Balkan region. Many states were carved out and territories were transferred among them. Baltic state, part of the Russian Empire was declared independent. Under the treaty made with Turkey, the Turkish empire was badly damaged. Palestine and Mesopotamia (Iraq) were transferred to Britain, while France got Syria. The system by which the transfer of countries and region was done, is called as 'Mandate System'. In principle, the mandate power, Britain or France, had to rule over these countries. In reality, they were governed like colonies. Most of the areas of Turkey was given to Greece and Italy and it was decided to make Turkey into a small state.

Charter of League of Nations was an integral part of these treaties. It was mentioned in the fourteen points formulae of President Woodrow Wilson. Its objective was to maintain peace and security, peaceful settlement of international disputes and to compel the member countries, not to indulge in wars. An important provision was related to Economic Sanctions. It also included economic and military actions against any aggressive countries, ways for improving the conditions of labourers and social conditions of the member countries.

The Consequences of the War and Peace-Treaties

The first world war was the most devastating among all the wars and the comprehensiveness and destruction was extremely tragic. According to various assumptions, about 45 crore were affected by the war. The number of causalities in the war is said to be 90 lakhs, which is about one seventh of the people who participated in the war. Lakhs of the people Became physically challenged. A large number of civilian lost their lives in air attack, famine and epidemic. Economic and political system of many countries were damaged that caused led to many social problems.

जर्मनी के सहयोगियों के साथ अलग से संधियाँ की गईं। ऑस्ट्रिया-हंगरी को विभाजित कर दिया गया। ऑस्ट्रिया से कहा गया कि वह हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और पोलैंड की स्वाधीनता को मान्यता दे। उसे अपने क्षेत्र भी इन देशों को और इटली को देने पड़े। बाल्कन क्षेत्र में अनेक परिवर्तन किए गए। अनेक राज्य बनाए गए और उनके बीच भू-भागों का हस्तांतरण किया गया। बाल्टिक राज्य, जो रूसी साम्राज्य के भाग थे, स्वतंत्र घोषित कर दिए गए। तुर्की के साथ की गई संधि में तुर्की साम्राज्य को पूरी तरह छिन्न-भिन्न कर दिया गया। ब्रिटेन को फिलिस्तीन और मेसोपोटामिया (इराक) दे दिए गए और फ्रांस को सीरिया दे दिया गया। क्षेत्रों और देशों का यह हस्तांतरण जिस व्यवस्था के तहत् किया गया उसे शासन- देश (मेंडेट) व्यवस्था कहा जाता है। सिद्धान्त रूप में 'शासनदेश' (मेंडेट), जाने वाली शक्तियाँ अर्थात् ब्रिटेन और फ्रांस को इन देशों का शासन चलाना था। वास्तव में उनका शासन उपनिवेशों की तरह किया जाने लगा। तुर्की के क्षेत्र का अधिकांश भाग यूनान और इटली को दे दिया गया और खुद तुर्की को एक छोटा सा राज्य बनाने का निर्णय लिया गया।

इन शांति-संधियों का एक प्रमुख अंग था राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ नेशंस) का प्रसंविदा । अमेरिका के राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन के चौदह सूत्री सिद्धान्त में इसकी चर्चा थी। इसके उद्देश्य थे-शांति और सुरक्षा बनाए रखना, अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का शांतिपूर्ण निपटारा करना और सदस्य देशों को ''युद्ध का सहारा न लेने के लिए'' बाध्य करना। इसका एक महत्वपूर्ण प्रावधान प्रतिबंधों से संबंधित था। इसके अनुसार किसी भी आक्रमणकारी देश के खिलाफ आर्थिक और सैनिक कार्रवाई करना शामिल था। इसके प्रावधानों में सदस्य राष्ट्रों के श्रमिकों की दशा और सामाजिक स्थिति को सुधारने के उपायों को शामिल किया गया।

युद्ध और शांति-संधियों के परिणाम :

अब तक के हुए युद्धों में प्रथम विश्वयुद्ध सबसे भयावह था और इसकी व्यापकता और बर्बादी त्रासदपूर्ण थी। विभिन्न अनुमानों के अनुसार लगभग 45 करोड़ लोग इस विश्वयुद्ध से प्रभावित हुए। लड़ाई में या अन्यथा मरने वालों की संख्या 90 लाख बतलाई जाती है, जो युद्ध में भाग लेने वालों की संख्या का लगभग सातवाँ भाग है। लाखों लोग अपंग हो गए। हवाई हमलों, अकालों और महामारियों से भारी संख्या में असैनिक लोग मारे गए। विभिन्न देशों की राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। इससे अनेक सामाजिक समस्याएँ खड़ी हुईं।

The Emergence of new political system

The first world war and many peace-treaties concluded after the war brought about political changes in many countries. Many monarchlies faded into the oblivion, democratic system of government emerged in many countries and the world came across new communist governments. Many ruling dynasties as Romanov regime of Russia, Hohenzollern of Germany and Hapsburg in Austria-Hungary perished. The rule of Ottoman dynasty in Turkey ended shortly after the war. Austria and Hungary became two separate states. Czechoslovakia and Yugoslavia emerged as independent countries.

European supremacy came to an end and the United States emerged as a world super power and left Europe behind in terms of military and economy. After a short time Russia also became super power on the world scene. The freedom movement going on in the countries in Asia and Africa got support and strength.

The European notion of supremacy diminished because imperialist Europe always tried to publicize that Europe and its people are superior. This myth was shattered (broken) by defeat of Russia in Russo-Japan war in 1905 and the freedom movement in the countries of Asia and Africa intensified.

The Background of the Second World War

The people were badly affected by the towering inflation and holocaust of the first World War. All nations wanted to evade such wars. For this, an international organization was established. But the Treaties of Versailles League of Nations and Paris prepared background of next world war. The ways in which the decisions were imposed on the defeated countries and the ways were they treated, it was obvious that recurrence of war was remittent. But it was not expected that the war will start so quickly. The first world war could not eliminate imperialism rather than agreement signed after it further intensified the speed of imperialism. Though League of Natious, an international organisation, was formed to stop war, but inspite of some elementary success is it could not succeed in preventing wars.

नयी राजनीतिक व्यवस्था का उदय :

प्रथम विश्वयुद्ध और इसके बाद सम्पन्न शांति-संधियों ने अनेक देशों की राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन किया। कई राजतंत्र नष्ट हो गए, कई देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था का उदय हुआ एवं नई साम्यवादी सरकार से विश्व-जनमत रू-ब-रू हुआ। तीन शासक वंश नष्ट हो गए यथा-रूस का रोमानोव शासन, जर्मनी का होहेनजोलर्न और ऑस्ट्रिया-हंगरी में हेब्सबर्ग के शासक वंश समाप्त हो गए। युद्ध के कुछ ही समय बाद तुर्की में उस्मानिया वंश का शासन समाप्त हो गया। ऑस्ट्रिया और हंगरी दो अलग-अलग स्वतंत्र राज्य बन गए। चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया स्वतंत्र देशों के रूप में उभरे। पोलैंड स्वतंत्र देश के रूप में सामने आया।

यूरोप का वर्चस्व समाप्त हुआ और संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व शक्ति बनकर उभरा। उसने सैनिक और आर्थिक दृष्टि से यूरोप को पीछे छोड़ दिया। कुछ ही समय बाद विश्व-रंगमंच पर सोवियत रूस भी विश्व-शक्ति के रूप में सामने आया। एशिया और अफ्रीका के देशों में चल रहे स्वाधीनता आंदोलन को भी बल मिला।

यूरोप की श्रेष्ठता का दावा, इस युद्ध से धुमिल हुई क्योंकि साम्राज्यवादी यूरोप सदैव इस प्रचार को हवा देता था कि यूरोप और यूरोपीय लोग श्रेष्ठ हैं। रूस-जापान का 1905 का युद्ध और इसमें रूस की पराजय से भी यह मिथक टूटा, साथ ही एशिया और अफ्रीका के देशों में स्वाधीनता आंदोलन तीव्र हुए।

द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार

प्रथम विश्वयुद्ध की भयावहता और व्यापकता से लोग आक्रांत थे। सभी राष्ट्र भविष्य में ऐसे किसी युद्ध की कल्पना से बचना चाहते थे। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी बनाया गया। लेकिन वर्साय और पेरिस की संधियों ने अगले विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। जिस तरह से पराजित राष्ट्रों पर निर्णय थोपे गये थे, उनका अपमान किया गया था, इससे यही स्पष्ट था कि अगला विश्वयुद्ध होकर रहेगा। यद्यपि इतना शीघ्र इसकी शुरूआत हो जाएगी, इसकी कल्पना शायद किसी को नहीं थी। प्रथम विश्वयुद्ध साम्राज्यवाद को समाप्त नहीं कर सका, बल्कि इसकी समाप्ति के उपरांत जो समझौते हुए उससे साम्राज्यवाद का वेग और प्रचंड हुआ। यद्यपि युद्ध को रोकने के लिए 'राष्ट्रसंघ' नामक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की गई परन्तु यह अपनी आरम्भिक छोटी-मोटी सफलताओं के बावजूद भी युद्ध को रोकने में सफल नहीं हो सका।

The Second World War (1939-1945)

By the end of 1936, the states displeased with the Paris agreement had got themselves freed from their duties of the provision of the treaty. Now they were making claims of compensation and in absence of compensation war was imminent. Due to apprehension of war, the British government, that wanted to present an example by following the policy of disarmament, gave up this idea and was engaged in making weapons on the basis of defence. The League of Nations was a mere spectator and finally the expected war erupted. In course of discussion of the second world war, it would be relevant to mention that end of first world war and the events from the Paris treaty to 1939, were responsible for the second world war.

The Absurdities of Versailles Treaty

The seed of the second world war was sown in the Versailles Treaty. The Allies (Winner countries) continued to belie principles through secret treaties in Paris Peace Conference. On the one hand Russia unveiled the conditions of secret treaties, exposed the truth of the Allies, on the other hand the defeated countries became angry to know the reality.

The Aversion of Pledge

Having signed the charter of League of Nations, all members of states had pledged collectively to save the territorial integrity and political freedom of every country. But when the time came, all strong and capable countries did not adhere to their pledges. Russia was not made a member and America denied to be a member. China continued to be affected by the imperialist policies of Japan and Italy regularly oppressed Abyssinia. France contributed to the destruction of Czechoslovakia. Hitler had been usurping Chech states but Britain and France kept mum. Aggressive attitudes got much support from the policy of treachery. Japan attacked China and captured Manchuria. Abyssinia became prey to the aggressive policy of Mussolini. Hitler could not bear the success of Mussolini and attacked Austria and Czechoslovakia. He invaded Poland also. So the Second World War started.

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945):

पेरिस के शांति समझौते से असंतुष्ट राज्यों ने 1936 के अंत तक इस व्यवस्था के अन्तर्गत अपने कर्त्तव्यों से स्वयं को मुक्त कर लिया था। अब वे अपनी क्षति-पूर्ति का दावा कर रहे थे, जिसका अर्थ क्षति-पूर्ति न होने पर केवल युद्ध ही हो सकता था। इस खतरे के कारण ब्रिटिश सरकार जो अपनी ओर से नि:शस्त्रीकरण करके एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहती थी, ऐसा करने का इरादा छोड़ दिया और प्रतिरक्षा के नाम पर सशस्त्रीकरण में जुट गयी। राष्ट्रसंघ इन तमाम घटनाओं का मौन और मूक साक्षी बना रहा और अंतत: वह घड़ी आ ही गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारणों की चर्चा के क्रम में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति और पेरिस संधि से लेकर 1939 तक के घटनाक्रम का उल्लेख प्रासंगिक होगा, जिसकी अपरिहार्य परिणति के रूप में द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ।

वर्साय संधि की विसंगतियाँ

द्वितीय विश्वयुद्ध का बीजारोपण वर्साय संधि में ही हो गया था। पेरिस शांति सम्मेलन में ही सिद्धान्त की बातों को विजित राष्ट्र गुप्त संधियों के माध्यम से झुठलाते भी रहे। सोवियत रूस ने गुप्त संधि की शर्तों का भंडाफोड़ कर जहाँ एक ओर विजित राष्ट्रों की हकीकत को उजागर किया वहीं पराजित राष्ट्र सत्य से परिचित हो बौखलाहट से भर गए।

वचन विमुखता :

राष्ट्रसंघ के विधान पर हस्ताक्षर कर सभी सदस्य राज्यों ने वादा किया था कि वे सामूहिक रूप से सबकी प्रादेशिक अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा करेंगे। अवसर आने पर सब समर्थ राष्ट्र पीछे हटते गये, रूस को सदस्य नहीं बनाया गया था, अमेरिका ने सदस्य बनने से इनकार कर दिया था। चीन, जापान की साम्राज्यवादी नीतियों का शिकार होता रहा और इटली अबीसीनिया को रौंदता रहा। फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया के विनाश में सहायक हुआ। हिटलर चेक राज्यों को हड़पता रहा और ब्रिटेन तथा फ्रांस देखते रहे। धोखेबाजी की नीति से आक्रामक प्रवृत्तियों को काफी प्रोत्साहन मिला। जापान ने चीन पर आक्रमण कर मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। अबिसीनिया मुसोलिनी की आक्रामक नीति का शिकार हुआ। मुसोलिनी का सफलता प्राप्त करते देख हिटलर ने ऑस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया पर धावा बोल दिया। उसने पोलैंड पर भी चढ़ाई कर दी और इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।

The Civil War

Factionalism and military pacts were also responsible for the second world war. Many treaties were signed in Europe in the name of maintaining peace and as a result of that Europe was re-divided into two blocks. One block was led by Germany and the other by France. Behind the factionalism there was similarity of principles and interests. Italy, Japan and Germany believed in the principle of fascism and had a common policy of expansionism. These nations were annoyed by the Versailles treaty and at any cost wanted to be free from the imposed terms on them.

On the other hand France, Czechoslovakia, Poland and other countries had similar interest because they had got large benefits through Versailles treaty and wanted to keep it intact. Initially, Britain was not associated to any block but due tosome circumstance it had to join it. Till then Russia was aloof and both the bocks were watching with scepticism but circumstances compelled Germany to become closer to Russia. The whole atmosphere of Europe became violent and tense due to this factionalism. Every small matter was important in a violent atmosphere.

The Armament

In the atmosphere of factionalism and misgiving every country was feeling unsecure. Consequently every nation gave impetus to armament. Chamberlain, Finance Minister of the British Government, who wanted to present an example of disarmament, in March, 1937, declared that now the expenditure on defence will not be met only through tax. He presented a proposal of a loan of 40 crore pound and to expand 1.5 billion pound on defence in a period of five years. The Prime Minister of Britain Baldwin supported the proposal by saying that his objective was to control invasion. Military budget of every country was increasing and every nation was equipping its army with modern weapons. More emphasis was given on the air-force and navy. This military preparation increased the feeling of insecurity.

गृहयुद्ध : (गुटबंदी)

गुटबंदी और सैनिक संधियाँ भी द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेवार थीं। शांति बनाए रखने के नाम पर यूरोप में अनेक संधियाँ हुई। जिसके परिणामस्वरूप यूरोप पुनः दो गुटों में बँट गया। एक गुट का नेता जर्मनी बना और दूसरा गुट का नेता फ्रांस बना। इस गुटबंदी के पीछे सैद्धान्तिक समानता और हितों की एकता थी। इटली, जापान और जर्मनी एक सिद्धान्त फासिज्म में विश्वास रखते थे और उनकी नीति भी समान रूप से प्रसारवादी थी। ये राष्ट्र वर्साय की संधि से क्षुब्ध थे और हर हाल में थोपी गई शर्तों से मुक्ति चाहते थे। इसके विपरीत फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड इत्यादि देशों के हित एक थे, क्योंकि उन्हें वर्साय की संधि से बहुत लाभ हुआ था और ये हर हाल में उसे कायम रखना चाहते थे। इंग्लैंड शुरू में इस गुट में शामिल नहीं था, लेकिन परिस्थितिवश उसे भी इस गुट में सम्मिलत होना पड़ा। रूस तब तक अछूता था, दोनों गुट उसे संदेह की नजरों से देखते थे, लेकिन परिस्थितिवश जर्मनी ने रूस की ओर हाथ बढ़ाया। इस तरह गुटबंदी से सम्पूर्ण यूरोप का माहौल विषाक्त हो गया था। विषाक्त माहौल में शंका के लिए हर छोटी बात महत्वपूर्ण थी।

हथियारबंदी :

गुटबंदी और संशय के माहौल में प्रत्येक राष्ट्र अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे थे। परिणामस्वरूप सशस्त्रीकरण को बढ़ावा मिला। ब्रिटिश सरकार, जो निःशस्त्रीकरण का उदाहरण पेश करना चाहती थी, के वित्त मंत्री चेम्बरलेन ने मार्च 1937 में घोषणा की कि प्रतिरक्षा व्यय की पूर्त्ति अब केवल कर लगाकर नहीं की जाएगी। उसने इस प्रयोजन के लिए चालीस करोड़ पौंड का ऋण लेने तथा पाँच वर्ष की अवधि में प्रतिरक्षा पर डेढ़ अरब पौंड व्यय करने का प्रस्ताव किया। प्रधानमंत्री बॉल्डविन ने इन प्रस्तावों का समर्थन यह कह कर किया था कि उनका उद्देश्य आक्रमण को रोकना है। प्रत्येक देश का रक्षा बजट बढ़ रहा था और नए-नए हथियारों से प्रत्येक राष्ट्र अपनी सेना को सुसज्जित कर रहा था। नौसेना और वायु सेना पर जोर दिया जाने लगा था। इस सैनिक तैयारी ने असुरक्षा की भावना का संचार किया।

Failure of League of Nations

Inadequate and deceptive power of League of Nations and lack of cooperation among the member countries became cause of the Second World War. The League of Nation easily settled the petty disputes of small states but he felt helpless to deal with big states and finally it did not get support of capable and powerful countries. At the moment of any decisive action, the powerful countries did not cooperate. Thus, the failure of League of Nation, paved the way for the second world war.

World-wide Economic Recession

After the world war, a world wide economic recession appeared in the period of 1929-30. No solution on was seen in the near fulure. In 1931, it reached its culmination. Non-payment of loans to Europe by USA in the winter season of 1929 was the first international expression of this calamity. After that, the whole world suffered a depression in purchasing powers Consequently, there was a tremendous fall in prices. The figure of unemployment increased by leaps and bound in every country.

The Emergence of New ideologies (Hitler and Mussolini)

Hitler

In Europe, Nazism and Fascism emerged after the first world war. On the basis of these principles, the Nazi Government was formed in Germany under the leadership fo Hitler and the government in Italy was formed under the leadership of Mussolini on the principle of Fascism. Both these principles emphasised on the power and honour of nation and so both these nations started to attack other nations that created the situation of world war. For the prude of Nation both the countries made basis to imperialist covetousness.

राष्ट्रसंघ की असफलता :

राष्ट्रसंघ की भ्रामक शक्तियाँ और सदस्य राष्ट्रों के सहयोग का अभाव भी द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बना। राष्ट्रसंघ ने छोटे-छोटे राज्यों के मामलों को आसानी से सुलझा दिया, लेकिन बड़े राष्ट्रों के मामले में उसने अपने को अक्षम पाया और अंततः उसको इस कार्य के लिए समर्थ और शक्तिशाली राष्ट्रों का सहयोग नहीं मिला। हर निर्णायक कार्रवाई की घड़ी में शक्तिशाली राष्ट्रों ने अपने निहित स्वार्थ में हाथ खड़ा कर लिए। इस प्रकार राष्ट्रसंघ की असफलता ने द्वितीय विश्वयुद्ध का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

विश्वव्यापी आर्थिक मंदी :

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1929-30 के काल में विश्वव्यापी आर्थिक मंदी आया। इससे उद्धार का कोई रास्ता निकट भविष्य में दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। 1931 में यह अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। 1929 के शरद काल में अमेरिका से यूरोप को ऋण मिलना बिल्कुल बंद हो जाना इस संकट की प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अभिव्यक्ति थी। इसके बाद ही सारे विश्व में क्रय-शक्ति का ह्रास हुआ जिसके परिणामस्वरूप कीमतों में व्यापक और अनिष्टकारी गिरावट हुई। बेकारी के आँकड़े हर देश में दिन-दूने, रात-चौगुने बढ़ गये।

नवीन विचारधाराओं (हिटलर एवं मुसोलिनी) का उदय :

हिटलर

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में नाजीवाद और फासीवाद का उदय हुआ। इन नए सिद्धान्तों के आधार पर जर्मनी में हिटलर के नेतृत्व में नाजी सरकार बनी और फासीवाद के सिद्धांत के आधार पर मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली में सरकार बनी। ये दोनों सिद्धान्त राष्ट्र के गौरव और शक्ति पर बल देते थे। फलतः इन दोनों राष्ट्रों ने दूसरे राष्ट्रों पर आक्रमण करना शुरू किया जिससे विश्वयुद्ध की परिस्थितियां पैदा हुईं। इन दोनों राष्ट्रों ने राष्ट्रीय गौरव के लिए साम्राज्यवादी लिप्सा को ही आधार बनाया। जापान, जर्मनी और इटली अपने साम्राज्य का विस्तार कर अपनी आर्थिक परेशानियों को दूर करना

Japan, Germany and Italy wanted to resolve then economic difficulties by expanding their empires as well the pride of nation.

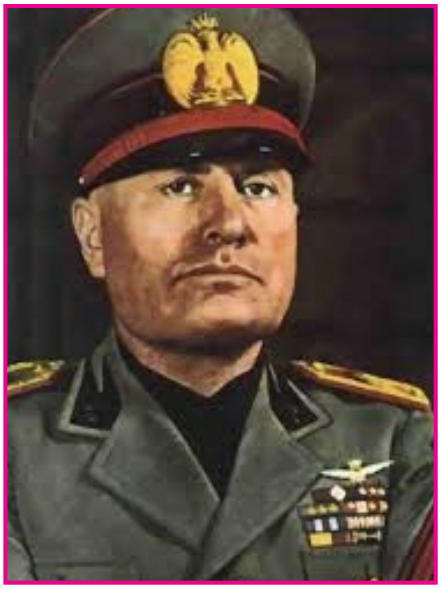
Mussolini

By the end of 19th Century Japan had emerged as a powerful and industrial country and got regional gains after the First World War. And for that colonies were required and so it began to make great efforts for the expansion of the empire. In 1931, it invaded China and captured Manchuria. The aggressive campaign of Japan continued and with the support of Germany and Italy, it won Burma in the Second World War and started planning to attack India. Thus, the imperialist ambition of Germany, Italy and Japan became cause of the Second World War.

The Appeasement Policy

The appeasement policy of England also was to a great extent responsible for the Second World War. The Capitalist Western Countries looked down upon socialist Russia. They wanted that Hitler should attack Russia, so that both the countries become weaker and then they would destroy them. Initially the western nations accepted Hitler's demand but when they felt that the demand and ambition of Hitler was on increase, they withdrew support. But it was too late by then. In course of appeasement, Munich agreement was the last step. Hitler wanted to occupy Sudetenland. For this, Hitler and Mussolini met in Munich in 1938, where England and France recognized Hitler's possession on Sudetenland. In 1939, Hitler captured the whole Czechoslovakia and later on he demanded Danzing port and Polish Corridor from Poland. Poland didn't agree so Germany attacked Poland.

चाहते थे और अपने राष्ट्र का नाम गौरवान्वित करना चाहते थे।

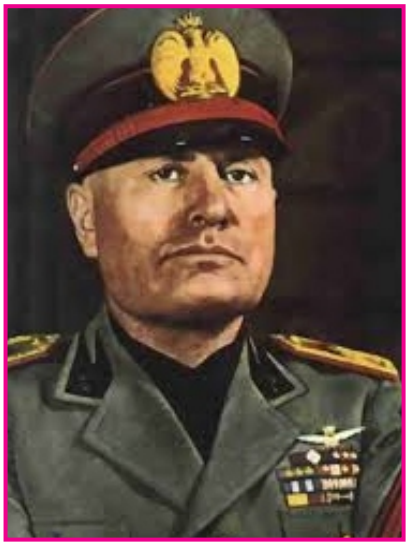
मुसोलिनी

जापान 19 वीं शताब्दी के अंत तक एक शक्तिशाली और औद्योगिक देश बन चुका था। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात उसे भी प्रादेशिक लाभ हुआ। लेकिन उसके लिए उपनिवेश निहायत जरूरी हो गया था जिसके कारण वह अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए कोशिश करने लगा। 1931 ई० में उसने चीन पर आक्रमण कर उसके एक क्षेत्र मंचूरिया पर कब्जा कर लिया। उसका यह आक्रमणकारी अभियान चलता रहा और वह जर्मनी एवं इटली का सहयोगी बनकर द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्मा इत्यादि को जीतता हुआ भारत पर भी आक्रमण करने की योजना बनाने लगा। इस तरह जर्मनी, इटली और जापान की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बनी।

तुष्टिकरण की नीति :

इंग्लैंड की तुष्टिकरण की नीति भी बहुत हद तक द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेवार थी। पश्चिमी पूँजीवादी देश साम्यवादी रूस को नफरत की दृष्टि से देखते थे। वे चाहते थे कि हिटलर किसी भी तरह सोवियत रूस पर हमला कर दे, जिससे दोनों कमजोर हो जाएँ और तब वे हस्तक्षेप करके दोनों शक्ति को बर्बाद कर देंगे। इसलिए शुरू में पश्चिम के राष्ट्र हिटलर की माँगों को स्वीकार करते रहे और जब इन लोगों ने देखा कि हिटलर की माँग और महत्वाकांक्षा बढ़ती जा रही है तो अपना हाथ खींचना शुरू किया। तब तक देर हो चुकी थी। तुष्टिकरण की दिशा में अंतिम कदम म्युनिख समझौता था। हिटलर सुडेटनलैंड पर अधिकार करना चाहता था। इसके लिए 1938 ई० में म्युनिख में हिटलर और मुसोलिनी मिले जहाँ इंग्लैण्ड और फ्रांस ने हिटलर के सुडेटनलैंड पर अधिकार को मान्यता दे दी। 1939 में हिटलर ने पूरे चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसने डेंजिंग बन्दरगाह और पोलिश गलियारे की मांग पोलैंड से की। पोलैंड इसके लिए तैयार नहीं हुआ, जिसकी वजह से जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया।

The Beginning of the War and the sequence of events

The war started on 1st September, 1939 with German invasion of Poland. Two days later on 3rd September, 1939, Britain and France declared war against Germany. From security point of view, Russia wanted possession of three Baltic States; Estonia, Latvia and Lithuania. Foreign Ministers of all three countries were called in Moscow and all of them signed a treaty of mutual cooperation with Moscow. Through this treaty, Russia got permission to keep its trump in all the three states and Russia, in return promised to maintain the territorial integrity of these states.

Russia, for its security, felt it necessary to keep its influence on Finland. On this issue, a dialogue took place between both the countries but in the meantime the talks dissolved and Soviet (Russia) attacked Finland. Finland surrendered on 12th March, 1940. On the same day Russia and Finland made an agreement that allowed Soviet Russia all facilities that she viewed necessary for its security.

The Defeat of Norway, Denmark, Holland, Belgium and France by Germany;

On April, 1940 Germany defeated Norway and Denmark, and its troops started marching ahead and till June, 1940 took Belgium and France under its possession.

France surrendered on 22nd June, 1940. In the meantime, Italy had entered the war from the German side.

Aggression on Russia

Germany invaded Russia on 22nd June, 1941 and captured a large territory. German troops marched towards Moscow but Russia gave a very strong resistance that compelled Germany to retreat. Germany did not succeed in capturing Moscow. So, it attacked the southern part of Russia, and in August 1942 German troops reached near Stalingrad. The fight continued for about five months. Stalin reorganised his security system in August-September and motivated Russian army and Russian citizens with fresh enthusiasm to stop the enemy.

युद्ध का आरंभ और घटनाक्रम :

1 सितम्बर, 1939 को जैसे ही जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया, इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया। ब्रिटेन और फ्रांस ने दो दिन बाद 3 सितम्बर, 1939 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

रूस अपनी सुरक्षा के लिए बाल्टिक के तीन राज्यों एस्टोनिया, लैटविया और लिथुआनिया पर अपना प्रभाव जमाना चाहता था। सितम्बर–अक्टूबर के महीनों में उपर्युक्त तीनों देशों के विदेश मंत्रियों को मॉस्को बुलाया गया और तीनों विदेश मंत्रियों ने सोवियत संघ से पारस्परिक सहयोग की संधि कर ली। इस संधि के अनुसार सोवियत संघ को उपर्युक्त तीनों राज्यों में सेना रखने की अनुमति मिल गई। बदले में सोवियत संघ ने इन राज्यों की प्रादेशिक अखंडता को बनाए रखने का वादा किया।

फिनलैंड पर अपना प्रभाव रखना रूस अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक समझता था। रूस और फिनलैंड में इस विषय पर वार्ता भी चल रही थी, लेकिन इसी बीच दोनों में वार्ता भंग हो गई और सोवियत संघ ने फिनलैंड पर आक्रमण कर दिया। 12 मार्च, 1940 को फिनलैंड ने आत्मसमर्पण कर दिया। उसी दिन फिनलैंड और सोवियत संघ के बीच एक संधि हुई जिसके अनुसार सोवियत रूस को वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हो गई, जिसको वह अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक समझता था।

नॉर्वे, डेनमार्क, हॉलैंड, बेल्जियम और फ्रांस पर विजय :

9 अप्रैल, 1940 को जर्मनी ने नॉर्वे और डेनमार्क को हराया और उनकी सेना आगे बढ़ने लगी। जून, 1940 तक बेल्जियम और फ्रांस पर कब्जा जमा लिया। 22 जून, 1940 को फ्रांस ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसी बीच इटली भी जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया था।

रूस पर आक्रमण

22 जून, 1941 को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया और एक बड़े भू–भाग को अपने कब्जे में कर लिया। साथ ही साथ पुनः जर्मन सेना मॉस्को की ओर बढ़ने लगी, मगर रूस ने इसका डटकर मुकाबला किया और जर्मनी को पीछे हटना पड़ा। जब जर्मनी को मॉस्को क्षेत्र अपनाने में विफलता मिली तो उसने रूस के दक्षिणी भाग पर आक्रमण किया। अगस्त 1942

In the meantime Winston Churchill, the British Prime Minister visited Russia and described the plan of Allied countries to Stalin and got his acceptance. Then the Russian army started a very strong counter-attack against Germany. Finally the Russian army got success in defeating German army in February. In February, 1943, thousands of German army and officers surrendered themselves.

Japan's Invasion on Pearl Harbour

Japan's Invasion on Pearl Harbour

On 7th September, 1941, Japan made a severe attack on American naval base of Pearl Harbour located in Hawaii island. Due to this attack The American fleet in the Pacific-ocean was completely destroyed due to this attack and so America declared war against Japan on 8th December 1941. After that Germany and Italy declared war against America. After America entering the war, all countries of American continent joined the war against Germany, Italy and Japan (The Axis Power).

The Second front

In Europe, after 1942, a fierce battle took place between Germany and Soviet Russia. Germany was badly defeated in the battle. In the defeat of Germany, the role of the second front was very important. The second front comprised America, England, Russia and France. They all endeavoured collectively and defeated German troops on 6th June, 1944. Italy had already met with defeat and made a pact with allied countries. Finally, Germany surrendered on 7th May, 1945.

ई० में जर्मन सेना स्टालिनग्राद के निकट तक पहुँच गई। यह युद्ध करीब 5 महीनों तक चला। अगस्त-सितम्बर में स्टालिन ने अपनी सुरक्षा व्यवस्था का पुनर्गठन किया और रूसी सेना एवं नागरिकों को नए उत्साह से शत्रु को रोकने की प्रेरणा दी। आगे ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने रूस जाकर स्टालिन को मित्र राष्ट्रों की योजना समझाई और इसकी स्वीकृति प्राप्त कर ली। तदुपरांत रूसी सेनाओं ने जर्मनी के विरुद्ध प्रबल प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया। अंततः फरवरी में रूस की सेना जर्मनी को हराने में सफल हुई। फरवरी, 1943 ई० में हजारों जर्मन अफसर और सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

जापान द्वारा पर्ल हार्बर पर आक्रमण

जापान ने 7 दिसम्बर, 1941 को हवाई द्वीप स्थित पर्ल हार्बर के अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर जबर्दस्त हमला किया। इसके कारण अमेरिका का प्रशान्त महासागर स्थित बेड़ा जो वहाँ रखा गया था तहस-नहस हो गया। जिसकी वजह से अमेरिका ने 8 दिसम्बर, 1941 को जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। उसके बाद जर्मनी और इटली ने अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। अमेरिका के युद्ध में शामिल होने के बाद अमेरिकी महाद्वीप के सारे देश जर्मनी, इटली और जापान (धुरी राष्ट्र) के विरुद्ध युद्ध में शामिल हो गये।

अमेरिका के पर्ल हॉर्बर बन्दरगाह पर जापानी आक्रमण का दृश्य

दूसरा मोर्चा :

यूरोप में 1942 ई० के बाद जर्मनी और सोवियत संघ के बीच घमासान लड़ाई हुई। इसमें जर्मनी बुरी तरह पराजित हुआ। जर्मनी के इस पराजय में द्वितीय मोर्चा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। दूसरे मोर्चे में अमेरिका, इंग्लैंड, रूस और फ्रांस आते थे। इन सब ने मिलकर जर्मनी को पराजित करने का प्रयास किया और 6 जून 1944 को जर्मन सेना परास्त हो गयी। इसके पहले ही इटली पूर्णतः पराजित हो कर मित्र राष्ट्रों से संधि कर चुका था। अंततः 07 मई, 1945

The allied nations made a fierce attack on Japan in 1945. America dropped atom bomb, most deadly modern weapon, on Hiroshima in Japan on 6th August, 1945. Consequently, Hiroshima was completely destroyed. America dropped second atom bomb on Nagasaki town of Japan on 9th August, 1945 and completely destroyed it. Japan had no option but to surrender. So, they surrendered on 2nd September, 1945 and thus, the Second World War came to an end.

Europe at time of Second World War

The Consequences of the Second World War

The Loss of life and wealth

The war caused great loss of life and wealth. It was the most devastating war in the history of mankind. The Fascist had converted a very big territory of Europe into graveyard. The Germans killed about 60 lakhs Jews and lakhs of people were killed in the torture camp. Assessment of loss in Japan due to Atom bomb was not possible. There is no example in the history about such a big loss of human lives. More than 5 crore people were killed in the Second World War. This included about 2.2 crores military and more than 2.8 crores civilians. About 1.2 crore people were killed in the torture-camp by tyrannical Fascists. 60 lakh people of Poland lost their lives, that was about 20 percent population of the country. The loss of Soviet Russia was most terrifying. About 2 crore people lost their lives that was about tenth part of the total their population. About 60 lakh Germans were killed, which was tenth part of their population.

The loss of physical resources, apart from human loss ,was extremely huge. Many ancient towns were completely destroyed. The financial loss of the Second World War was very substantial, presumably it was about 13 trillion, 84 billion and 90 crore dollars.

ई० को जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया।

मित्र राष्ट्रों ने जुलाई, 1945 ई० में जापान पर भीषण आक्रमण किया। 6 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने युद्ध के दौरान अत्यधिक विकसित हथियार एटम बम जापान के हिरोशिमा नामक शहर पर गिराया। फलतः हिरोशिमा का नामोनिशान मिट गया। दूसरा एटम बम 9 अगस्त, 1945 को नागासाकी शहर पर गिराया गया और नागासाकी भी नेस्तनाबूद हो गया। जापान के सामने आत्मसमर्पण के सिवा कोई विकल्प नहीं था और जापान ने 2 सितम्बर 1945 को आत्मसमर्पण कर दिया, इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यूरोप

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम

धन-जन की हानि : इस युद्ध में व्यापक धन-जन की हानि हुई। यह इतिहास का सबसे विनाशकारी युद्ध था। फासीवादियों ने यूरोप के एक बड़े भाग को बहुत बड़ा कब्रिस्तान बना रखा था। लगभग 60 लाख यहूदियों का जर्मनी ने मौत के घाट उतार दिया था। लाखों लोगों की हत्या यंत्रणा शिविरों में कर दी गयी। जापान पर की गई बमबारी और इससे हुए क्षति का आकलन संभव नहीं था। इस युद्ध में जितने लोग काल कलवित हुए, उसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता। द्वितीय विश्वयुद्ध में 5 करोड़ से अधिक लोग मौत के घाट उतार दिए गए। इसमें लगभग 2.2 करोड़ सैनिक और 2.8 करोड़ से अधिक नागरिक शामिल थे। लगभग 1.2 करोड़ लोग यंत्रणा शिविरों या फासीवादियों के आतंक के कारण मारे गये। पोलैंड के 60 लाख लोग मारे गये जो कुल जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत थी। इससे भयावह नुकसान सोवियत संघ का हुआ। उसके दो करोड़ लोग मारे गये, जो आबादी का दसवाँ हिस्सा था। जर्मनी के लगभग 60 लाख से अधिक लोग मारे गए जो आबादी का लगभग दसवाँ भाग था।

मानवीय क्षति से अलग बड़े पैमाने पर भौतिक संसाधनों का भी क्षय हुआ। अनेक प्राचीन नगर पूरी तरह नष्ट हो गये। द्वितीय विश्वयुद्ध की कुल लागत बहुत ऊँची थी, अनुमान के अनुसार यह लागत लगभग 13 खरब 84 अरब 90 करोड़ डॉलर थी।

During the Second World War, the modern weapons were developed and used for destruction. The atom bomb was the most hazardous. The USA was the first country to use atom bomb against Japan, during the Second World War. The first atom bomb was dropped in July, 1945. By then Germany had surrendered.

The End of European Superiority and Colonies

After the Second World War, the control of European nations in the Asian continent had more or less ended. India, Sri Lanka, Burma, Malaya, Indonesia, Egypt etc. got independence after the Second World War. Superiority and excellence of Europe disappeared. It was said that the sun never set in the Empire of England, but after the Second World War it started setting.

The Downfall of the power of England and rise in the power of America and Russia:

Germany, Japan and Italy were defeated in the war directly but England was indirectly defeated in the war. After the war, England was no more, the biggest power of the world. The colonies of England got freedom. The power and resource of England became limited. America and Russia with its unlimited economic resources, emerged as powerful nations in the world politics.

The Establishment of United Nations Organisation (UNO)

After the Second World War, the United Nations Organisation was established and endeavours were made to maintain peace. The Second World War brought forward two decisive centres. Peace and war development of atom bomb and making weapons as well as formation of United Nations organisation, which is still trying to maintain peace in the world.

The Formation of blocks in the world

Earlier, in the world politics, the supremacy of Britain was manifest everywhere. But after the Second World War, the world got divided into capitalist and socialist blocks. America was leading the capitalist block while Russia was the leader of the socialist block. A third block emerged as an organisation of non-aligned countries. They were primarily newly independent and developing nations. The character of capitalist nations and their imperialistic attitudes changed. Now they avoided establishing colonies and focused on the economic gains from the colonial countries. Thus, the character of imperialism also changed.

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान तबाही के लिए नए-नए हथियारों का विकास और उपयोग हुआ। इनमें सबसे भयानक था-परमाणु बम । परमाणु बम का सबसे पहले इस्तेमाल संयुक्त राज्य अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान के खिलाफ किया। परमाणु बम का पहला परीक्षण जुलाई 1945 में किया गया। जर्मनी तब तक आत्मसमर्पण कर चुका था।

यूरोपीय श्रेष्ठता और उपनिवेशों का अंत - द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एशिया महाद्वीप से यूरोपीय राष्ट्रों की प्रभुता लगभग समाप्त हो गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत, श्रीलंका, बर्मा, मलाया, हिंदेशिया, मिस्र इत्यादि ने स्वतंत्रता पाई। यूरोपीय श्रेष्ठता का भी अंत हुआ। कहा जाता है कि इंग्लैंड के राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता था, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से वह डूबने लगा।

इंग्लैंड की शक्ति का ह्रास और रूस तथा अमेरिका की शक्ति में वृद्धि - प्रत्यक्ष रूप से तो युद्ध में जर्मनी, जापान और इटली की हार हुई थी, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में इंग्लैंड की भी पराजय हुई। युद्ध के बाद इंग्लैंड विश्व की सबसे बड़ी शक्ति नहीं रह गया। इंग्लैंड के उपनिवेश मुक्त हो गए, इंग्लैंड की शक्ति और संसाधन सीमित हो गए और इसके बदले में अमेरिका और रूस अपनी असीम आर्थिक संसाधनों के साथ विश्व की राजनीति में शक्तिशाली देश के रूप में उभरे।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना - द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण कर विश्व शांति को कायम करने की चेष्टा गई की। द्वितीय विश्वयुद्ध शांति और अशांति के दो निर्णायक केन्द्र परमाणु बमों का विकास व शस्त्रीकरण और संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना को सामने लाया, जो आज भी सम्पूर्ण विश्व को नियंत्रित निर्देशित कर रहे हैं।

विश्व में गुटों का निर्माण - पहले विश्व की राजनीति में इंग्लैंड छाया हुआ था, लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व साम्यवादी और पूँजीवादी खेमे में बँट गया। साम्यवादी खेमा का नेतृत्व सोवियत रूस कर रहा था, तो पूँजीवादी खेमा का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा था। एक गुटनिरपेक्ष राज्यों के संघ के रूप में तीसरा खेमा सामने आया, यह मूलत: नवोदित स्वतंत्र और विकासशील राष्ट्र थे। पूँजीवादी राष्ट्र और उनकी साम्राज्यवादी मंशा का स्वरूप भी बदल गया। अब पूँजीवादी राष्ट्र सीधे-सीधे उपनिवेशों की स्थापना से बचने लगे और औपनिवेशिक देशों के आर्थिक तंत्र तक अपने को केन्द्रित करने लगे। इस प्रकार साम्राज्यवाद का भी स्वरूप बदला।

EXERCISE

I. Objective questions:

Write the symbolic letters (a, b, c, d) of the correct answers:

1. In which year did the First World War begin?
   a. 1941 b. 1952 c. 1950 d. 1914

2. Who was defeated in the First World War?
   a. America b. Germany c. Russia d. England

3. Which country left the war in 1917?
   a. Russia b. England c. America d. Germany

4. The map of which continent was changed due to Versailles Treaty?
   a. Europe b. Australia c. America d. Russia

5. Triple Alliance comprised
   a. France, Britain and Japan b. France, Germany and Austria
   c. Germany, Austria and Italy d. England, America and Russia

6. When did the Second World War begin?
   a. 1939 b. 1941 c. 1936 d. 1938

7. Which country is credited to defeat Germany?
   a. France b. Russia c. China d. England

8. Which country was defeated in the Second World War?
   a. China b. Japan c. Germany d. Italy

9. Where was the first atom bomb dropped in the Second World War?
   a. On Hiroshima b. On Nagasaki
   c. On Paris d. OnLondon

10. When did the Second World War end?
    a. 1939 b. 1941 c. 1945 d. 1938

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ आदि) लिखें।

1. प्रथम विश्वयुद्ध कब आरंभ हुआ?
   (क) 1941 ई० (ख) 1952 ई०
   (ग) 1950 ई० (घ) 1914 ई०
2. प्रथम विश्वयुद्ध में किसकी हार हुई?
   (क) अमेरिका की (ख) जर्मनी की
   (ग) रूस की (घ) इंग्लैंड की
3. 1917 ई० में कौन देश प्रथम विश्व युद्ध से अलग हो गया?
   (क) रूस (ख) इंग्लैंड
   (ग) अमेरिका (घ) जर्मनी
4. वर्साय की संधि के फलस्वरूप इनमें किस महादेश का मानचित्र बदल गया?
   (क) यूरोप का (ख) ऑस्ट्रेलिया का
   (ग) अमेरिका का (घ) रूस का
5. त्रिगुट समझौते में शामिल थे-
   (क) फ्रांस ब्रिटेन और जापान (ग) जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली
   (घ) इंग्लैंड, अमेरिका और रूस (ख) फ्रांस, जर्मनी और ऑस्ट्रिया
6. द्वितीय विश्वयुद्ध कब आरंभ हुआ?
   (क) 1939 ई० में (ख) 1941 ई० में
   (ग) 1936 ई० में (घ) 1938 ई० में
7. जर्मनी को पराजित करने का श्रेय किस देश को है?
   (क) फ्रांस को (ख) रूस को
   (ग) चीन को (घ) इंग्लैंड को
8. द्वितीय विश्वयुद्ध में कौन-सा देश पराजित हुआ?
   (क) चीन (ख) जापान
   (ग) जर्मनी (घ) इटली
9. द्वितीय विश्वयुद्ध में पहला एटम बम कहाँ गिराया गया था?
   (क) हिरोशिमा पर (ख) नागासाकी पर
   (ग) पेरिस पर (घ) लन्दन पर
10. द्वितीय विश्वयुद्ध का अन्त कब हुआ?
    (क) 1939 ई० को (ग) 1945 ई० को
    (ख) 1941 ई० को (घ) 1938 ई० को

II. Fill up the blanks with suitable words:

1. The _____ empires declined as a result of the Second World War.
2. German aggression on _____ was the immediate trigger of the Second World War.
3. _____ was the first to surrender among the Axis Power.
4. The conditions of the _____ treaty was responsible for the second world war.
5. America dropped the second atom bomb on _____ sea port of Japan.
6. The seed of the Second World War was hidden in the _____ treaty.
7. After the First World War _____ emerged as a world power.
8. After the First World war the Allies signed _____ treaty with Germany.
9. The credit of formation of League of Nations goes to the American President _____.
10. The League of Nation was established in _____.

III. Short Answer questions:

1. Mention any four causes responsible for the First World War.
2. Which were the countries included in the Triple Alliance and Triple Entente? What was the objective of their formation?
3. What was the immediate cause of the First World War?
4. What is the meaning of All Slav Movement?
5. What type of cause was radical nationalism during the First World War?

II. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. द्वितीय विश्वयुद्ध के फलस्वरूप ..... साम्राज्यों का पतन हुआ।
2. जर्मनी का ..... पर आक्रमण द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण था।
3. धुरी राष्ट्रों में ..... ने सबसे पहले आत्मसमर्पण किया।
4. ..... की संधि की शर्तें द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए उत्तरदायी थी।
5. अमेरिका ने दूसरा एटम बम जापान के ..... बन्दरगाह पर गिराया था।
6. ..... की संधि में ही द्वितीय विश्व युद्ध के बीज निहित थे।
7. प्रथम विश्व युद्ध के बाद ..... एक विश्वशक्ति बनकर उभरा।
8. प्रथम विश्व युद्ध के बाद मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी के साथ ..... की संधि की।
9. राष्ट्रसंघ की स्थापना का श्रेय अमेरिका के राष्ट्रपति ..... को दिया जाता है।
10. राष्ट्रसंघ की स्थापना ..... ई० में की गई।

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. प्रथम विश्व युद्ध के उत्तरदायी किन्हीं चार कारणों का उल्लेख करें।
2. त्रिगुट (Triple Alliance) तथा त्रिदेशीय संधि (Triple Entente) में कौन-कौन से देश शामिल थे। इन गुटों की स्थापना का उद्देश्य क्या था?
3. प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?
4. सर्वस्लाव आन्दोलन का क्या तात्पर्य है?
5. उग्र राष्ट्रीयता प्रथम विश्व युद्ध का किस प्रकार एक कारण था?

6. "The Second World War was the result of the First World War." How?
7. How was Hitler responsible for the Second World War?
8. Explain any five causes of the Second World War.
9. What is the policy of appeasement?
10. Why was the League of Nations unsuccessful?

IV. Long Answering qQuestions:

1. What was the cause of the First World War? Write in brief.
2. What was the result of the First World War?
3. Was the Versailles Treaty an imposed treaty?
4. How did the system of Bismarck pave the way for the First World War?
5. What were the causes of the Second World War? Write in detail.
6. Explain the outcomes of the Second World War.

6. ''द्वितीय विश्वयुद्ध प्रथम विश्वयुद्ध की ही परिणति थी।'' कैसे?

7. द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए हिटलर कहाँ तक उत्तरदायी था?

8. द्वितीय विश्वयुद्ध के किन्हीं पाँच परिणामों का उल्लेख करें।

9. तुष्टिकरण की नीति क्या है?

10. राष्ट्रसंघ क्यों असफल रहा?

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. प्रथम विश्व युद्ध के क्या कारण थे? संक्षेप में लिखें।

2. प्रथम विश्व युद्ध के क्या परिणाम हुए?

3. क्या वर्साय संधि एक आरोपित संधि थी?

4. बिस्मार्क की व्यवस्था ने प्रथम विश्वयुद्ध का मार्ग किस तरह प्रशस्त किया ?

5. द्वितीय विश्वयुद्ध के क्या कारण थे? विस्तारपूर्वक लिखें।

6. द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों का उल्लेख करें

CHAPTER- 5

NAZISM

Many important politcal changes occurred in Europe amidst the two world wars but the rise of dictators was the most destructive among them. The rise of Fascism in Italy under the leadership of Mussolini and Nazism in Germany under the leadership of Adolf Hitler are the two examples. Nazism is an aggressive ideology according to which the supremacy of the nation is most significant. The sacrifice of individual freedom for the sake of the state and total control over economy by the state were mentioned in its ideology. Efforts were made to avenge the injustice done to Germany and restore its honour and pride. The following are the causes of Hitler's rise and the rise of Nazi movement.

1. Establishment of democracy

Emperor Kaiser Wilhelm II was unable to control the devastating situation caused after the defeat of Germany in the First World War (1914-18). So, in this odd situation he resigned and escaped to Holland on 10th November, 1918. In this situation, the Socialist Democratic Party assumed power and established democracy in place of monarchy and nominated its leader Fredrick Ebert,as Chancellor of Germany. This new government signed the war closing treaty on 11th November, 1918. Afterwards the Constituent Assembly was formed and its first meeting was held on 5th February, 1919 at Weimar. That is why this constitution is known as Weimar Constitution or Weimar Republic. The constitution was implemented on 10th August, 1919. According to the Weimar Constitution, federal system of government was formed and emergency power was invested in President.

Contemporary situation in Germany:

1. Establishment of democracy
2. Humiliating treaty of Versailles
3. Economic crisis
4. Severe conditions for compensation
5. Rising fear of communism

इकाई–5

नाजीवाद

P4U7M7

यूरोप में दो महायुद्धों के बीच महत्वपूर्ण राजनैतिक परिवर्तन आए, जिनमें सबसे विनाशकारी परिवर्तन तानाशाहों का उत्कर्ष था। इटली में बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद तथा एडोल्फ हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी में नाजीवाद का उत्कर्ष ऐसे ही दो उदाहरण हैं। नाजीवाद एक आक्रामक विचारधारा थी जिसमें राष्ट्र की सर्वोपरिता को सबसे महत्वपूर्ण माना गया। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राज्य हित के आगे त्यागने और अर्थव्यवस्था पर राज्य के पूर्ण नियंत्रण की बात कही गई एवं जर्मनी के विरुद्ध हुए अन्याय का बदला लेने और जर्मनी के सम्मान और गौरव को पुनर्स्थापित करने के उपाए किए गए। हिटलर के उत्कर्ष और उसके नेतृत्व में नात्सी क्रांति के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :-

1. गणतंत्र की स्थापना :

प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) में जर्मनी की पराजय से उत्पन्न अनियंत्रित स्थिति को संभालने में शासक कैसर विलियम द्वितीय असमर्थ था। अतः प्रतिकूल स्थिति पाकर उन्होंने त्यागपत्र दे दिया और 10 नवम्बर, 1918 ई० को हॉलैण्ड भाग गया। ऐसी अवस्था में समाजवादी प्रजातांत्रिक दल ने सत्ता अपने हाथ में लेकर एकतंत्र के स्थान पर जर्मनी में गणतंत्र की स्थापना की और अपने नेता फ्रेडरिक एबर्ट को चांसलर बनाया। 11 नवम्बर, 1918 ई० को इस नई रकार ने युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर कर दिया। इसके बाद संविधान सभा का चुनाव हुआ तथा इसकी प्रथम बैठक 5 फरवरी, 1919 ई० को वाइमर नामक स्थान पर हुई इसलिए यह विधान वाइमर संविधान या वाइमर गणतंत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह संविधान 10 अगस्त, 1919 ई० को लागू हुआ। वाइमर संविधान के अनुसार जर्मनी में संघीय शासन व्यवस्था की स्थापना की गई तथा राष्ट्रपति को आपातकालीन शक्तियाँ प्रदान की गई

जर्मनी की तात्कालिक स्थिति

1. गणतंत्र की स्थापना
2. वर्साय की अपमानजनक संधि
3. आर्थिक संकट
4. क्षतिपूर्ति की कठोर शर्तें
5. साम्यवाद का बढ़ता खतरा

The emergency power of the President in Indian constitution is taken from Weimar. But the new Weimar democracy failed in controlling the post war situation in Germany and the people got furious.

2. Humiliating treaty of Versailles

After the First World War, Germany was forced to sign the humiliating treaty of Versailles on 28th June, 1919. In fact, it was a harsh and imposed treaty.

By this treaty Germany was divided into many parts. The area Alsace Lorraine was returned to France and the 'Saar' coal mines situated in German region was handed over to France for 15 years. Now the area came under control of the League of Nations. It was decided to demilitarise the Rhine river valley region. Germany was also demilitarised which was not right for a dignified nation like Germany. So Hitler tried to gain privilege through the dissatisfaction aroused by the peace treaty at Versailles.

3. Economic Crisis

A this time Germany was facing adverse economic crisis. It had to face financial damage in the war. After the war, a great many factories were closed and unemployment was at its extreme. In this adverse economic crisis, a great amount was imposed on Germany as compensation. Even the agricultural condition was not very good. Its industrial cities were snatched by the Allied countries and all the German trades were paralysed. Whole of Germany was thus trapped in mismanagement and dissatisfaction which formed the background of Hitler's rise.

4. Severe conditions for compensation

Germany was compelled to pay compensation amounting to 6 billion and 10 crore pound. But it was impossible for Germany to pay such a great amount. The Allied countries always pressurized Germany to pay the amount which was not a practical measure.

भारतीय संविधान में राष्ट्रपति के आपातकालीन शक्ति का स्रोत वाइमर संविधान से ही माना जाता है। परन्तु नया वाइमर गणतंत्र युद्धोपरांत जर्मनी की स्थिति संभालने में असफल रहा, फलतः जनता में काफी आक्रोश था।

2. वर्साय की अपमानजनक संधि :

प्रथम विश्व युद्ध के बाद 28 जून, 1919 ई० में जर्मनी की नई गणतंत्र को अपमानजनक वर्साय संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया। वस्तुतः यह संधि काफी कठोर एवं आरोपित थी।

इस संधि द्वारा जर्मनी का अंग भंग कर दिया गया। आल्सेस लॉरैन का क्षेत्र फ्रांस को लौटा दिया गया तथा जर्मन क्षेत्र में स्थित 'सार' नामक कोयले की खान को 15 वर्षों के लिए फ्रांस को दे दिया गया और उस क्षेत्र का शासन राष्ट्रसंघ को सौंप दिया गया। राइन नदी घाटी के क्षेत्र को सेना रहित करने का निर्णय किया गया। सैनिक दृष्टिकोण से भी जर्मनी को पंगु बना दिया गया जो जर्मनी जैसे स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए उचित नहीं था। इस प्रकार वर्साय संधि से उत्पन्न असंतोष का भरपूर फायदा हिटलर ने उठाया।

3. आर्थिक संकट :

इस समय जर्मन गणतंत्र के सामने भीषण समस्या आर्थिक संकट की थी। युद्ध में जर्मनी की काफी वित्तीय क्षति हुई थी। युद्धोपरांत अनेक कल-कारखाने बन्द हो गये और बेरोजगारी की समस्या चरम पर पहुँच गई। आर्थिक दृष्टि से खस्ताहाल जर्मनी पर वर्साय-संधि द्वारा क्षतिपूर्ति की एक बहुत बड़ी राशि लाद दी गई। इस समय यहाँ कृषि की दशा भी अच्छी नहीं थी। उसके औद्योगिक नगर मित्र राष्ट्रों ने छीन लिए थे और समस्त जर्मन व्यापार नष्ट हो गया था। अतः सारे जर्मनी में अव्यवस्था एवं असंतोष का वातावरण मौजूद था जिसने हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

4. क्षतिपूर्ति की कठोर शर्तें :

प्रथम विश्व युद्ध के बाद क्षतिपूर्ति के रूप में जर्मनी से वसूल किये जाने वाली राशि 6 अरब 10 करोड़ पौंड निश्चित की गई थी। परन्तु इतनी बड़ी राशि का भुगतान करना जर्मनी के लिए असंभव था। इधर मित्र राष्ट्रों द्वारा भुगतान के लिए हमेशा दबाव बनाया जाता रहा जो व्यावहारिक कदम नहीं था।

5. Increasing crisis of Communism

The Russian revolution, 1917 affected Germany. Communist organisations were also formed over here. The Communists tried to uproot the Weimar Republic and establish the supremacy of the down-trodden class. So the industrialists, capitalists and landlords were afraid of them. Hitler raised voice against communism and gained sympathy of the rich persons of the society.

So it can be said that the situation in Germany was very miserable after the First World War. There was disappointment with the leadership and they found a luminous leader like Hitler who had a magical voice and charismatic personality. He promised for affluence and glorification of the nation. The German being allured by his words, handed over their future in his hands. The background of Hitler's rise was thus formed.

Hitler and his work

Adolf Hitler was born on 20th April, 1889 in Braunau in Austria in an ordinary family. He could not be brought up in a proper way. He wanted to be a painter in his childhood, but his aim could not be fulfilled. So he got a job in Army. In the First World War (1914-18) he fought by the side of Germany and gained 'Iron Cross' for his bravery. But he became disappointed after signing of the Versailles treaty by Germany. After the war, he became the member of 'German Workers' party.' In 1920 this party was renamed 'National Socialist German Workers' Party.' Gradually Hitler became its leader.

Hitler

5. साम्यवाद का बढ़ता संकट :

1917 की रूसी क्रांति का प्रभाव जर्मनी पर पड़ा। यहाँ भी साम्यवादी संगठनों का निर्माण हुआ। साम्यवादियों ने वाइमर गणतंत्र को उखाड़ने एवं सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद लाने का प्रयास किया। अत: जर्मनी का उद्योगपति, पूँजीपति एवं जमींदार वर्ग काफी भयभीत हो गया। इस प्रकार, हिटलर ने साम्यवाद विरोधी नारा देकर समाज के धनी वर्गों की सहानुभूति भी अपने पक्ष में कर लिया।

अत: कहा जा सकता है कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी की तात्कालिक स्थिति काफी दयनीय थी। चारों ओर निराशा एवं अराजकता का वातावरण था। जर्मन जनता वैकल्पिक नेतृत्व के बारे में सोच ही रही थी कि उसे हिटलर जैसा तेजस्वी नेता मिला, जिसकी आवाज में जादू था और जिसके करिश्माई व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था। जर्मन जनता से उसने खुशहाली का वादा किया तथा राष्ट्र के गौरव की पुनर्स्थापना का वचन दिया। जर्मन जनता ने उसके शब्द जाल में फँस कर अपना भविष्य उसके हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि का निर्माण हुआ।

हिटलर एवं उसके कार्य

एडोल्फ हिटलर का जन्म 20 अप्रैल, 1889 ई० को ऑस्ट्रिया के ब्रौना नामक शहर में एक साधारण परिवार में हुआ था। उसका लालन-पालन सही तरह से नहीं हो सका। बचपन में वह चित्रकार बनना चाहता था परन्तु उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। अंतत: उसने सेना में नौकरी कर ली। प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) में वह जर्मनी की तरफ से लड़ा था और युद्ध में अभूतपूर्व वीरता के लिए उसे 'आयरन क्रॉस' प्राप्त हुआ था। परन्तु जर्मनी द्वारा विराम संधि पर हस्ताक्षर करने से उसे भारी निराशा हुई। युद्ध के बाद वह 'जर्मन वर्कर्स पार्टी' का सदस्य बना। 1920 ई० में इस पार्टी का नाम बदलकर 'नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी' रखा गया। धीरे-धीरे हिटलर इसका फ्यूहरर (नेता) बन गया।

हिटलर

Hitler gathered around him some persons like Rudolf and Goebbels who were experts in spreading rumours. Their policy was "Spread the rumour to such an extent that to seems to be true." According to the conditions of Versailles treaty France captured Ruhr, a rich industrial area of Germany. So the German raised their voice against France. Hitler was in search of such an opportunity and he together with Ludendorf rebelled against the Weimar Republic in 1923 . The rebllion failed and Hitler was arrested. In imprisonment, he wrote his famous autobiography 'Mein Kampf', in which he presented the outline of his forthcoming programme. At the end of 1924, he was released. Now he began to reorganize his party. He adopted 'Swastik' the emblem of Aryans' sacredness as a symbol of his party and organized it on military pattern. Democrats under the leadership of Gustav Stresemann started several programmes to check the increasing impact of the Nazi party. The treaty of Locarno in 1925 secured an honourable position for Germany and it got the membership of the League of Nations. The Nazi party got 32 seats in the Reichstag, the lower house of German Parliament in 1924, but the number reduced to 12 in the election held in 1928. The impact of Hitler and the Nazi party thus began to be minimum. But Hitler did not lose his courage. This time the worldwide economic recession brought the message of revival for Hitler. Germany was badly affected in world economic recession. Now the Weimar began to lose the faith of the Germans. Hitler gained a lot from this situation. He started abusing the Weimar Republic, Versailles treaty and the Jews for the misfortune of Germany. The middle class and unemployed youths were his supporters. Now the strength of the Nazi party began to rise by leaps and bounds. It got 107 seats in the election held in 1930 and 230 in 1932 but didn't get chance to form the government. Later, President Hindenburg nominated Hitler as Chancellor on January 30, 1933. As a result he assumed despotic power and announced election. He managed the system in such a way that only the members of the Nazi party could win the seats. The democracy in Germany thus fell down and the Nazi revolution started. Hitler called it the 'IIIrd Reich'. After the death of Hindenburg in 1934 the posts of the Chancellor and the president were merged. Now Hitler was all in all in Germany. He adopted the Nazi philosophy and foreign policy.

हिटलर ने अपने चारों तरफ रूडोल्फ और गोबल्स जैसे हंगामा करने वालों को इकट्ठा किया। जिसकी नीति थी- 'अफवाह को इतना फैला दो कि वह सत्य प्रतीत होने लगे।' प्रथम विश्व युद्ध के बाद संधि के तहत जर्मन प्रदेश रूर पर फ्रांस का कब्जा हो गया। जर्मन प्रदेश 'रूर' औद्योगिक रूप से काफी संपन्न था। अत: जर्मन वासियों ने फ्रांसीसी आधिपत्य का विरोध किया। हिटलर मौके के तलाश में था एवं उसने जनाक्रोश का लाभ उठाकर लूडेंडोर्फ के साथ मिलकर 1923 ई० में वाइमर गणतंत्र के खिलाफ विद्रोह कर दिया। विद्रोह असफल हुआ एवं हिटलर को बंदी बना लिया गया। जेल में ही हिटलर ने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा 'मीनकैम्फ' की रचना की जिसमें उसने भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की है। 1924 ई० के अंत में उसे रिहा कर दिया गया। रिहा होकर उसने अपने दल को नये सिरे से संगठित किया। आर्यों की पवित्रता के सूचक 'स्वास्तिक' को प्रतीक के रूप में ग्रहण किया तथा सैनिक ढंग से पार्टी को संगठित किया। हालांकि नाजी पार्टी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए 'स्टेसेमैन' के नेतृत्व में गणतंत्रवादियों ने कई कार्यक्रम शुरू किए। 1925 ई० के लोकार्नो समझौते ने जर्मनी को वैश्विक समुदाय में सम्मान जनक स्थान प्रदान किया। फलत: जर्मनी को राष्ट्रसंघ की सदस्यता मिल गई। 1924 ई० में जर्मनी के निम्न सदन 'राइखस्टैग' के चुनाव में नाजी पार्टी को 32 स्थान मिले थे, वहीं 1928 के चुनाव में घटकर 12 हो गया। इस प्रकार नाजी पार्टी एवं हिटलर का प्रभाव जर्मनी में कम होने लगा। परन्तु हिटलर हिम्मत नहीं हारा। इसी समय 1929 ई० में प्रारंभ हुए विश्व आर्थिक मंदी तो हिटलर के लिए नवजीवन का संदेश लेकर आया। विश्व आर्थिक मंदी से सर्वाधिक प्रभावित जर्मनी हुआ था। अब वाइमर गणतंत्र से जर्मन जनता का विश्वास उठने लगा था। हिटलर ने इस परिस्थिति का भरपूर लाभ उठाया और वाइमर गणतंत्र, वर्साय संधि एवं यहूदियों के खिलाफ आग उगलना आरंभ कर दिया तथा उन्हें जर्मनी की वर्तमान दुर्दशा के लिए जिम्मेवार ठहराया। उसने मध्यवर्ग और बेकार नौजवानों को अपना प्रबल समर्थक बना लिया तथा साम्यवाद का हौवा खड़ा कर बड़े-बड़े उद्योगपतियों को भी अपना समर्थक बना लिया। अब नाजी पार्टी की शक्ति में दिन-दूनी, रात चौगुनी वृद्धि होने लगी। 1930 ई० के चुनाव में उसे 107 सीटें मिली तथा 1932 ई० के चुनाव में 230 सीटें प्राप्त की परन्तु उसे सरकार बनाने का मौका नहीं मिला। बाद में राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने 30 जनवरी 1933 को हिटलर को चांसलर मनोनीत किया। फलत: उसने निरंकुश अधिकार प्राप्त किया। सत्ता प्राप्त करते ही उसने चुनाव कराने की घोषणा की तथा चुनाव प्रणाली का संगठन इस तरह से किया कि नाजी पार्टी के लोग ही चुनाव जीत कर आ सकते थे। इस प्रकार जर्मन गणतंत्र की समाप्ति हुई और नात्सी क्रांति की शुरूआत हुई, जिसे हिटलर ने 'तृतीय राइख' का नाम दिया। अगस्त 1934 में हिंडेनबर्ग की मृत्यु होने पर चांसलर और राष्ट्रपति के पद को मिलाकर एक कर दिया गया। अब हिटलर जर्मनी का सर्वेसर्वा बन गया तथा अब उसने नाजीवादी दर्शन एवं विदेश

So a tense situation was created in the world and the Second World War came to be nearer.

Nazi Philosophy

Symbol of the Nazi Party

1. Nazism is an ideology which is opposite to democracy and liberalism. So after assuming power, Hitler banned the freedom of press and speech. He washed away the opposition parties. He imposed ban even on educational institutions and means of communications. Efforts were thus made to finish the democratic voice which proved to be dangerous for Germany.

2. This ideology is a strong opponent to international socialism. Hitler raised voice against socialism and got the support of the German capitalists. He got indirect support of England and France also and his strength multiplied. As a result the whole world stood on the verge of horrible war.

3. Nazi ideology is based on the concept of totalitarianism. According to it, everything is inside the state and nothing is opposite or out of it.

4. This ideology lays emphasis on radical nationalism. Hitler advocated radical nationalism to get power. Since there was a tradition of radical nationalism and militarism in Germany, Hitler tried to take advantage of this tendency. He mentally prepared the Germans to revenge their humiliation. Now the whole of Germany was ready with the vigour of war.

5. Nazism emphasises upon the unchecked power of the emperor. Hitler assumed despotic power in Germany. As soon as he assumed power, he formed a spy police organisation called 'Gestapo'. Its terror very soon spread in Germany. He formed a special cell and

नीति का अवलंबन किया जिसके कारण पूरे विश्व में तनाव के वातावरण का निर्माण हुआ तथा द्वितीय विश्व युद्ध नजदीक दिखाई पड़ने लगा।

नाजीवादी दर्शन

1. नाजीवाद में उदारवाद एवं लोकतंत्र का कट्टर विरोध की अवधारणा है। अत: हिटलर ने सत्ता प्राप्त करते ही प्रेस तथा वाक् अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया एवं विरोधी दलों का सफाया कर दिया। उसने शिक्षण संस्थाओं तथा जनसंचार पर भी प्रतिबंध लागू किया। इस प्रकार जर्मनी में लोकतांत्रिक आवाज को दफन करने का प्रयास हुआ जो राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हुआ।

नाजी पार्टी का प्रतीक चिह्न

2. यह दर्शन अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद का भी प्रबल विरोधी है। हिटलर ने भी समाजवाद के विरुद्ध आवाज बुलंद किया तथा जर्मन पूँजीपतियों को अपनी ओर मिला लिया। हिटलर के इस कार्य को इंग्लैण्ड एवं फ्रांस की ओर से भी अप्रत्यक्ष समर्थन मिला जिसके कारण उसका मनोबल बढ़ता गया। अंतत: पूरे विश्व ने एक भयंकर युद्ध के नजदीक अपने को खड़ा पाया।

3. नाजीवादी दर्शन में सर्वसत्तावादी राज्य की संकल्पना है। अर्थात् इसके अनुसार राज्य के भीतर ही सब कुछ है, राज्य के बाहर एवं विरुद्ध कुछ नहीं है।

4. यह दर्शन उग्र राष्ट्रवाद पर बल देता है। हिटलर ने सत्ता प्राप्त करते ही उग्र राष्ट्रवाद पर बल दिया । चूँकि जर्मनी में प्रारंभ से ही उग्र राष्ट्रवाद एवं सैनिक तत्व की परंपरा रही है। अत: हिटलर ने जर्मनी के इस मनोवृति का लाभ उठाया तथा अपने आक्रामक वक्तव्यों के द्वारा पूरे जर्मन वासियों को अपमान का बदला लेने के लिए मानसिक स्तर पर तैयार कर दिया। अब पूरे जर्मनी में युद्ध का माहौल दिखाई पड़ने लगा।

5. नाजीवाद राजा की निरंकुश शक्ति को बल प्रदान करता है। जर्मनी में हिटलर ने निरंकुश शक्ति का सहारा लिया। सत्ता में आते ही उसने गुप्तचर पुलिस 'गेस्टापों' का संगठन किया जिसका आतंक पूरे जर्मनी पर छा गया। उसने विशेष कारागृह की स्थापना की जिसके माध्यम से

smashed his political opponents. Hitler himself set the building of the Reichstag on fire and accused the socialists of it. This way he finished their political career. Now there was only one party in Germany the Nazi Party, and only one leader, Hitler.

6. Nazism glorifies military power and violence.

Hitler through Nazism took much advantage of the dissatisfaction in Germany. But he tried tirelessly to improve economic situation of Germany and very soon Germany turned into a greatest industrial power in Europe. But Hitler used his strength in negative direction which proved dangerous for Germany. However, to be a nationalist is good for a nation, but the efforts were made to relegate the spirit of the Germans through radical nationalism, which was not good for a nation. Hitler established dictatorship in Germany. Its forthcoming consequences were not fruitful and the whole world came on the verge of the Second World War.

Impact of Nazism

1. Anti-freedom feelings were encouraged in other European countries.
2. Anti-peace environment was created in the world and the doctrine of the League of Nations for mass safety was hurt.
3. Anti-Communist movements increased in the world.
4. Appeasement policy came into fashion in Europe.
5. The Second World War (1939-45) broke out.

Hitler's Foreign policy

After the First World War, the humiliating treaty at Versailles was imposed on Germany by the Allied countries. The military and economic strength of Germany was paralysed. The whole of Germany

राजनीतिक विरोधियों का दमन किया गया। राइखस्टाग की इमारत में हिटलर ने खुद आग लगवाई परन्तु उसका दोषारोपण समाजवादियों पर मढ़ दिया। इस प्रकार उनका राजनैतिक जीवन समाप्त कर दिया गया। अब जर्मनी में एक पार्टी थी–नाजी पार्टी एवं एक नेता था–हिटलर ।

6. नाजीवादी दर्शन में सैनिक शक्ति एवं हिंसा को महिमामंडित किया जाता है।

इस प्रकार नाजीवादी दर्शन द्वारा जर्मनी में असंतोष का फायदा हिटलर ने उठाया। हालांकि उसने जर्मनी की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए अथक प्रयास किया तथा देखते–ही–देखते जर्मनी, यूरोप की सबसे बड़ी औद्योगिक शक्ति बन गया। परन्तु हिटलर ने अपनी शक्ति का प्रयोग नकारात्मक दिशा में किया जो राष्ट्र के लिए खतरनाक एवं विरोधी बन गया। हालांकि राष्ट्रवादी होना देश के हित में है परन्तु उग्र राष्ट्रवाद की भावना भरकर जर्मन मनोवृत्ति को पीछे की ओर मोड़ने का प्रयास किया गया जो शायद राष्ट्रहित में नहीं था। हिटलर ने जर्मनी में तानाशाही शासन की स्थापना की जिसके दूरगामी परिणाम सही नहीं हुए, क्योंकि तब पूरी दुनिया स्वयं को द्वितीय विश्व युद्ध के नजदीक खड़ा पा रही थी।

नाजीवाद का प्रभाव :

1. यूरोप के अन्य देशों में स्वतंत्रता विरोधी भावनाओं को प्रोत्साहन मिला ।
2. विश्व में शांति विरोधी वातावरण का निर्माण हुआ तथा राष्ट्रसंघ द्वारा प्रतिपादित सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत को आघात पहुँचा ।
3. पूरे विश्व में साम्यवाद विरोधी आंदोलनों में तेजी आई।
4. यूरोप में तुष्टिकरण की नीति का प्रचलन हुआ।
5. द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) की शुरूआत हुई।

हिटलर की विदेश नीति

प्रथम विश्व युद्धोपरांत पराजित जर्मनी पर मित्र राष्ट्रों द्वारा वर्साय संधि की अपमानजनक शर्तें लाद दी गई थी। सैनिक एवं आर्थिक रूप से जर्मनी को पंगु बना दिया गया था। पूरे जर्मनी

was against the

Weimar Republic and Allied countries. So Hitler tried to take advantage of this situation and very cautiously adopted his foreign policy. The main theories of his foreign policy were -

1. To break up the Versailles treaty
2. To unite the whole German race
3. To spread the German empire
4. To check Communism

He took the following steps to implement his ideology:

Foreign Policy of Hitler

- Parting with the League of Nations
- To break up with Versallies treaty
- A ten-year pact with Poland
- Pact with Britain
- Rome-Berlin axis
- Pact against Comintern
- Integration of Austria and Czechoslovakia
- Invasion on Poland

1. Parting with the League of Nations: Hitler, in 1933 demanded to implement the conditions of Geneva disarmament treaty on all the nations equally. When Hitler did not succeed in his plan, he called the German representatives off and announced to give up the membership of the League of Nations.

2. To break up the Versailles treaty: In 1935, Hitler announced to break up all the conditions of Versailles treaty. He made army service compulsory in Germany. He very clearly said that now Germany was free from all the conditions of the Versailles treaty.

3. A ten-year pact with Poland: In 1934, Hitler made a ten-year non-aggression pact with Poland, in which it was decided not to encroach the borders of each other.

4. Pact with Britain: In June, 1935 a Pact was made between Germany and Britain, in which Britain admitted that Germany may increase its military power (army and air forces) provided that it may not increase its navy forces more than 35 percent. It was Hitler's great diplomatic victory.

में वाइमर गणतंत्र एवं मित्र राष्ट्रों के खिलाफ बदले की भावना प्रज्वलित हो रही थी। अत: हिटलर ने इस परिस्थिति का भरपूर फायदा उठाया एवं बड़ी सावधानी से विदेश नीति का अवलंबन किया। उसकी विदेश नीति के मूल सिद्धांत थे–

1. वर्साय संधि को भंग करना।
2. सारी जर्मन जाति को एक सूत्र में संगठित करना।
3. जर्मन साम्राज्य का विस्तार करना।
4. साम्यवाद के प्रसार को रोकना ।

इन सिद्धांतों की प्राप्ति के लिए उसने निम्नलिखित कदम उठाए :-

1. राष्ट्रसंघ से पृथक होना : हिटलर ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम 1933 में जेनेवा नि:शस्त्रीकरण की शर्तें सभी राष्ट्रों पर समान रूप से लागू करने की माँग की परन्तु जब उसे सफलता नहीं मिली तो उसने जर्मन प्रतिनिधियों को वापस बुला लिया एवं 1933 में राष्ट्रसंघ की सदस्यता छोड़ने की घोषणा कर दी।

हिटलर की विदेश नीति :
- राष्ट्रसंघ से पृथक होना
- वर्साय संधि को भंग करना
- पोलैंड के साथ दस वर्षीय समझौता
- ब्रिटेन से समझौता
- रोम-बर्लिन धुरी
- कॉमिन्टर्न विरोधी समझौता
- ऑस्ट्रिया एवं चेकोस्लोवाकिया का विलय
- पोलैंड पर आक्रमण

2. वर्साय की संधि को भंग करना : 1935 में हिटलर ने वर्साय संधि की नि:शस्त्रीकरण संबंधी सभी धाराओं को तोड़ने की घोषणा की एवं उसने पूरे जर्मनी में अनिवार्य सैनिक सेवा लागू कर दिया। उसने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि अब जर्मनी अपने को वर्साय संधि से मुक्त समझेगा ।

3. पोलैंड के साथ दस वर्षीय समझौता : हिटलर ने 1934 में पोलैंड के साथ दस वर्षीय अनाक्रमण संधि की जिसके अनुसार यह तय हुआ कि वे एक दूसरे की वर्तमान सीमाओं का किसी भी प्रकार अतिक्रमण नहीं करेंगे।

4. ब्रिटेन से समझौता : जून 1935 में जर्मनी तथा ब्रिटेन में समझौता हो गया जिसके अनुसार ब्रिटेन ने स्वीकार कर लिया कि वह (जर्मनी) अपनी सैन्य शक्ति (स्थल तथा वायु सेना) बढ़ा सकता है, बशर्ते वह अपनी नौ सेना 35 प्रतिशत से अधिक न बढ़ाये। हिटलर की यह एक बड़ी कूटनीतिक विजय थी।

Germany during Hilter's reign

5. Rome-Berlin areas: The invasive policy of Hitler kept Germany aloof from international forum. So, Hitler tried to befriend Italy and thus Rome Berlin axis was formed. These two friends helped General Franco, the military ruler of Spain.

6. Pact against Comintern: In 1936, a Pact against Comintern was made to escape the danger of communism.

7. Integration of Austria and Czechoslovakia: The aim of Hitler's foreign policy was to unite the German speaking People. So he wanted to make Austria a part of his empire.

हिटलर के काल में जर्मनी

5. रोम-बर्लिन धुरी : हिटलर की आक्रामक नीति ने जर्मनी को अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी से अलग कर दिया था। अत: मित्र की तलाश में हिटलर ने इटली की ओर हाथ बढ़ाया और इस प्रकार रोम-बर्लिन धुरी का निर्माण हुआ। इन दोनों मित्रों ने स्पेन के सैनिक शासक जेनरल फ्रैंको की भी मदद पहुँचाई।

6. कॉमिन्टर्न विरोधी समझौता : जापान के बीच कॉमिन्टर्न विरोधी समझौता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। साम्यवादी खतरा से बचने के लिए जर्मनी, इटली एवं 1936 ई० में संपन्न हुआ जो कालान्तर में धुरी राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

7. ऑस्ट्रिया एवं चेकोस्लोवाकिया का विलयन : जर्मन भाषा-भाषी को एक सूत्र में बाँधना भी हिटलर की विदेश नीति का लक्ष्य था। अत: वह ऑस्ट्रिया को अपने साम्राज्य में मिलाना

Italy first opposed this but finally Austria was diluted in German empire. As a result, Hitler's strength increased a lot.

A lot of Germans lived in Sudetenland of Czechoslovakia. So Hitler asked the Czech government for Sudetenland which the government refused to do. At last, at the request of England, France and Italy in Munich Summit (1938), Sudetenland was handed over to Germany. But Hitler wanted to take over whole of Czech Republic. So, in 1939 he took over the entire country. Afterwards, he usurped the harbour of Memel. But the Allied countries played the role of mere spectators and the strength of Hitler remained increasing.

8. Invasion on Poland: The next target of Hitler was to attack on Danzig harbour of Poland. Some part of Germany was handed over to Poland to reach the Baltic sea which was called Polish Corridor. Hitler asked for Danzig harbour and Polish Corridor and when he attacked Poland over this issue on 1st September, 1939, France and England interfered and the Second World War broke out (1939-45). In this war, the system of Hitler shattered and his initial success was turned into defeat before the strength of the Allied countries. In 1945, when the victorious army reached Berlin, Hitler committed suicide. Thus the world got rid of a dictator. For world peace The United Nations Organization was established on 24th October, 1945.

Table – 1

Year	No. of members (Nazi party)
1924	32
1928	12
1930	107
1932	230

The position of the Nazi party in Reichstag (the lower parliament).

चाहता था। प्रारंभ में इटली ने विरोध किया परन्तु अंतत: ऑस्ट्रिया को जर्मन साम्राज्य में मिला लिया गया। फलत:, हिटलर का मनोबल काफी बढ़ गया।

चेकोस्लोवाकिया के सुडेटनलैंड में जर्मन जाति के लोग रहते थे, अत: हिटलर ने चेक सरकार से सुडेटनलैंड की माँग की जिसे उसने अस्वीकार कर दिया। फलत: इंग्लैण्ड, फ्रांस एवं इटली के अनुरोध पर 1938 के म्यूनिख सम्मेलन में सुडेटनलैंड जर्मनी को दे दिया गया। लेकिन हिटलर तो पूरे चेक गणराज्य को हस्तगत करना चाहता था, अत: उसने 1939 में ही समस्त चेक गणराज्य पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने मेमेल बंदरगाह पर भी अधिकार कर लिया। परन्तु मित्र राष्ट्र मूकदर्शक की भूमिका में बने रहे जिससे हिटलर का मनोबल बढ़ता गया।

8. पोलैण्ड पर आक्रमण : पोलैण्ड के डान्जिंग बंदरगाह पर आक्रमण करना हिटलर का अगला लक्ष्य था। पोलैण्ड को बाल्टिक सागर तक पहुँचने के लिए जर्मनी का कुछ भूभाग दे दिया गया था, जिसे पोलिश गलियारा कहा जाता था। हिटलर ने डान्जिंग बंदरगाह तथा पोलिश गलियारे की माँग की एवं इसी प्रश्न पर जब उसने पोलैंड पर 1 सितम्बर 1939 को आक्रमण कर दिया तो फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि ने हस्तक्षेप किया और इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) की शुरूआत हुई। इस युद्ध में हिटलर का तंत्र लड़खड़ा गया तथा प्रारंभ की आशातीत सफलता के बाद मित्र देशों की शक्ति के सामने जर्मनी पराजित होने लगा। 1945 में जब विजयी सेनाएँ बर्लिन पहुँची तब तक हिटलर अपने बंकर में आत्महत्या कर चुका था। इस प्रकार विश्व समुदाय को एक तानाशाह से मुक्ति मिली एवं वैश्विक शांति हेतु 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

तालिका-1

वर्ष	सदस्य संख्या (नाजी पार्टी)
1924	32
1928	12
1930	107
1932	230

राइखस्टैग (निम्न सदन) में नाजी पार्टी की स्थिति

EXERCISE

I. Objective Questions:

1. Where was Hitler born?
   a. Germany b. Italy c. Japan d. Austia

2. What was the symbol of the Nazi party?
   a. Red Flag b. Swastik c. Black shirt d. Pigeon

3. Who wrote 'Mein Kampf'?
   a. Mussolini b. Hitler c. Hindenburg d. Statesman

4. The main industrial area of Germany was
   a. Alsace Lauren b. Ruhr
   c. Ivanov d. Berlin

5. The currency of Germany was
   a. Dollar b. Pound c. Mark d. Rouble

II. Choose the true statements:

1. Hitler was not the supporter of democracy.
2. Nazism is the supporter of Jewism.
3. There was despotic government in Nazism.
4. The seeds of Hitler's rising were inherited in the Versailles Treaty.
5. Military forces and violence were glorified in Nazism.

III. Fill in the gaps:

1. Hitler was born in .....
2. Hitler assumed the rank of Chancellor in Germany in .....
3. Hitler parted with the League of Nations in .....
4. The originator of Nazism was .....
5. ..... was the lower parliament in Germany.

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. हिटलर का जन्म कहाँ हुआ था ?

(क) जर्मनी (ख) इटली

(ग) जापान (घ) ऑस्ट्रिया

2. नाजी पार्टी का प्रतीक चिह्न क्या था?

(क) लाल झंडा (ख) स्वास्तिक

(ग) ब्लैक शर्ट (घ) कबूतर

3. 'मीनकैम्फ' किसकी रचना है।

(क) मुसोलिनी (ख) हिटलर

(ग) हिण्डेनवर्ग (घ) स्टेटमैन

4. जर्मनी का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र था।

(क) आल्सस-लॉरेन (ख) रूर

(ग) इवानोव (घ) बर्लिन

5. जर्मनी की मुद्रा का नाम क्या था।

(क) डॉलर (ख) पौंड

(ग) मार्क (घ) रूबल

II. सही कथनों का चुनाव करें :

1. हिटलर लोकतंत्र का समर्थक नहीं था।
2. नाजीवादी कार्यक्रम यहूदी समर्थक था।
3. नाजीवाद में निरंकुश सरकार का प्रावधान था।
4. वर्साय संधि में हिटलर के उत्कर्ष के बीज निहित थे।
5. नाजीवाद में सैनिक शक्ति एवं हिंसा को गौरवान्वित किया जाता है।

III. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. हिटलर का जन्म ..... ई० में हुआ था।
2. हिटलर ने जर्मनी के चांसलर का पद ..... ई० में संभाला था।
3. जर्मनी ने राष्ट्रसंघ से संबंध विच्छेद ..... ई० में किया था।
4. नाजीवाद का प्रवर्तक .....था।
5. जर्मनी के निम्न सदन को ..... जाता था।

IV. Write notes in 20 words:

1. Dictator
2. Versailles Treaty
3. Appeasement Policy
4. Weimar Republic
5. Communism
6. IIIrd Raich

V. Match the following:

1. Gestapo	a. a city in Germany
2. Weimar	b. Worship place of the Jews
3. Synagogue	c. Spy police
4. Brown shirts	d. Private army
5. Hindenburg	e. The President of Germany

V. Short answer type questions:

1. "The Versailles treaty prepared the background of Hitler's rising". How?
2. How did the Weimar Republic help in the rising of Nazism?
3. How can you say that the Nazi programmes prepared the background of the Second World War?
4. Did the fear of communism make the German capitalists Hitler's supporters ?
5. What is Rome - Berlin - Tokyo axis?

VII. Long answer type questions:

1. Throw light on Hitler's personality.
2. Hitler's foreign policy was a tool for regaining the lost pride of Germany. How?
3. Nazism was the supporter of despotism and opponent of democracy. Illustrate.

IV. 20 शब्दों में उत्तर दें :

1. तानाशाह
2. वर्साय संधि
3. तुष्टिकरण की नीति
4. वाइमर गणराज्य
5. साम्यवाद
6. तृतीय राइख

V. सही मिलान करें :

1.	गेस्टापो	(क) जर्मनी का शहर
2.	वाइमर	(ख) यहूदियों के प्रार्थनागृह
3.	सिनेगौग	(ग) गुप्तचर पुलिस
4.	ब्राउन शर्ट्स	(घ) निजी सेना
5.	हिंडेनबर्ग	(ङ) जर्मनी राष्ट्रपति

VI. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. वर्साय संधि ने हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि तैयार की, कैसे?
2. वाइमर गणतंत्र नाजीवाद के उदय में सहायक बना, कैसे?
3. नाजीवाद कार्यक्रम ने द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की, कैसे?
4. क्या साम्यवाद के भय ने जर्मन पूँजीपतियों को हिटलर का समर्थक बनाया ?
5. रोम–बर्लिन टोकियो धुरी क्या है?

VII. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हिटलर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।
2. हिटलर की विदेश नीति जर्मनी की खोई प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक साधन था। कैसे?
3. नाजीवादी दर्शन निरंकुशता का समर्थक एवं लोकतंत्र का विरोधी था। विवेचना कीजिए।

CHAPTER – 6

FOREST SOCIETY AND COLONIALISM

From the very beginning, forests have been a chief resource for India. About 22-25 percent of the land is covered with forests, where several races and tribes inhabit. It is believed that they are the natives of Indian peninsula. That is why they are called 'Adivasis'. In India their population is next to Africa. There is a symbiotic relationship between adivasis and forests. Forests are deeply related with tribal economy and culture. Tribals are totally dependent on forests for food, fuel, wood, household, stuff, hurbs, medicines, fodder and agricultural equipments. Their culture is influenced by forests. They worship a variety of trees. The tribes living in forest society classify themselves on the basis of races (castes) in place of class i.e. Paharia, Chero, Kol, Uraon, Ho, Santhal, Chuar, Khariya, Bhil, Munda and so on.

Bhil is the biggest tribe in India which resides in Madhya Pradesh, Andhra Pradesh, Gujarat, Karnataka, Rajasthan and Tripura. Gond is the next chief tribe residing mostly in Madhya Pradesh, Andhra Pradesh, Maharashtra and Gujarat. The Santhals, the third chief tribe are generally living in Bihar, Jharkhand, Orissa and West Bengal. The tribes like Uraon, Meena, Munda and Khond also live in these states.

Till the 18th century, these tribes used the forests for their livelihood. Their lives are very simple and in their social life, they adopt the policy of non-interference. But by the end of the 18th Century, they became prey to colonialism. That is why they raised their heads many times against colonialism with weapons which resulted in the revolution in 1857 and in several other movements. Though some measures for improvement were taken up, yet it is a vital question why these simple

इकाई–6

वन्य–समाज और उपनिवेशवाद

प्रारम्भ से ही भारत में वन सम्पदा एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में रहा है। लगभग बाइस से पच्चीस प्रतिशत भारत की भूमि वनों से आच्छादित है, जहाँ अनेक जातियाँ एवं जनजातियाँ निवास करतीं हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये लोग भारतीय प्रायद्वीप के मूल निवासी हैं। यही वजह है कि उन्हें 'आदिवासी' कहा जाता है। भारत में इनकी आबादी अफ्रीका के बाद सर्वाधिक है। आदिवासियों और वनों के बीच एक सहजीवी सम्बन्ध है। जनजातीय अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति के साथ वनों का सम्बन्ध बहुत ही गहरा है। भोजन, ईंधन, लकड़ी, घरेलू सामग्री, जड़ी–बूटी, औषधियों, पशुओं के लिए चारा और कृषि औजारों की सामग्री के लिए ये वनों पर आश्रित रहते हैं। उनकी संस्कृति भी वनों से प्रभावित होती है। वे अनेक वृक्षों की पूजा करते हैं। वन्य समाज में रहने वाले जनजातियों ने अपने आपको वर्ग के आधार पर नहीं बल्कि जातीय आधार पर समाज में रखा है। उदाहरण के लिए पहाड़िया, चेरो, कोल, उराँव, हो, संथाल, चुआर, खरिया, भील, मुंडा आदि।

भारत में भील सबसे बड़ी जनजाति है, जो मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान एवं त्रिपुरा राज्यों में पायी जाती है। गोंड इस देश की दूसरी बड़ी जनजाति है जो अधिकांशत: मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात में पायी जाती है। संथाल भारत में तीसरी बड़ी जनजाति है जो बिहार, झारखंड, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल में पायी जाती है। इन्हीं प्रदेशों में उरांव, मीना, मुंडा, खोंड आदि जनजातियाँ भी है।

अठारहवीं शताब्दी के पहले तक ये जनजातियाँ वन सम्पदा का प्रयोग अपने जीवीकोपार्जन के लिए करती थीं। इनका जीवन बहुत ही सीधा होता था और सामाजिक जीवन में ये लोग अहस्तक्षेप की नीति अपनाते थे। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक ये विदेशियों के उपनिवेशवाद के शिकार बन गए। यही वजह थी कि उन्होंने उपनिवेशवाद के खिलाफ कई सशस्त्र विद्रोह किए, जिसकी पूर्णाहुति सन् 1857 की क्रांति एवं आगामी क्रांतियों में हुई। यद्यपि आगे चलकर उनके लिए कुछसुधारात्मक आदेश पारित किए गए, फिर भी सीधे–साधे वन में जीवन व्यतीत करने

forest dwellers raised their weapons. For the answer, it is necessary to peep carefully into the various aspects of the forest society and its culture.

Political life

In the 18th century, the forest society was divided into tribes. Each tribe was organized under a headman (Mukhiya) for their safety. The main duty of the headman was to provide safety to his tribe. Gradually these headmen started their monopoly on the tribes. They succeeded in gaining some privileges for themselves. To continue as a headman, it was necessary to be skilled in wars and to beable to safeguard his tribe. Every tribe had its own system of governance. In this system the power was decentralized. Traditional tribal institutions were endowed with legal judicial and executive powers. 'Maniki' and 'Munda' systems in Singhbhoom and 'Manjhi' and 'Paragnait' in Santhal Pargana are in vogue even these days. These systems were commanded by the headman of the tribes. During the British rule they were tempted by the Englishmen and became their supporters. They helped the British in the collection of revenue even in a harsh way. But later, when the adivasis were facing political exploitation, the headman helped their people in many places.

Political Life

- Organisation of tribes under headman
- Decentralization of power
- 'Maniki' and 'Munda' systems for revenue collection in Singhbhum
- 'Manjhi' and 'Paragnait' systems in Santhal Paragana

The Adivasis were the men of meek and mild nature. Generally they kept themselves aloof from the rest of the societies, but the Englishmen interfered in their social life. For economic benefit, they instated the leaders of the tribes as landlords. The intrusion of Christian missionaries in the forest society was encouraged, this shattered their social systems. Their intimate relationship with forests was also broken down. They cut wood in the forest, and used it for fuel. They gathered grass from forests for fodder. Hunting deer, partridge and other birds and animals was their hobby and play. Their social life was so simple that they led their lives quite freely. Dancing and singing were their hobbies.

Social Life

- Interest in dancing, singing and hunting
- 'Sarhul', the main festival
- Ban on hunting

वाले आदिवासियों ने अस्त्र-शस्त्र का सहारा क्यों लिया, यह जानने के लिए हमें वन्य समाज एवं उनकी तत्कालीन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक प्रतीत होता है।

राजनैतिक जीवन : अठारहवीं शताब्दी में वन्य समाज कबीलों में बँटा था। सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकता के कारण प्रत्येक जनजाति एक मुखिया के तहत संगठित थी। मुखिया का मुख्य कर्तव्य कबीला को सुरक्षा प्रदान करना था। धीरे- धीरे ये मुखिया कबीलों पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिए। इन्होंने अपने लिए बहुत से विशेषाधिकारों को भी प्राप्त करने में सफलता हासिल कर ली। जनजातियों का मुखिया बने रहने के लिए उनका युद्ध कौशल में निपुण होना एवं सुरक्षा देने के कार्य में सक्षम होना अनिवार्य था। इनकी स्वयं की शासन प्रणाली थी। शासन प्रणाली में सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया गया था। परम्परागत जनजातीय संस्थाएँ वैधानिक, न्यायिक तथा कार्यपालिका शक्तियों से निहित थीं। बिहार के सिंहभूम में 'मानिकी' व 'मुंडा' प्रणालियाँ और संथाल परगना में 'मांझी' व 'परगनैत' प्रणालियाँ आज भी प्रचलित हैं, जिनका संचालन मुखियाओं द्वारा किया जाता है। अंग्रेजी शासन के समय उनके द्वारा प्रलोभन दिए जाने के कारण अधिक संख्या में ये मुखिया अंग्रेजों के हिमायती होने लगे और कठोरता से राजस्व वसूली में उनका साथ देने लगे। हालाँकि बाद में राजनैतिक दृष्टिकोण से जब आदिवासियों का शोषण किया जाने लगा तब उन्होंने भी कई जगहों पर समाज के लोगों का साथ दिया ।

राजनैतिक जीवन :
- मुखिया के तहत कबीलों का गठन
- सत्ता का विकेन्द्रीकरण
- राजस्व वसूली के लिए सिंहभूम में 'मानकी' एवं 'मुण्ड' प्रणाली
- संथाल परगना में 'माझी' एवं 'परगनैत' प्रणाली

आदिवासी सीधे-साधे सरल प्रकृति के थे। आमतौर पर वे स्वयं को शेष समाज से अलग रखते थे, लेकिन अंग्रेजों ने अपने आर्थिक लाभ के दृष्टिकोण से कबीला के सरदारों को जमींदार का दर्जा दे दिया। वन्य समाज के अन्दर ईसाई मिशनरियों के घुसपैठ को भी बढ़ावा दिया गया, जिससे उनकी सामाजिक व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गयी। जंगल से उनके गहरे रिश्ते को भी तोड़ दिया गया। वे जंगलों से लकड़ी काटते थे और उसका प्रयोग ईंधन के रूप में करते थे। पशुओं का चारा भी जंगलों के घास से इकट्ठा करते थे। उनका मुख्य शौक और मनोरंजन का साधन हिरण, तीतर और अन्य छोटे पशु पक्षियों का शिकार करना था। इनका सामाजिक जीवन इतना सादा था कि ये स्वच्छन्दता पूर्वक जीवन बिताते थे। नाच और गाना इनका महत्वपूर्ण शौक था। ये खेती

• सामाजिक जीवन :
- नृत्य, गान एवं शिकार में अभिरुचि
- 'सरहुल' मुख्य त्योहार
- आदिवासियों के शिकार पर प्रतिबन्ध

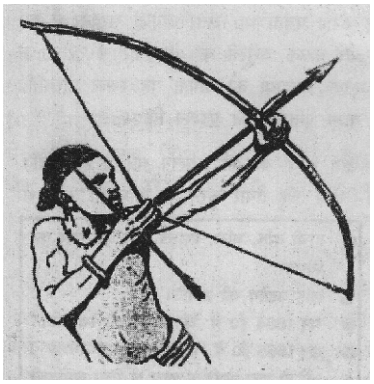

Adivasi youth with bow and arrow

Dancing Adivasi people

They engaged themselves in cultivation. Their songs and dances were influenced by various aspects of agriculture. Their most important festival 'Sarhul' was celebrated on the third of the Chaitra bright fortnight. This festival is still very popular. The women in tribal society were completely free and used to help male members in earning their livelihood.

Inspired by colonialism , the British banned the hunting of small creatures but they were free to prey big ones. For the British large wild and savage animals were the symbols of primitive society. They believed that by killing dangerous animals, they would civilize the tribal people. As a result, various species of animals became extinct. They thus tried their best to destroy the social environment of the forest society. All this caused the Adivasis to oppose the British rule.

Economic life

Economic life

- Agriculture based economic life
- 'Jhoom' or 'Podu' method farming

The economic life of the forest society was based on agriculture. They did farming at different places by 'Ghumantu', 'Jhoom', or 'Podu' methods. Where they thought the place to be unfertile, they

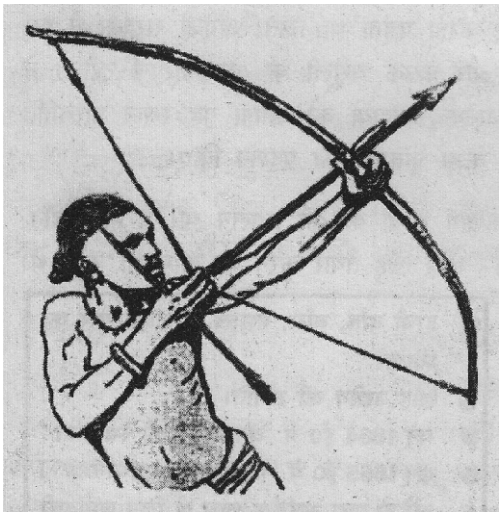

धनुष बाण से निशाना लगाता आदिवासी युवक

नृत्य करता हुआ आदिवासी

गृहस्थी करते थे। सामाजिक जीवन में उनके संगीत एवं नृत्यकला पर भी कृषि कार्य के विभिन्न पहलुओं का पूरा प्रभाव था। चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि को उनका सबसे महत्वपूर्ण पर्व 'सरहुल' मनाया जाता था, जो आज भी प्रचलित है। आदिवासी समाज की महिलाएँ अपने समाज में पूर्णरूपेण स्वच्छन्द थीं, और जीवीकोपार्जन में वे पुरुषों का हाथ बँटाती थीं।

उपनिवेशवाद की भावना से प्रेरित होकर अंग्रेजी सरकार ने छोटे शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया, जबकि बड़े जानवरों का शिकार करना मना नहीं था। अंग्रेजों की नजर में बड़े जंगली एवं बर्बर जानवर आदि समाज के प्रतीक चिह्न थे। उनका मानना था कि खतरनाक जानवरों को मारकर वे यहाँ के लोगों को सभ्य बनायेंगे। परिणाम यह हुआ कि जानवरों की कई प्रजातियाँ विलुप्त होने लगी। इस तरह वन्य जीवन के सामाजिक पर्यावरण को उन्होंने नष्ट भ्रष्ट करने की पूरी कोशिश की, जिससे उनके प्रति विरोध का भाव पैदा हुआ ।

आर्थिक जीवन : वन्य समाज के आर्थिक जीवन का आधार कृषि था। वे जगह बदल-बदल कर 'घुमंतू', 'झूम' या पोडू विधि से खेती करते थे। जब उन्हें लगता था कि उनके खेत अब उपजाऊ नहीं रह गए हैं तब वे जंगल

आर्थिक जीवन

- आर्थिक जीवन का आधार खेती
- 'झूम' या 'पोडू' विधि से खेती

cleared the forest and prepared new land for farming. The Englishmen had to face difficulties in imposing and collecting land-cess (lagan), so they banned these methods of farming. Excessive land-cess and oppressive ways of revenue collection enraged the tribal people. Many a society had to change their habitation. Later, they protested against the English.

The Adivasis were engaged in farming as well as in other industries. They were in the trade of ivory, bamboo, spices, fibres, rubber etc. and prepared lac. They reared up the worms of lac on butea, plum and kusum trees and prepared lac in factories. In 1970, the trade of lac began to flourish. They were also engaged in Tusser silk industries. By the 19th century, the British started clearing the forests for manufacturing rails, coaches and seats which affected the lifestyle of the adivasis. Dietrich Brandis , a German forest export started 'Forest Service' in 1864 and in 1865, Indian Forest Act was enacted which banned the tribal people from cutting the trees and safeguarded the forests for wood production. It adversely affected the social as well as economic life of the Adivasis. The British government started Zamindari system there to collect revenue. Now the adivasis were economically exploited by the landlords, and money-lenders. Gradually they turned from Farmers into labourers and their economic condition got worse. They nowhere got justice. The police helped money-lenders instead of them. For debts, they usurped their land, cattle and so on. In this situation the adivasis had to keep themselves as bonded labours as a result, their economic and physical exploitation grew up. So in this situation they started organizing themselves on the basis of castes as Santhali, Kol, Munda etc. But these organisations, never attacked on each other.

- Trade of Ivory, Bamboos, Spices, Fibres and Rubber.Development of lac industries
- Establishment of 'forest service' in 1864.
- Indian Forest Act in 1865
- Started Zamindari system by the British for economic benefit

Religious life

From the very beginning, these adivasis of forest society were in favour of non-interference policy. They were always ready with arms and weapons to check any kind of foreign intrusion.

साफ कर नई जमीन तैयार कर लेते थे। खेती की इस व्यवस्था से अंग्रेजों को लगान निश्चित करने और उनकी वसूली करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अत: अंग्रेजी सरकार ने इस पर रोक लगा दी। जमीन पर अत्यधिक लगान और उसके वसूली के अत्याचारपूर्ण तरीकों ने आदिवासियों में उनके प्रति क्षोभ उत्पन्न किया। अनेक समुदायों को अपना गृह स्थान परिवर्तित करना पड़ा। बाद में ये लोग अंग्रेजों के खिलाफ कड़ा प्रतिरोध का प्रदर्शन किए।

आदिवासियों में खेती के अलावा अन्य उद्योग धन्धों का भी प्रचलन था। वे हाथी दाँत, बाँस, मसाले, रेशे, रबर, आदि के व्यापार के साथ- साथ लाह तैयार करने का काम भी करते थे। ये पलास, बैर एवं कुसुम के पेड़ पर लाह के कीड़े पालते थे और कारखाने में उससे लाह तैयार किया जाता था। सन् 1870 से यहाँ लाह कारोबार की उन्नति होने लगी। ये लोग तसर उद्योग भी करते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के आते-आते अंग्रेजों ने रेल की पटरी एवं रेल के डब्बे की सीट बनाने के लिए जंगलों की कटाई शुरू कर दी, जिससे आदिवासी जनजीवन पर कुठाराघात हुआ। डायट्रिच ब्रैंडिस नामक जर्मन वन विशेषज्ञ ने सन् 1864 में 'वन सेवा' की स्थापना की तथा सन् 1865 में 'भारतीय वन अधिनियम' पारित कर आदिवासियों के लिए पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दिया गया एवं जंगल को लकड़ी उत्पादन के लिए सुरक्षित किया गया। इससे आदिवासियों के आर्थिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक जीवन भी प्रभावित हुआ। अंग्रेजी सरकार ने यहाँ के जमीन से अब राजस्व प्राप्त करने के लिए जमींदारी व्यवस्था लागू की। अब जमींदार, महाजन और साहुकारों द्वारा ये आर्थिक शोषण के शिकार होने लगे। धीरे-धीरे वे किसान से मज़दूर होते गए और उनकी आर्थिक स्थिति बद्-से-बद्तर होते चली गयी। उन्हें कहीं न्याय नहीं मिलता था। पुलिस भी उनकी मदद नहीं करती थी, उल्टे वह महाजनों का ही साथ देती थी। कर्ज के बदले उनके खेत, मवेशी आदि को महाजनों ने हड़प लिया। ऐसे में कभी-कभी इन आदिवासियों को स्वयं को भी गिरवी रखना पड़ता था। फलत: उनका आर्थिक एवं शारीरिक शोषण बढ़ गया। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने वर्ग के आधार पर नहीं बल्कि जातीय आधार पर संथाल, कोल, मुंडा, आदि के रूप में अपने आपको संगठित किया। परन्तु इस संगठन के द्वारा कभी भी उन्होंने अपने समूह पर आक्रमण नहीं किया।

- हाथी दाँत, बाँस, मसाले, रेशे एवं रबर का व्यापार
- लाह लारव उद्योग की उन्नति।
- सन् 1864 ई० में 'वन सेवा' की स्थापना।
- सन् 1865 ई० में 'भारतीय वन अधिनियम'। अंग्रेजों द्वारा आर्थिक लाभ के लिए जमींदारी व्यवस्था लागू करना ।

धार्मिक जीवन- वन्य समाज के ये आदिवासी शुरू से ही अहस्तक्षेप की नीति के पोषक थे। अपने समाज के अन्दर किसी भी तरह के विदेशी घुसपैठ को रोकने के लिए वे सशस्त्र तैयार

The British adopted the policy of commercial colonialisation and tried to intrude in tribal areas but for a long time they did not succeed. So they made Christian missionaries intrude in into the tribal regions, to educate and civilize the people there, so that they could get a proper way to serve their purpose. Afterwards, these missionaries began to criticize the Adivasi culture and religion and started their religious conversion. A large number of adivasis adopted Christianity and improved their conditions. They got qualitative change due to english education but they began to hate their own races. The adivasis took it as encroachment on their social and religious lives by the English and started resisting them. In this situation, the religious feelings inherent in the forest society gave birth to several leaders and movements.

Religious Life

- Intrusion of Christian missionaris and evocation for religious conversion of adivasis
- Religious dissatisfaction in all tribes after hurting religious feeling.

These leaders believed that God would remove their miseries and rescue them from foreign exploitation. He has magical power to diffuse the effect of cartridges. This self-confidence of these leaders provoked the adivasis to rebel against the British. According to the historical proofs, in the middle of the 18th century, the efforts of the British to enter Chhotanagpur and Santhal Paragana were opposed forcibly and violently.

Paharia movement

This was a war like race. The people of this race were inhabitants of Rajmahal hills in Bhagalpur. Here a first, the British converted the headmen into landlords and authorised them to take revenue. They provoked the money-lender, contractors, revenue officers, police and forest officers to exploit the adivasis. As a result, they were forced to be trapped into debts and handed over their fertile land to non-adivasis. It ruined the economic base of

रहते थे। भारत में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के विचार से वाणिज्यिक उपनिवेशवादी नीति का पालन करते हुए अंग्रेजों ने जनजातीय क्षेत्रों में प्रवेश करने का भरसक प्रयास किया, लेकिन बहुत समय तक वे सफल नहीं हो सके। तभी उन्होंने शिक्षा देने और लोगों को सभ्य बनाने के उद्देश्य से ईसाई मिशनरियों का घुसपैठ जनजातीय क्षेत्रों में कराया ताकि उनके प्रवेश को एक उचित माध्यम मिल जाय। कालान्तर में ये पादरी आदिवासी धर्म एवं संस्कृति की आलोचना करने लगे और उनका धर्म परिवर्तन करना आरम्भ कर दिए। बड़ी संख्या में आदिवासियों ने ईसाई धर्म को अपनाया और अपनी स्थितियों में सुधार की। शिक्षा पाने के कारण उनकी स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन तो हुआ, लेकिन वे अपने अन्य भाइयों से घृणा करने लगे। आदिवासी इसे अपने सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में अंग्रेजों द्वारा किए गए अतिक्रमण समझ कर इसका प्रतिरोध करना शुरू किए। ऐसे ही परिवेश में वन्य समाज में व्याप्त धार्मिक भावनाओं ने कई क्रांतियों एवं नेताओं को जन्म दिया, जिन्होंने अपने क्षेत्र में अंग्रेजों के प्रति जेहाद का बिगुल बजाया। उन नेताओं का धार्मिक विश्वास था कि ईश्वर उनके कष्टों को दूर करेगा और विदेशियों के शोषण से उन्हें मुक्त करेगा। उनके पास वह जादुई ताकत है, जिससे दुश्मन की गोलियाँ बेअसर हो जायेंगी। इसी तरह का आत्म विश्वास उनके नेताओं में था, जिन्होंने सम्पूर्ण वन्य समाज के आदिवासियों को अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन करने के लिए भड़काया। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर अठारहवीं शताब्दी के मध्य में ही बिहार के तत्कालीन छोटानागपुर एवं संथाल परगना क्षेत्रों में प्रवेश करने के अंग्रेजों द्वारा प्रयासों का आदिवासियों ने बलपूर्वक तथा हिंसात्मक तरीकों से विरोध किया।

धार्मिक जीवन

- ईसाई मिशनरियों की घुसपैठ एवं धर्म परिर्वतन के लिए आदिवासियों को प्रेरित करना
- धार्मिक भावना पर आघात से सभी जनजातियों में धार्मिक असंतोष

पहाड़िया विद्रोह : यह जाति युद्धप्रिय थी। इनका निवास स्थान भागलपुर के राजमहल पहाड़ियों के क्षेत्र में था। यहाँ अंग्रेजों ने आरम्भ में मुखिया को जमींदार बना दिया, और उनको राजस्व वसूली का कार्य भी दिया। अंग्रेजों ने साहुकारों, ठेकेदारों, राजस्व, वन तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों को इनका शोषण करने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप इन्हें ऋण- ग्रस्तता तथा अपनी उपजाऊ भूमि का गैर आदिवासियों को हस्तांतरित करने के दौर से गुजरना पड़ा । इसने जनजातियों का आर्थिक आधार तहस-नहस कर दिया और उन्हें दरिद्र बना दिया। अत: भारत में पहली बार इस क्षेत्र में अपने ही जमींदार के राजस्व नीति के विरोध में जनजातीय विद्रोह हुआ । इस विद्रोह का नेता तिलका मांझी था। यह भारत का पहला संथाली (तत्कालीन संथाल

Tilka Manjhi

the tribes and made them poor. So for the first time a relellion against the revenue policy of landlords broke out. Tilka Manjhi was the leader of this rebellion. He was the first Santhali who not only rebelled against the landlords but also took violent action against the landlords the British. Tilka Manjhi was born in 1750 in Tilakpur village near Sultanganj in Bhagalpur Commissionery. In 1779 he for the first time raised arms to lessen land-revenue and get the land of the farmers back from the landlords. The British army helped the landlords. So Tilka Manjhi made the Tilapur forest his shelter from where he planned to attack his enemies. He attacked Augustus Clave Land, the first Collector of Bhagalpur because he did not want any outsider to interfere in the lives of forest and tribal society of hills, to exploit them and hurt their social and religious feelings. He is the first Santhali, who attacked the Collector witch bow and arrow in 1784 and wounded him, due to which later Clave Land died. For his violent action and anti-British policy, he was arrested and put to death in 1785 on the roundabout in Bhagalpur. He was hanged to death on Banyan tree. Tilka Manjhi thus died for the freedom of his region. Though his movement failed, it paved the way for the forthcoming Santhal movement. Tilka Manjhi showed an example of sacrifice for the sake of his motherland fighting against the exploitation and oppression by the British. The place where he was hanged is now known as Tilka Manjhi Chowk (Bhagalpur). The statue of Amar Shaheed Tilka Manjhi tells us the story of sacrifice to protect the rights of poor farmers.

Tamar movement

In 1789, the Uraon tribe of Chhotangpur started movement against the exploitation by landlords. In history, it is known as Tamar movement. It continued till 1794 and it ended cruelly with the help of the British. But the fire of revolt was not put out. Further it broke out with the revolts of Munda and Santhal.

तिलका मांझी

परगना क्षेत्र) था, जिसने न सिर्फ अपने जमींदार का विरोध किया बल्कि अंग्रेजों पर भी हिंसात्मक कार्रवाई की। तिलका मांझी का जन्म 1750 ई० में भागलपुर प्रमंडल स्थित सुल्तानगंज के पास तिलकपुर गाँव में हुआ था। सन् 1779 में उसने पहली बार भू-राजस्व की राशि कम करने एवं किसानों की भूमि जमींदार से छुड़वाने के लिए वहाँ सशस्त्र विद्रोह किया। जमींदारों की सहायता अंग्रेजी सेना द्वारा की गयी थी। अत: तिलका मांझी ने तिलापुर जंगल को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, जहाँ से वह विरोधियों पर आक्रमण की योजना बनाता था। भागलपुर के प्रथम तत्कालीन कलक्टर अगस्टस क्लेवलैंड पर तिलका मांझी ने सशस्त्र प्रहार किया। वह नहीं चाहता था कि वन्य समाज एवं पहाड़ी क्षेत्रों के जनजातीय समाज में कोई भी बाहरी व्यक्ति हस्तक्षेप करे, उनका शोषण करे और उनकी सामाजिक तथा धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाए। पहली बार कलक्टर पर शस्त्र चलाने वाला वह पहला संथाल था जिसने तीर एवं धनुष से सन् 1784 ई० में उसे जख्मी किया, जिससे बाद में क्लेवलैंड की मृत्यु हो गयी।

हिंसात्मक कार्यों एवं अंग्रेज विरोधी नीतियों के कारण उसे गिरफ्तार कर लिया गया और सन् 1785 ई० में भागलपुर में बीच चौराहे पर बरगद के पेड़ से लटका कर उसे फाँसी दे दी गयी। तिलका मांझी अपने क्षेत्र की आजादी के लिए शहीद हो गया। हालाँकि, उसके द्वारा किया गया विद्रोह असफल हो गया लेकिन इसने आगे के संथाल विद्रोह का मार्गदर्शन अवश्य किया। तिलका मांझी ने अंग्रेजों द्वारा शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर कर देश के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया। जिस जगह पर उसे फाँसी दी गयी थी, आज वह तिलका मांझी चौक (भागलपुर) के नाम से जाना जाता है। अमर शहीद तिलका मांझी की मूर्ति गरीब किसानों के अधिकारों की रक्षा हेतु उनके प्राण की आहुति की कहानी कहता नजर आता है।

तमार विद्रोह – सन् 1789 ई० में छोटानागपुर के उरांव जनजाति ने जमींदारों के शोषण के खिलाफ आन्दोलन किया। इतिहास में यह तमार विद्रोह के नाम से जाना जाता है। यह सन् 1794 तक चलता रहा और अंग्रेजों की सहायता से इसे बहुत ही क्रूरतापूर्ण तरीके से दबा दिया गया। फिर भी विद्रोह की अग्नि समाप्त नहीं हुई। आगे चलकर इनका विरोध मुंडा और संथाल के साथ मिलकर प्रदर्शित हुआ।

Chero movement

The Chero tribe residing in Palamu region of Jharkhand revolted against their ruler, Chudaman Roy. In 1800, they revolted against the exploitation by the British under the leadership of Bhushan Singh. The British army came to help the ruler. They under the command of Colonel Jones crushed the movement and in 1802 Bhushan Singh was hanged to death.

Different tribal movement

- Paharia movement
- Tamar movement
- Chero movement
- Chuar movement
- Ho movement
- Kol movement
- Bhoomiz movement
- Santhal movement
- Munda movement
- Kandh movement

Chuar movement

The Chuars were found in Midanapur, Bankuda and Manbhoom regions of Bengal province. They were dissatisfied with the revenue system of the British. So under the leadership of Rani Shiromani, the queen of Karangarh they unfurled the flag of revolt. This revolution against the British continued for a long time. In 1789, it was at its climax. But on April 6, 1799 Queen Shiromani was arrested and sent to prison in Kolkata. But the revolt was not finished completely. Later they joined the revolt of Ganga Narayan of the Bhoomij tribe.

Ho movement

In 1820-1821, a great revolt broke out in Chhotanagpur of Singhbhoom. Jagannath Singh was the king who accepted the protection of the British. The Ho opposed the exploitation and growing power of the king. But the British army finished it cruelly. Later they joined Munda movement.

Kol movement

Kol movement started in 1831 in Chhotanagpur region by Munda, Uraon and several other tribes. It has a special importance in the history of India. From the eariy times,kols were peaceful tribals . Later when British revenue system and exploitation policy were imposed on them by the landlords, Kols opposed 'Manaki' and 'Mahto' who were made landlords by the British. According to their custom, a post named 'Pahan' was created to perform secular activities. Manaki and Mahto were for his assistance. These Manakis who were once co-operators of the Kols, became landlords and started their social and economic exploitation for not paying the land-cess.

चेरो विद्रोह – बिहार में पलामू क्षेत्र में रहने वाले चेरो जनजाति ने अपने राजा के खिलाफ विद्रोह किया। उस समय चुड़ामन राय उनका शासक था। अंग्रेजों की शोषण नीति के खिलाफ भूषण सिंह के नेतृत्व में चेरो जनजाति के लोगों ने सन् 1800 ई० में खुला विद्रोह किया। राजा की मदद करने के लिए अंग्रेजी सेना बुलाई गयी। कर्नल जोन्स के नेतृत्व में आई सेना ने इस विद्रोह को दबा दिया और सन् 1802 ई० में भूषण सिंह को फाँसी दे दी गयी।

विभिन्न जनजातीय विद्रोह

- पहाड़िया विद्रोह
- तमार विद्रोह
- चेरो विद्रोह
- चुआर विद्रोह
- हो विद्रोह
- कोल विद्रोह
- भूमिज विद्रोह
- संथाल विद्रोह
- मुण्डा विद्रोह
- कंध विद्रोह

चुआर विद्रोह – चुआर जनजाति तत्कालीन बंगाल प्रांत के मिदनापुर, बाँकुड़ा, मानभूम आदि क्षेत्रों में पायी जाती थी। अंग्रेजों की लगान व्यवस्था के खिलाफ इन लोगों में भी असंतोष था। अत: मिदनापुर स्थित करणगढ़ की रानी शिरोमणी के नेतृत्व में चुआरों ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। अंग्रेजों के खिलाफ यह विद्रोह एक लम्बे समय तक जारी रहा। लेकिन सन् 1798 ई० में यह चरमोत्कर्ष पर था। सरकार ने 6 अप्रैल 1799 को रानी शिरोमणी को गिरफ्तार कर कलकत्ता जेल भेज दिया। परन्तु इससे चुआरों के विद्रोह की अग्नि शांत नहीं हुई। आगे चलकर ये भूमिज जाति के लोगों के साथ गंगा नारायण द्वारा किए गए विद्रोह में शामिल हो गए।

'हो' विद्रोह – सन् 1820–21 ई० में छोटानागपुर के ही सिंहभूम जिले में बहुत बड़ा विद्रोह हुआ। यहाँ का राजा जगन्नाथ सिंह था, जिसने अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर लिया था। 'हो' जाति के लोगों ने अंग्रेजों की सहायता से राजा की बढ़ती हुई शक्ति एवं शोषण का विरोध किया। इसे अंग्रेजी सेना ने क्रूरतापूर्ण ढंग से दबा दिया। आगे चलकर इन लोगों ने भी मुंडा विद्रोह में स्वयं को शामिल कर लिया।

कोल विद्रोह – कोल विद्रोह की शुरूआत छोटानागपुर क्षेत्र में मुंडा, उरांव एवं अन्य जनजातियों के द्वारा सन् 1831 ई० में हुआ। भारत के इतिहास में इस विद्रोह की एक अलग महत्ता है। प्रारम्भ से ही यह जनजाति शांतिपूर्ण कबिलाई जीवन व्यतीत कर रही थी। बाद में अंग्रेजों की लगान व्यवस्था एवं शोषण नीति उनके जमींदारों द्वारा उनपर लागू कराया गया, तब कोलों ने जमींदार के रूप में 'मानकी' या 'महतो' का विरोध किया। उनके कबीले की प्रथा के अनुसार धर्म निरपेक्ष कार्यों के सम्पादन के लिए 'पाहन' नामक पद सृजित किया गया था। 'मानकी' या 'महतो' उनकी सहायता के लिए बनाये गए थे। ये मानकी जो कभी कोलों के सहयोगी हुआ करते थे,

A large number of Hindu, Muslim and Sikh traders entered this area and became money-lenders. The land of Kols began to go out of their possession. In this situation, the Kols revolted against the landlords and dikus (non-tribal races). This revolt spread to Palamu region.

About 800 to 1000 people were killed. The aggressive and violent form of this revolt drew the attention of the British. Though this revolt was suppressed, the English realised that they could not ignore the Kol society. As a result, 'South-West Frontier Agency' came into existence to establish exploitation-free governance for the Kols and they were assured to make the criminal court simple and easy. Later these Kols proved a significant source of inspiration in the freedom movement of India.

Bhoomij movement

In 1932, the Bhoomij movement started under the leadership of Ganga Narayan, the son of the landlord of Virbhoom. In history, it is known as ' Ganga Narayan Hungama'. The British government imposed so much revenue on them that they with the supports of Ho and Kol revolted against colonial government. All the tribes mentioned above played an important role in the 'Sipahi mutiny' of 1857. When the mutiny broke out, they were in the army in Chaibasa battalion. They plundered the treasuries of Ranchi and Doranda and opened the gate of the jail. They opposed the English in all possible ways for the safety of their rights.

Santhal movement

Among the revolts by the adivasis, the Santhal movement has a significant place because the people of this very region first started the revolt and played a key role in the revolution in 1857. The region from Bhagalpur to Rajmahal which was known as 'daman-e-koh' was the dwelling place of most of the Santhalis. Vexed with the non-tribes and the English, they unified themselves. The four sons of Chulu Santhal of Bhaganadih Siddhu, Kanhu, Chand and Bhairav encouraged the Santhals. Siddhu declared himself the incarnation of 'Thakur'. By 1854, the adivasis started organizing meetings to get rid of excessive revenue, social ban and several other economic troubles.

अंग्रेजों की नीति के कारण जमींदार बन बैठे और लगान नहीं चुकाने के कारण उनका सामाजिक तथा आर्थिक शोषण करना प्रारंभ कर दिए। बड़ी संख्या में हिन्दू, सिक्ख एवं मुसलमान व्यापारियों का प्रवेश इस क्षेत्र में हो चुका था, जिन्होंने धीरे-धीरे सूदखोर महाजन का कार्य करना प्रारंभ किया और धीरे-धीरे कोलों की जमीन उनके हाथ से निकलने लगी। ऐसी स्थिति में जल्द ही जमींदार और दिकू (गैर आदिवासी) के खिलाफ कोलों ने विद्रोह किया। इस विद्रोह की लपट पलामू क्षेत्र में फैलनी शुरू हुई।

अनुमानत: 800 से 1000 आदमी इस विद्रोह में मारे गए। जब कोल विद्रोह ने तीव्र रूप धारण कर लिया तब अंग्रेजों का ध्यान इस तरफ आकृष्ट हुआ। यद्यपि विद्रोह तो दबा दिया गया लेकिन अंग्रेजों को यह समझ में आ गया कि कोलों के समाज को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। इस विद्रोह का एक परिणाम तो यह अवश्य हुआ कि कोलों के लिए शोषण विहीन शासन की स्थापना हेतु 'साउथ वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी' कायम की गयी और फौजदारी न्यायालय को सरल एवं सहज बनाने का आश्वासन दिया गया। आगे चलकर ये कोल भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेरणा के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में साबित हुए।

भूमिज विद्रोह- सन् 1832 ई० में वीरभूम के जमींदार के पुत्र गंगा नारायण के नेतृत्व में भूमिज विद्रोह की शुरूआत हुई। यह 'गंगा नारायण हंगामा' के नाम से इतिहास में जाना जाता है। अंग्रेजी सरकार ने इनपर इतना अधिक राजस्व का बोझ डाला था कि उसके खिलाफ 'कोलों' एवं 'हो' के समर्थन से इन्होंने भी औपनिवेशिक शासन का विरोध किया। उपरोक्त सारी जनजातियों ने सन् 1857 ई० के सिपाही विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। जब विद्रोह शुरू हुआ तब ये चाइबासा के बटालियन की सेना में शामिल थे। इन्होंने राँची और डोरंडा के खजानों को लूटा तथा जेल के फाटक को खोल दिया। अंग्रेजों का हर सम्भव विरोध इन्होंने अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए किया।

संथाल विद्रोह : आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोहों में संथाल विद्रोह बहुत महत्वपूर्ण था, क्योंकि विद्रोह की पहली शुरूआत इसी क्षेत्र के लोगों द्वारा की गयी थी और यहीं के विद्रोहियों ने आगे चलकर सन् 1857 ई० की क्रांति को प्रभावित किया। भागलपुर से राजमहल के बीच का क्षेत्र, जो दामन-ए-कोह के नाम से जाना जाता था, संथाल बहुल क्षेत्र था। गैर आदिवासी एवं अंग्रेजों के अत्याचार से तंग आकर यहाँ के संथालों ने अपने आपको संगठित कर लिया। संथालों को उत्प्रेरित करने का कार्य भगनाडीह गाँव के चुलू संथाल के चार पुत्र-सिद्धू, कान्हू, चाँद और भैरव ने किया। सिद्धू ने अपने आपको ठाकुर का अवतार घोषित किया। सन् 1854 ई० तक आते-आते आदिवासियों ने चिरस्थाई प्रबन्ध द्वारा अत्यधिक राजस्व वसूली, सामाजिक प्रतिबन्ध और कई तरह के आर्थिक कष्टों से छुटकारा पाने के लिए कई सभाओं का आयोजन करना आरम्भ कर दिया

On 30th June 1855 10000 santhals from 400 villages gathered with their weapons and the order of Thakur was read out that they should revolt against the anarchy of landlords, money-lenders and government to establish their own system based on justice and religion that is the governance of Satyug. Sidhu and Kanhu declared freedom. It was said that there was no government or officer over them and the Santhali government was established. These adivasis held out procession in villages.

Sidhu

In July, 1855, on the call of men and women, the revolt of the Santhals started. Very soon about 60 thousands Santhalis collected with arms and weapons. Thousands of adivasis were told to be prepared for the revolt. It started with the murder of tyrannical police officer, Mahesh Lal in Disi. Government offices and the houses of money-lenders and Englishmen were attacked.

The main cause of Santhal's dissatisfaction was the railway project from Bhagalpur to Vardhwan. The contractros engaged a large number of labourers but did not pay them their proper wages. When they refused to work, they were beaten badly. The relels misbehaved with the railway contractors and project engineers because they used to compel them to work without proper wages, They disturbed railway services from Bhagalpur to Rajmahal. A great many Englishmen were killed. They attacked those people who were the supporters of non-tribals (dikus) and colonialism.

The British got afraid of the organised revolt of the adivasis and they suppressed them with the help of army called from Kolkata and Purnea. About 5000 Santhals along with Kanhu were killed. The British destroyed a great number of villages and brutally and imposed Marshall Law in disturbed areas. Siddhu was arrested with many other leaders. In this revolt, the Santhals showed unperishable spirit, but it failed because they had no modern technology of wars. They mostly fought with bows and arrows.

30 जून, 1855 को भगनाडीह गाँव में संथालों की एक सभा आयोजित की गयी। इसमें 400 गाँवों के 10,000 संथाल अपने अस्त्र-शस्त्र के साथ एकत्र हुए और सभा में ठाकुर का आदेश पढ़कर सुनाया गया। यह आदेश था-'जमींदारी, महाजनी तथा सरकारी अत्याचारों' का विरोध करना तथा अंग्रेजी शासन को समाप्त कर सतयुग का राज, न्याय और धर्म पर अपना राज करने के लिए खुला विद्रोह किया जाये। सिद्धू और कान्हू ने स्वतंत्रता की घोषणा भी की। यह कहा गया कि 'अब हमारे ऊपर कोई सरकार नहीं है, हाकिम नहीं है', संथाल राज्य स्थापित हो गया है। इन आदिवासियों ने मिलकर गाँवों में जुलूस निकाले।

सिद्धू

जुलाई, 1855 ई० में स्त्री एवं पुरुषों के आह्वान पर संथालों का विद्रोह आरम्भ हो गया। बहुत जल्द ही लगभग 60 हजार हथियार बंद संथालों को इकट्ठा कर लिया गया। इसके लिए हजारों आदिवासियों को तैयार रहने के लिए भी कहा गया। सशस्त्र विद्रोह का आरम्भ दीसी नामक स्थान में अत्याचारी दरोगा महेश लाल की हत्या से आरम्भ हुआ। सरकारी दफ्तरों, महाजनों के घर तथा अंग्रेजों की बस्तियों पर आक्रमण किया गया।

संथालों का सबसे बड़ा असंतोष भागलपुर से लेकर वर्द्धमान तक की रेल परियोजना थी। इसमें ठेकेदारों ने बड़े पैमाने पर मजदूरों को काम पर लगाया, पर उचित मजदूरी नहीं दी। फलतः संथालों ने काम करने से इन्कार कर दिया तब उन्हें बुरी तरह पीटा गया। विद्रोहियों ने रेल ठेकेदारों एवं परियोजना के इंजीनियरों के साथ बुरा व्यवहार किया क्योंकि वे उन्हें बेगार मजदूरी के लिए बाध्य करते थे। उनके द्वारा भागलपुर और राजमहल के बीच रेल सेवा भंग कर दी गयी। अनेक अंग्रेज मार डाले गए। संथालों ने उन सभी लोगों और व्यवस्थाओं पर हमला किया जो गैर आदिवासी (दिकू) और उपनिवेशवादी सत्ता के शोषण के खिलाफ थे।

आदिवासियों के इस तरह के संगठित विद्रोह से अंग्रेज डर गए और उन्होंने कलकत्ता तथा पूर्णिया से सेना बुलाकर इस विद्रोह को कुचल दिया। कान्हू सहित 5000 से अधिक संथाल मार दिए ग ए ।
अंग्रेजों की बर्बरता ने संथालों के गाँव के गाँव उजाड़ डाले और उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में मार्शल लॉ लागू किया गया। सिद्धू और अन्य नेता गिरफ्तार कर लिए गए। इस विद्रोह में संथालों ने अदम्य साहस का परिचय दिया, परन्तु फिर भी विद्रोह असफल हो गया, क्योंकि युद्ध की

When the revolution broke out in 1857, these Santhalis were with revolutionaries and helped them against the British. Though the Santhal movement brought about no remarkable changes in situation, the British adopted a new administrative policy for the region. In 1885, the 'ordinance 37' was passed and Santhal Paragana became a district. It was declared as 'excluded area' its and its administration came under the direct control of the Governor General.

Munda movement

Birsa Munda

In 1899-90, Munda adivasis in Chhotanagpur raised their voice against colonialism under the leadership of Birsa Munda. Birsa Munda was born on 15th November, 1874 in Ulihatu village near Tamar in Palamu district. From his very childhood, he was brilliant. He expressed his anxiety about the poverty and exploitation of adivasis and got angry with the landlords who were the supporters of colonial revenue, judicial system and exploitation policy. He was deeply influenced by religion and had firm faith in God. So in 1895, he declared himself as a messenger of God. On the basis of religious movement, he started equipping adivasis with arms and weapons, and made them aware of their rights. He awakened not only Mundas but also other tribes and unified them. On 25th December, 1899, he attacked Christian missioneries. On 8th January, 1900 the British government badly suppressed this movement. About 200 men and women were killed and 300 were captured. Several leaders were also arrested. The government announced an award of Rs. 500/- for his arrest and as a result, on 3rd March, 1900 Birsa Munda was arrested and in June he died of Cholera in Ranchi jail.

आधुनिक तकनीक इनके पास नहीं थी। ये अधिकांशत: तीर-धनुष से ही लड़ते थे। जब सन् 1857 की क्रांति की शुरूआत हुई तब ये संथाल विद्रोहियों के साथ थे और अंग्रेजों के खिलाफ उनका साथ दे रहे थे।

यद्यपि संथाल विद्रोह से आदिवासियों के जीवन तथा स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया लेकिन अंग्रेजी सरकार को इस क्षेत्र के लिए नयी प्रशासनिक नीति को अपनाना पड़ा। सन् 1885 ई० में 'अधिनियम 37' पारित किया गया जिसके अनुसार संथाल परगना जिला बनाकर उसे 'बहिर्गत क्षेत्र' (Encluded Area) घोषित किया गया और इसको प्रत्यक्ष रूप से गवर्नर जनरल के शासन के अधीन रखा गया।

बिरसा मुंडा

मुंडा विद्रोह - सन् 1899-1900 में छोटानागपुर में मुंडा आदिवासियों ने उपनिवेशवाद का विरोध किया। इस विद्रोह का नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर, 1874 को पलामू जिले के तमाड़ के निकट उलिहातु नामक गाँव में हुआ था। बचपन से ही वह कुशाग्र बुद्धि का था। उसने आदिवासियों की गरीबी और शोषण पर गहन चिंता व्यक्त की और इसके लिए औपनिवेशिक शासन के भू-राजस्व प्रणाली, न्यायप्रणाली एवं शोषणपूर्ण नीतियों का समर्थन करने वाले जमींदारों के प्रति आक्रोशित हुआ। उस पर धर्म का भी बहुत प्रभाव था तथा उसे ईश्वर में अटूट विश्वास था। अत: सन् 1895 ई० में उसने अपने आपको ईश्वर का दूत घोषित कर दिया। धार्मिक आन्दोलन के आधार पर बिरसा मुंडा ने सभी आदिवासियों को हथियार बन्द करना शुरू कर दिया और उन्हें उनके अधिकारों के प्रति सजग कराया। मुंडा जाति के बिरसा मुंडा साथ-साथ अन्य जनजातियों में भी उसने जागरूकता पैदा की और उन्हें संगठित किया। 25 दिसम्बर सन् 1899 ई० को उसने ईसाई मिशनरियों पर आक्रमण किया। 8 जनवरी सन् 1900 ई० को ब्रिटिश सरकार द्वारा इस विद्रोह को बुरी तरह कुचल दिया गया। 200 पुरुष एवं महिला मारे गए तथा 300 लोग बन्दी बना लिए गए। कई नेताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया। बिरसा मुंडा की गिरफ्तारी के लिए सरकार की तरफ से 500 रुपये इनाम की घोषणा की गयी और परिणामस्वरूप 3 मार्च सन् 1900 ई० को बिरसा मुंडा गिरफ्तार कर लिया गया और राँची जेल में जून, 1900 में हैजा से उसकी मृत्यु हो गयी।

Though the British government suppressed the movement of Birsa Munda, yet it had an impact on government. It was a warning to British government. So, the government made complete arrangement to remove dissatisfaction of Munda and other tribes. The result of Birsa's movement was that reasonable and responsible government came into action. Later, this movement proved a source of insipiration for Tana Bhagat movement (1914) who participated in freedom movement . The government did a lot to improve the conditions of the adivasis.

Kandh movement

Besides these tribal movements the Kandh movement of Orissa is also very remarkable. Kandh used to live in huge plateau region spreading from the Madras to Bengal. In this tribe, 'Mariaa Pratha' (Man killing tradition) was in vogue to get rid of miseries and troubles. In 1837, the British government tried to ban this. At that time, a leader named Chakra Bisoi opposed strongly and accused the British of interfering into the social and religious life of the adivasis. In 1857, the Kandh also raised weapons against the English.

The 'Bhuiyan' and 'Juang' tribes of Orissa also revolted against the feudalistic and suppressionist policy of the king. The flag of revolt was unfurled in 1867-68 under the leadership of Dharanidhar Nayak.

Revolts against colonialism started in many other states of India. In 1879-80, the adivasis revolted against excessive imposition of revenue and 'vetti pratha' (forcible labour tradition). Bhil and Gond tribes also revolted against the British government for their existence.

As a result, in 1935, the then legislative assembly passed the resolution of education and reservation for the adivasis. The Constitution of free India declared them backward class and made arrangement for reservation and other types of privileges for them in article 342. In 1952, the government implemented 'New Forest Policy' which has been amended from time to time. This is a significant step taken by the government for the proection of forests and the rights of adivasis.

ब्रिटिश सरकार की दमन नीति ने बिरसा मुंडा का विद्रोह तो कुचल दिया, लेकिन इस आन्दोलन का प्रभाव अंग्रेजी शासन पर महत्वपूर्ण रूप से पड़ा। ब्रिटिश सरकार के लिए यह एक चेतावनी थी। सरकार ने मुंडा एवं अन्य जनजातियों के असंतोष को दूर करने की ठोस व्यवस्था की । बिरसा आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि जनजातियों के बीच एक जिम्मेवार और उत्तरदायी शासन स्थापित हुआ। आगे चलकर यही आन्दोलन स्वंतत्रता आन्दोलन में भाग ले रहे ताना भगत के आन्दोलन (सन् 1914) का प्रेरणा स्रोत बना। आदिवासियों के लिए कई सुधारात्मक कार्य सरकार द्वारा किए गए।

कंध विद्रोह – उपर्युक्त विद्रोह के अलावे उड़ीसा राज्य का कंध विद्रोह भी बहुत महत्वपूर्ण है। कंध आदिवासी विशाल पहाड़ी क्षेत्र में रहते थे, जो तत्कालीन मद्रास प्रांत तथा बंगाल तक फैला था। इस जाति में विपत्तियों एवं आपदाओं से मुक्ति प्राप्त करने के लिए 'मरियाह प्रथा' (मानव बलि प्रथा) का प्रचलन था। सन् 1837 ई० में ब्रिटिश सरकार ने इसे रोकने का प्रयास किया। उस समय चक्र बिसोई नामक नेता ने इसका विरोध किया। चक्र बिसोई का जन्म घुमसार के ताराबाड़ी नामक गाँव में हुआ था। उसने अंग्रेजों पर आदिवासियों के सामाजिक एवं धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया और उनका प्रबल विरोध किया। सन् 1857 ई० की क्रांति में कंध आदिवासियों ने भी अंग्रेजों के खिलाफ सैन्य संचालन किया।

उड़ीसा के ही भुइयां एवं जुआंग आदिवासियों ने वहाँ के राजा की सामन्तवादी एवं दमनकारी नीति के खिलाफ विद्रोह किया। सन् 1867–68 ई० में धरनीधर नायक के नेतृत्व में विद्रोह का झंडा खड़ा किया गया।

भारत के अन्य वन्य प्रदेशों में भी औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ विद्रोह हुआ। सन् 1879–80 ई० में आंध्र प्रदेश के आदिवासियों ने अत्यधिक लगान वसूली के खिलाफ तथा 'वेट्टी प्रथा' (बलात मजदूर प्रथा) के खिलाफ विद्रोह किया। मध्य प्रांत के भील तथा गोंड जातियों ने भी अपने अस्तित्व के लिए ब्रिटिश शासन के प्रतिरोध में आन्दोलन किया।

परिणामस्वरूप, सन् 1935 ई० में तत्कालीन विधान सभा द्वारा जनजाति के लिए शिक्षा और आरक्षण का प्रस्ताव पारित किया गया। स्वतंत्र भारत के संविधान ने भारत की जनजातियों को धारा 342 में कमजोर वर्ग का दर्जा देकर उनके लिए सभी तरह की सुविधाएँ एवं आरक्षण की व्यवस्था की है। सन् 1952 ई० में सरकार ने 'नई वन नीति' बनायी जिसका समय–समय पर संशोधन भी किया जाता रहा है। यह वनों की रक्षा तथा आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए उठाया गया भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण कदम है।

Though the adivasis dwelling in forest society became free from the colonial exploitation, yet their movement did not stop. Only its forms was changed. These movements were transformed into regional movements and they started demanding separate states for them. On 1st November, 2000 the Government of India formed Chhatisgarh out of Madhya Pradesh and on 15th November, 2000 Jharkhand out of Bihar.

Thus we find that the tribes inhabiting in forest society struggled long against colonial exploitation which paved a way for reformative activities in future.

EXERCISE

I. Objective questions:

1. When was Indian Forest Act implemented?

a. 1864 b. 1865 c. 1885 d. 1874

2. When was Tilka Manjhi born?

a. 1750 b. 1774 c. 1785 d. 1850

3. When was Tamar movement started?

a. 1784 b. 1788 c. 1789 d. 1799

4. Where did 'Chero' tribes live ?

a. Ranchi b. Patna c. Bhagalpur d. Palamu

5. Which tribe formed 'South-West Frontier Agency' to establish a governance free from exploitation?

a. Chero b. Ho c. Kol d. Munda

यद्यपि वन्य समाज में जीवन व्यतीत करने वाले आदिवासी औपनिवेशिक शोषण से तो मुक्त हो गए लेकिन आंदोलन थमा नहीं, सिर्फ स्वरूप में परिवर्तन आ गया। यह आन्दोलन क्षेत्रवादी आन्दोलन में बदल गया और उन्होंने अलग राज्य की मांग करना शुरू कर दिया। भारत सरकार ने उनकी लम्बित माँगों को ध्यान में रखते हुए मध्य प्रदेश राज्य का पुनर्गठन करके 1 नवम्बर सन् 2000 ई० को आदिवासी बहुल क्षेत्र का एक पृथक राज्य छत्तीसगढ़ बनाया। इसी तरह 15 नवम्बर सन् 2000 ई० को बिहार राज्य का पुनर्गठन करके आदिवासी बहुल क्षेत्र झारखंड को एक अलग राज्य का दर्जा दे दिया गया।

इस तरह हम देखते हैं कि वन्य समाज में निवास करने वाली जनजातियों ने औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ एक संघर्षपूर्ण लड़ाई लड़ी, जिसने भविष्य में उनके लिए सुधार कार्यों का मार्ग प्रशस्त किया।

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय वन अधिनियम कब पारित हुआ ?

(क) 1864 (ख) 1865

(ग) 1885 (घ) 1874

2. तिलका मांझी का जन्म किस ई० में हुआ था?

(क) 1750 (ख) 1774

(ग) 1785 (घ) 1850

3. तमार विद्रोह किस ई० में हुआ था?

(क) 1784 (ख) 1788

(ग) 1789 (घ) 1799

4. 'चेरो' जनजाति कहाँ की रहने वाली थी?

(क) राँची (ख) पटना

(ग) भागलपुर (घ) पलामू

5. किस जनजाति के शोषण विहीन शासन की स्थापना हेतु 'साउथ वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी' बनाया गया था?

(क) चेरो (ख) हो

(ग) कोल (घ) मुण्डा

6. When was the Bhoomij movement started?
a. 1779 b. 1832 c. 1855 d. 1869

7. Who was the leader of the Santhal movement in 1855?
a. Shibu Soren b. Siddhu
c. Birsa Munda d. Mangal Pandey

8. When did Birsa Munda attack Christian missionaries?
a. 24 December, 1889 b. 25 December, 1899
c. 25 December 1900 d. 8 January, 1900

9. In which article of Indian constitution, the adivasis were declared backward class?
a. Article 342 b. Article 352
c. Article 356 d. Article 360

10. When did Jharkhand get the status of a state?
a. November, 2000 b. 15 November, 2000
c. 15 December, 2000 d. 15 November 2001

II. Fill in the blanks:

1. Most of the tribes live in _____.
2. In the 18th century, the forest society was divided into several _____.
3. _____ intruded in the forest society with the purpose of imparting education.
4. Dietrich Brandis, a German foreign expert established _____ in 1864.
5. _____ was the first Santhali who raised weapon on the English.
6. Ho tribes were the inhabitants of _____in Chhotanagpur.
7. The region from Bhagalpur to Rajmahal was called_____.
8. The Santhal movement broke out in _____.
9. Birsa Munda was born in _____.
10. Chhatisgarh was formed in _____.

6. भूमिज विद्रोह कब हुआ था?

(क) 1779 (ख) 1832

(ग) 1855 (घ) 1869

7. सन् 1855 के संथाल विद्रोह का नेता इनमें से कौन था ?

(क) शिबू सोरेन (ख) सिद्धू

(ग) बिरसा मुंडा (घ) मंगल पांडे

8. बिरसा मुंडा ने ईसाई मिशनरियों पर कब हमला किया ?

(क) 24 दिसम्बर 1889 (ख) 25 दिसम्बर 1899

(ग) 25 दिसम्बर 1900 (घ) 8 जनवरी 1900

9. भारतीय संविधान के किस धारा के अन्तर्गत आदिवासियों को कमजोर वर्ग का दर्जा दिया गया है ?

(क) धारा 342 (ख) धारा 352

(ग) धारा 356 (घ) धारा 360

10. झारखंड को राज्य का दर्जा कब मिला ?

(क) नवम्बर 2000 (ख) 15 नवम्बर 2000

(ग) 15 दिसम्बर 2000 (घ) 15 नवम्बर 2001

II. खाली जगहों को भरें :

1. जनजातियों की सर्वाधिक आबादी ..... में है।
2. अठारहवीं शताब्दी में वन्य समाज कई ..... में बँटा था।
3. वन्य समाज में शिक्षा देने के उद्देश्य से ..... ने घुसपैठ की।
4. जर्मन वन विशेषज्ञ डायट्रिच ब्रैंडिस ने सन् 1864 ई० ..... की स्थापना की।
5. ..... पहला संथाली था, जिसने अंग्रेजों पर हथियार उठाया।
6. 'हो' जाति के लोग छोटानागपुर के ..... के निवासी थे।
7. भागलपुर से राजमहल के बीच का क्षेत्र ..... कहलाता था।
8. सन् ..... ई० में संथाल विद्रोह हुआ ।
9. बिरसा मुंडा का जन्म ..... को हुआ था ।
10. छत्तीसगढ़ राज्य का गठन ..... को हुआ था ।

III. Short answer type question:

1. Throw light on the political status of the forest society.
2. How was the social life of the forest society?
3. How was the economic life of the forest society in the 18th century.
4. How did the Christian missionaries influence the forest society in 18th century?
5. What was the aim of 'Indian Forest Act'?
6. What do you mean by Chero movement?
7. What was Tamar movement?
8. Write about 'Chuar movement'.
9. What did Chakra Bisoi do for the tribes of Orissa?
10. What were the consequences of the regional movements of the tribes?

IV. Long answer type questions:

1. Throw light on the tribal life in India in the 18th century.
2. Who was Tilka Manjhi? What did he do for the tribal area?
3. What do you mean by Santhal revolt? What role did they play in the revolution of 1857?
4. Who was the leader of Munda movement? What did he do against colonial exploitation?
5. What are the reasons that compelled the English to adopt the policy of interference in the forest society?

III. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वन्य समाज की राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश डालें ।
2. वन्य समाज का सामाजिक जीवन कैसा था ?
3. अठारहवीं शताब्दी में वन्य समाज का आर्थिक जीवन कैसा था?
4. अठारहवीं शताब्दी में ईसाई मिशनरियों ने वन्य समाज को कैसे प्रभावित किया ?
5. 'भारतीय वन अधिनियम' का क्या उद्देश्य था ?
6. 'चेरो' विद्रोह से आप क्या समझते हैं ?
7. 'तमार' विद्रोह क्या था ?
8. 'चुआर' विद्रोह के विषय में लिखें।
9. उड़ीसा के जनजाति के लिए चक्र बिसोई ने क्या किए?
10. आदिवासियों के क्षेत्रवादी आन्दोलन का क्या परिणाम हुआ?

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अठारहवीं शताब्दी में भारत में जनजातियों के जीवन पर प्रकाश डालें ।
2. तिलका मांझी कौन थे? उसने आदिवासी क्षेत्र के लिए क्या किया ?
3. संथाल विद्रोह से आप क्या समझते हैं? सन् 1857 ई० के विद्रोह में उनकी क्या भूमिका थी ?
4. मुंडा विद्रोह का नेता कौन था । औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध उसने क्या किया ?
5. वे कौन से कारण थे, जिन्होंने अंग्रेजों को वन्य-समाज में हस्तक्षेप की नीति अपनाने के लिए बाध्य किया ?

CHAPTER – 7

EFFORTS FOR PEACE

The League of Nations

The First World War ended in 1918, but the problems created out of it was full of challenges for the victorious nations as well as the whole world. After the war all leaders of the world wanted peace. There was no institution in Europe which could hold dialogue between Nations and find peaceful solution which could prevent further wars. So, from the beginning of the war England, France, America and other countries emphasised on establishment of an international institution for maintaining peace and security in the world. But it was not possible in the tense atmosphere of war. After the end of World War, the League of Nations was formed in 1919 in Paris and its main credit goes to the then American president Woodrow Wilson, who underlined the necessity of formation of an international organisation in his fourteen point proposal. Finally, the League of nations came into existence on 10th June, 1920.

Objective of League of Nations

The objective of the League of Nations was to maintain international peace and peaceful solution to the problems created out of war. The organisation tried to create confidence towards internationalism and implement the treaties made before and after the war. To solve the social and economic problems, created by war, was among the priorities of the League of Nations.

इकाई-7

शांति के प्रयास

राष्ट्रसंघ (League of Nation):

प्रथम विश्व युद्ध 1918 ई० में समाप्त हुआ। परन्तु इस युद्ध की विभीषिका से उत्पन्न समस्याएँ विजित राष्ट्रों के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व के लिए चुनौती भरी थी। युद्ध के उपरांत संसार के सभी नेताओं की इच्छा थी कि विश्व में शांति की स्थापना हो। यद्यपि इस समय तक यूरोप में किसी ऐसी प्रभावशाली संस्था का अभाव था, जो पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों के झगड़ों का समाधान कर युद्ध को टालने का सार्थक प्रयास करती। अतः युद्ध के आरम्भ से ही इंग्लैण्ड, फ्रांस, अमेरिका आदि देशों ने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया कि विश्व में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का गठन हो। परन्तु युद्ध के तनाव भरे माहौल में यह संभव नहीं था। अतएव 1919 ई० में युद्ध की समाप्ति के उपरांत पेरिस में हुए शांति-सम्मेलन में राष्ट्र-संघ की स्थापना की नींव पड़ी। इसका मुख्य श्रेय अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति 'वुड्रो विल्सन' को जाता है, जिन्होंने अपने '14 सूत्री' प्रस्तावों में किसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना की अनिवार्यता पर बल दिया। अंततः विभिन्न योजनाओं को मिलाकर 10 June 1920 ई० को राष्ट्रसंघ (League of Nations) अस्तित्व में आया।

राष्ट्रसंघ के उद्देश्य :

राष्ट्रसंघ की स्थापना का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना तथा युद्ध से उत्पन्न समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान करना था। इसी के निमित्त राष्ट्रसंघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीयता के प्रति विश्वास पैदा करने तथा युद्ध के पूर्व एवं बाद में की गई संधियों को लागू करवाने का प्रयास किया गया। युद्धजनित आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं को दूर करना भी राष्ट्रसंघ की प्राथमिकताओं में शामिल था।

Member countries of League of Nations

As the organisation was established after war so initially only victorious or Allied countries (France, England, Russia etc.) and few nations that remained neutral during the war were members of the organisation. Number of the member countries was about 31. Later on the number increased to 60. To acquire membership of League of Nations, it was compulsory for a country to be independent and sovereign and two-third member of League of Nations had to agree to include it into the organisation.

10th meeting of League of Nations at Geneva

Organs of League of Nations

In the first section of League of Nations, there was a list of member nations and in the second section there was mention of its three main organs.

- The General Assembly
- The Council
- The Secretariat

In addition to this, International Court and International Labour organisation were the other essential wings.

राष्ट्रसंघ के सदस्य राष्ट्र :

चूँकि इस संस्था की स्थापना युद्ध के उपरांत हुई थी। फलतः प्रारम्भ में इसमें विजित अर्थात् मित्र राष्ट्र (फ्रांस, इंग्लैण्ड, रूस आदि) तथा युद्ध के दौरान तटस्थ रहने वाले कुछ राष्ट्र ही शामिल थे जिनकी संख्या 31 के करीब थी। बाद में इसके सदस्यों की संख्या 60 हो गई। राष्ट्रसंघ की सदस्यता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक था कि वह देश स्वतंत्र तथा प्रभुत्वसम्पन्न हो तथा राष्ट्रसंघ के दो तिहाई सदस्य उसे संघ में शामिल करने पर सहमत हों।

जेनेवा में राष्ट्रसंघ की 10 वीं बैठक

राष्ट्रसंघ के अंग :

राष्ट्रसंघ की प्रथम धारा में सदस्य राष्ट्रों की सूची एवं दूसरी धारा में इसके तीन प्रमुख अंगों की चर्चा थी–

- व्यवस्थापिका सभा (असेम्बली)
- परिषद् (काउन्सिल)
- सचिवालय (सेक्रेटेरियट)

इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन आदि भी प्रमुख अंग थे।

There were various commissions such as Security Commission, Military Commission, etc. for successful disposal of different functions under the League of Nations.

Assembly:

It was Assembly of the representation of the League of Nations in which the representatives of the member countries remained present. Each nation had right to cast one vote. The working language of Assembly was French and English. The function of the Assembly was to accord membership to the new nations, review and amendment of the rules of the League of Nations, approval of the appointments of judges of International Court of Justice and the Secretary General, etc. The Assembly did not interfere with internal matters of a nation. But there was discussion and debate over international issues. All decisions were taken by passing a resolution through majority.

The Council

The role of the Council was like an Executive Council. It comprised of two types of members; permanent and temporary. England, France, Japan and Italy were its founder as well as permanent members. Later on Germany and Russia also got its permanent membership. Nine small states were its temporary members. The Assembly had right, like Executive Council, to discuss all subjects and take concrete decision under the aegis of the League of Nation. In this context its roles and functions were stronger than the Assembly. The administration of the minority dominated area of 'Saar' and 'Danzing' in Germany, to take decision on important issues related to war and peace. Passing orders for members and nomination of the Secretary General etc. were the important functions of the Assembly.

America was among its founder members, but did not join later . so initially there were only four permanent members. later it was expanded .

The Secretariat

A secretariat was formed for administrative work of the League of Nations with its headquarter at Geneva. Under the secretariat there were 12 departments that worked on the economic, political and diplomatic problems of international level. It prepared regulation and protocol of all treaties related to the member countries of the League of Nation.

राष्ट्रसंघ के अंतर्गत विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक निष्पादित करने के लिए विविध आयोग जैसे–संरक्षण आयोग, सैनिक आयोग आदि थे।

व्यवस्थापिका सभा : (असेम्बली) यह राष्ट्रसंघ की प्रतिनिधि सभा थी, जिसमें सदस्य देशों के प्रतिनिधि उपस्थित रहते थे। प्रत्येक राष्ट्र को एक वोट देने का अधिकार था। सदन के कार्य करने की भाषा फ्रेंच तथा इंग्लिश थी। इसके कार्यों के अंतर्गत नये राष्ट्रों को सदस्यता प्रदान करना, राष्ट्रसंघ के विधान की समीक्षा तथा संशोधन करना, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों एवं महासचिव की नियुक्ति पर अंतिम अनुमोदन आदि करना था। असेम्बली किसी भी राष्ट्र के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करती थी। यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर वाद–विवाद एवं विचार–विमर्श होता था, सभी निर्णय प्रस्ताव पारित कर बहुमत से लिये जाते थे।

परिषद् :– (काउन्सिल)– इसकी भूमिका कार्यकारिणी परिषद् के रूप में थी। इसमें दो तरह के सदस्य होते थे स्थाई और अस्थाई। इंग्लैंड, फ्रांस, जापान तथा इटली इसके संस्थापक एवं स्थायी सदस्य थे। बाद में जर्मनी तथा रूस को भी इसमें स्थायी सदस्यता मिली। अस्थाई सदस्य के रूप मे 9 छोटे–छोटे राज्य थे। परिषद् को व्यवस्थापिका सभा की तरह यह भी अधिकार था कि वह राष्ट्रसंघ के उद्देश्यों के अंतर्गत सभी विषयों पर विचार करे और कोई ठोस कदम उठाये। इस संदर्भ में उसकी कार्य एवं भूमिका एसेम्बली से भी अधिक प्रभावशाली थी। जर्मनी के सार तथा डानजिंग क्षेत्रों जिसमें अल्पसंख्यक निवास करते थे, के प्रशासन का कार्य, युद्ध एवं शांति से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर निर्णय लेना, सदस्यों को आदेश देना एवं महासचिव को मनोनीत करना आदि इसके प्रमुख कार्य थे ।

> अमेरिका इसके संस्थापक सदस्यों में था, परन्तु इसने इसकी सदस्यता स्वीकार नहीं की। इस प्रकार प्रारंभ में चार स्थायी सदस्य ही रहे, जिसका बाद में विस्तार हुआ ।

सचिवालय :– राष्ट्रसंघ के प्रशासकीय कार्यों के लिए एक सचिवालय कायम किया गया था। जिसका प्रधान कार्यालय 'जेनेवा' में था। इसके अंतर्गत 12 विभाग थे जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आर्थिक, राजनैतिक एवं कूटनीतिक मसलों पर कार्य करती थी। यह उन सभी संधियों का पंजीकरण एवं मसविदा तैयार करती थी जिसका संबंध राष्ट्रसंघ के सदस्य राष्ट्रों से होता था।

International Court

The objective of the section of the International Court was to resolve various international political and diplomatic disputes and controversies. The headquarter of the International Court was at Hague, a city in Holland (modern Netherlands). The court used to give opinion to the General Assembly on the important issues and explain various rules of the League of Nations. But its discussions were not obligatory.

International Labour Organisation

The period of the First World War (1914-1918) was a period of the development of socialist and labours labourers movement in Europe. Due to the need of surplus production during war the importance of industrial labourers increased. It got support from the Russian Revolution of 1917 (Bolshevik Revolution) and thus need for the betterment of the miserable economic and social condition of the labourers of European countries was felt. So after the war the International Labour organisation was founded for the sake of labourer's interest and improvement of their condition. It's headquarter was in Geneva.

The peace efforts of the League of Nations

The objective of the establishment of the League of Nations was international peace and mutual cooperation. Though these functions were primarily the part of political activities, yet its socio-economic aspects were also important. Even though the League of Nations did not succeed in solving international disputes, disarmament and control over aggressive nations, but it played a commendable role in removing the problems created due to war. The League of Nations did many important work in this regard. As the primary function of the League of Nations was to control wars, so it was successful in resolving some early minor disputes. In a very short period of 10-15 years the League resolved about 40 small and big political issues and gave its decision. They were related to conciliation, mediation and request by the League of Nations.

Role in resolving the international disputes

The League of Nations was successful in resolving thedispute between Sweden and Finland regarding Auland Island in 1920.

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय :- अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना का उद्देश्य विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक एवं कूटनीतिक झगड़ों एवं विवादों का निपटारा करना था, जिसका मुख्यालय हॉलैंड (आधुनिक नीदरलैंड) के एक शहर हेग में स्थापित किया गया। यह असेम्बली को महत्वपूर्ण मसलों पर राय तथा राष्ट्रसंघ के विभिन्न विधानों की व्याख्या भी करती थी। परन्तु इसके निर्णय बाध्यकारी नहीं थे।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन :- प्रथम विश्व युद्ध का काल (1914-1918) यूरोप में समाजवादी तथा मजदूर आन्दोलन के विकास का काल था। क्योंकि युद्ध में अधिशेष उत्पादन की आवश्यकता ने औद्योगिक श्रमिकों की महत्ता को बढ़ा दिया था। इसे 1917 की रूसी क्रांति (बोल्शेविक क्रांति) से भी बल मिला और इस तरह यूरोपीय देशों में मजदूरों की दयनीय आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। अतएव युद्ध के बाद राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में मजूदरों के हितों की देखरेख तथा उनकी दशा सुधारने के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय जेनेवा में था।

राष्ट्रसंघ द्वारा शांति के प्रयास: राष्ट्रसंघ की स्थापना का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और परस्पर सहयोग था। यद्यपि ये कार्य मुख्यत: राजनैतिक गतिविधियों के अंग थे, तथापि इसके आर्थिक एवं सामाजिक पक्ष भी कम नहीं थे। राजनैतिक गतिविधियों यथा-अंतर्राष्ट्रीय विवादों को हल करने, नि:शस्त्रीकरण एवं आक्रमणकारी राष्ट्रों पर अंकुश लगाने में भले ही राष्ट्रसंघ असफल रहा हो, परंतु युद्धजनित समस्याओं को समाप्त करने में राष्ट्रसंघ की काफी सराहनीय भूमिका रही। इस संदर्भ में राष्ट्रसंघ ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। चूँकि राष्ट्रसंघ का प्रथम कार्य युद्ध की परिस्थिति को रोकना था, अत: प्रारम्भिक छोटे-मोटे झगड़ों को सुलझाने में राष्ट्रसंघ सफल रहा। अपने 10-15 वर्षों की छोटी अवधि में ही इसने लगभग 40 छोटे-बड़े राजनीतिक झगड़ों की जाँच कर अपना निर्णय दिया। इसमें राष्ट्रसंघ द्वारा समझौता, मध्यस्थता तथा अनुरोध की नीति का अवलम्बन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय विवादों को सुलझाने में भूमिका :- इस कार्य में राष्ट्रसंघ के प्रयास सराहनीय एवं सफल कहे जा सकते हैं। जैसे- 1920 में स्वीडेन और फिनलैंड के मध्य उठे ऑलैंड द्वीप विवाद, जर्मनी एवं पोलैंड के मध्य उठे साइलेशिया विवाद तथा लिथुआनिया की

the Silesia dispute between Germany and Poland and the dispute over Vilna, the capital of Lithuania, between Poland and Lithuania.

In the Greek and Bulgaria war in 1995 the League of Nation prevented the expansion of war in Balkan region by putting pressure over Greece. It was the biggest achievement of the League of Nations. Similarly, the right of Peru over the city of neighbouring state Columbia was declared unjust and Columbia got that region back. The policy of referendum and international pressure was adopted for resolving the above problems.

But due to ineffective role of the League of Nations, over many international problems, the pretentious countries got strength, as in 1931 China became prey to Japanese imperialist policy and inspite of the initiatives of the League of Nations, Japan did not withdraw its troops from Manchuria state of China. The imperialist ambition of the Italian dictator Mussolini got strength from the failure of Manchurian crisis and he attacked African country Abyssinia and included it in his territory. The League of Nations imposed economic sanction over Italy at the protest of Abyssinia. But it did not make much impact and thereby the weaknesses of the League of Nations were exposed.

Consequently, small nations started to loose faith in the League of Nations. Being encouraged by the victory of Mussolini in Abyssinia, Hitler started defying treaty of Versailles. He annexed Czechoslovakia in 1938, and as soon as he attacked Poland on 1st September, 1939, the Second World War began. The supporters of democracy were defeated in the Spanish Civil War in 1936 because of the intervention of Hitler and Mussolini. The League of Nations remained mere spectator of this intervention. It was a heavy blow to the ideals of democracy and a furor of war began under the leadership of autocrats. In addition to that, powerful nations, like England and France openly came into support of Italy in Greek-Italy conflict. The intervention of powerful nations on various international issues raised questions on the relevance of the League of Nations.

Though military rivalry between Germany and France was responsible for the failure of disarmament conference held in 1932, the League of Nations did not take any effective measure to make it successful. Thus the League of Nations remained unsuccessful in solving other political and international problems. This failure finally gave birth to the circumstance of the Second World War.

राजधानी विलना (Vilna) को लेकर पोलैंड एवं लिथुआनिया के मध्य विवाद को सुलझाने में राष्ट्रसंघ सफल रहा।

1995 ई० में यूनान और बुल्गारिया के मध्य शुरू हुए युद्ध में यूनान पर दबाव बनाकर राष्ट्रसंघ ने बालकन क्षेत्र में युद्ध के विस्तार को रोक दिया। यह राष्ट्रसंघ की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। इसी तरह पेरू द्वारा पड़ोसी राज्य कोलम्बिया के नगर पर अधिकार को राष्ट्रसंघ ने अनुचित बताया और पुनः यह क्षेत्र कोलम्बिया को वापस प्राप्त हुआ। उपर्युक्त समस्याओं के समाधान में जनमत संग्रह एवं अंतर्राष्ट्रीय दबाव की नीति को अपनाया गया।

परन्तु अनेक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर राष्ट्रसंघ की प्रभावहीन भूमिका से महत्वाकांक्षी राष्ट्रों को बल मिला, जैसे–1931 में जापान की साम्राज्यवादी नीति का शिकार चीन बना और राष्ट्रसंघ के हस्तक्षेप के बावजूद भी चीन के प्रांत मंचूरिया से जापान ने अपने सैनिक वापस नहीं बुलाए। मंचूरिया संकट की असफलता से इटली के तानाशाह 'मुसोलिनी' की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को बल मिला और इस क्रम में उसने अफ्रिकी देश अबीसीनिया पर आक्रमण कर उसे अपने क्षेत्र में मिला लिया। अबीसीनिया के विरोध करने पर राष्ट्रसंघ ने इटली पर आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए। परन्तु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इससे राष्ट्रसंघ की कमजोरी उजागर हुई ।

फलस्वरूप छोटे–छोटे राष्ट्रों का भी विश्वास राष्ट्रसंघ से उठने लगा। अबीसीनिया में मुसोलिनी की विजय से प्रोत्साहित होकर हिटलर ने वर्साय की संधि की अवहेलना करनी शुरू कर दी। 1938 में उसने चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया और 1 September 1939 को जैसे ही पोलैंड पर आक्रमण किया, द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। 1936 ई० के स्पेनिश गृहयुद्ध में हिटलर तथा मुसोलिनी के हस्तक्षेप से प्रजातंत्र के समर्थकों की पराजय हुई। इस हस्तक्षेप को राष्ट्रसंघ ने असहाय बनकर देखा। यह प्रजातंत्र के आदर्शों पर कुठाराघात था, जिससे अधिनायकवाद के नेतृत्व में युद्धोन्माद कायम हुआ। इसके अतिरिक्त यूनान–इटली संघर्ष में इंग्लैंड तथा फ्रांस जैसे शक्तिशाली राष्ट्र खुलकर इटली के समर्थन में आ गए। शक्तिशाली राष्ट्रों की विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर हस्तक्षेप की नीति ने राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया।

यद्यपि 1932 ई० में हुए निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की असफलता में जर्मनी तथा फ्रांस की सैन्य प्रतिस्पर्द्धा जिम्मेवार थी परन्तु इसे सफल बनाने में राष्ट्रसंघ ने भी कोई सार्थक प्रयास नहीं किया। इस तरह अन्य राजनैतिक एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी सुलझाने में राष्ट्रसंघ असफल रहा। इस असफलता ने अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियों को जन्म दिया।

Success of the League of Nations in other sectors

Inspite of political failures the League of Nations played commendable role in other sectors. These tasks were mainly related to public welfare. The League of Nations played leading role in solving the problems of prisoners of wars and making them free from the torture-camps as well as rehabilitating the displaced and refugees after the war. The League of Nations got immense success in controlling epidemics and deathful infectious diseases. Various organisation of the League of Nations helped to improve the economic condition of many war affected nations of Europe. The League of Nations achieved tremendous success in solving social problems such as ending slavery system, stopping sale and purchase of women, reducing unreasonable trade of opium, protecting minorities, and establishing cooperation among political and social sectors on the basis of internationalism. The international labour organisation, founded under the aegis of the League of Nations, performed many commendable tasks. The organisation managed different types of facilities for all the labourers of the world. The working hours and remuneration were fixed. The most significant achievement of the League of Nations was its contribution towards proper regulation and moderation of international law.

Causes of the failure of the League of Nations

The great effort of the League of Nations for international peace and mutual cooperation ended in a very short time, as the Second World War erupted in 1918, only after 21 years of the Frist World War. There were many reasons of that:

The practical success of the League of Nations in the then international politics depended on the big and powerful nations. But from the very beginning the League of Nations remained deprived of this support. The League of Nations was founded due to continuous effort of the then American president Woodrow Wilson. But later on America was not a member of this organisation itself. The separation of powerful nations from this international level organisation was also a cause of its failure.

अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रसंघ की सफलता : इन राजनीतिक असफलताओं के बावजूद राष्ट्रसंघ ने अन्य क्षेत्रों में काफी सराहनीय भूमिका निभाई। ये कार्य मुख्य रूप से जनकल्याण से संबंधित थे। युद्धबंदियों की समस्या तथा उन्हें यातनागृहों से मुक्त कराने, युद्ध के उपरांत विस्थापितों एवं शरणार्थियों के पुनर्वास के कार्यों में राष्ट्रसंघ की भूमिका अग्रणी थी। राष्ट्रसंघ ने महामारियों एवं भीषण संक्रामक रोगों को रोकने में भी काफी सफलता प्राप्त की। युद्ध से ग्रसित यूरोप के कई राष्ट्रों की आर्थिक दशा सुधारने में राष्ट्रसंघ के विभिन्न संगठनों ने सहायता की। सामाजिक समस्याओं के निराकरण, जैसे दासप्रथा को समाप्त करने, स्त्री के क्रय-विक्रय को रोकने, अफीम के अनुचित प्रयोग को कम करने, अल्पसंख्यकों की रक्षा करने, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीयता के आधार पर सहयोग स्थापित करने में राष्ट्रसंघ ने अद्‌भुत सफलता प्राप्त की। राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अनेक प्रशंसनीय कार्य किये। उसने संसार के सभी मजदूरों के लिए अनेक प्रकार की सुविधाओं की व्यवस्था करवायी। उनके काम के घंटों और पारिश्रमिक को निश्चित करवाया। राष्ट्रसंघ की सबसे महत्वपूर्ण सफलता अंतर्राष्ट्रीय विधि को समुचित ढंग से नियमबद्ध करने की दिशा में योगदान देना था।

राष्ट्रसंघ की असफलता के कारण : राष्ट्रसंघ के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति एवं परस्पर सहयोग का जो महान् प्रयास था, वह अल्पकाल में ही समाप्त हो गया। क्योंकि 1918 ई० में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के महज 21 वर्ष बाद ही द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया। इसके अनेक कारण थे-

तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में इसकी व्यावहारिक सफलता बड़े एवं शक्तिशाली राष्ट्रों के सहयोग पर निर्भर करती थी। परन्तु राष्ट्रसंघ प्रारम्भ से ही इस सहयोग से वंचित रहा। संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन के अनवरत प्रयासों के फलस्वरूप राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई थी। परन्तु बाद में अमेरिका स्वयं इसका सदस्य नहीं रहा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस संस्था से शक्तिशाली राष्ट्रों का अलगाव भी इसकी असफलता के कारण थे।

In the beginning Russia was kept out from its active membership but when the European countries became stunned by the ambitious activities of Hitler, Russia was included in the League of Nations in order to maintain the balance of power. But by then League of Nations had become an ineffective organisation. Germany was included in the League of Nations through the treaty of Locarno in 1925. But its faithfulness was not to be trusted because the League of Nations was an integral part of the treaty of Versailles, and Hitler had taken pledge to annihilate that Treaty. The policy of fascism of Mussolini, the autocrat ruler of Italy, had no faith in world peace at all. Mussolini believed that war was very important for the progress of human civilization.

Now, in such a situation, the effectiveness of the League of Nations depended only on the support of Britain and France but they were not interested in making the policies of the League of Nations successful. They were rather more interested in fulfilling their interests of imperialism and capitalism, and so they misused the League of Nations to achieve their objectives.

The despotic and aggressive policy of powerful nations weakened the League of Nations. As all the nations opposed the Italian aggression on Abyssinia and demanded economic sanction on Italy, but the warning of Mussolini stopped England and France to act in this direction. This clearly exposed the weakness of the League of Nations. There was no opposition to the defying policy in the League of Nations. The sense of mutual non-cooperation among the members of League gave strength to the aggressive policy of Hitler. Actually, Hitler observed the reaction to each of his steps and having not seen any large scale opposition, he continued expansion of his empire.

The global economic depression of 1929-30 drew attention of all nations towards their economic interests. Economic nationalism arose out of it, proved irrelevant to the principles of the League of Nations, international peace and mutual non-cooperation. In addition to it, lack of its own military and faulty constitution the, League of Nations was not able to make its sanctions effective. All these were responsible for the failure of the League of Nations.

जैसे–प्रारम्भ में इस संस्था की सक्रिय सदस्यता से सोवियत रूस को अलग रखा गया परन्तु हिटलर की महत्वाकांक्षी कार्यों से जब यूरोपीय राष्ट्र परेशान होने लगे तो शक्ति संतुलन के लिए सोवियत रूस को राष्ट्रसंघ में शामिल किया गया। परन्तु तब तक राष्ट्रसंघ एक प्रभावहीन संस्था बन गयी थी। 1925 के लोकार्नो की संधि के माध्यम से जर्मनी को राष्ट्रसंघ में शामिल किया गया। परन्तु उससे कभी वफादारी की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। क्योंकि राष्ट्रसंघ उस कठोर वर्साय की संधि का एक अभिन्न अंग था, जिसको हिटलर ने मिटाने का संकल्प कर रखा था। इटली के तानाशाह शासक मुसोलिनी की फासिस्टवादी नीतियों को विश्व शांति में कतई विश्वास नहीं था। मुसोलिनी मानव सभ्यता की प्रगति के लिए युद्ध को आवश्यक मानता था। इस परिस्थिति में केवल ब्रिटेन और फ्रांस के सहयोग पर ही राष्ट्रसंघ की क्रियाशीलता निर्भर करती थी। परन्तु उनकी इच्छा राष्ट्रसंघ की नीतियों एवं उद्देश्यों को सफल बनाना कम वरन् अपने साम्राज्यवादी एवं पूँजीवादी हितों को पूरा करना अधिक था और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इन्होंने राष्ट्रसंघ का दुरुपयोग भी किया।

शक्तिशाली राष्ट्रों की निरंकुश एवं आक्रामक नीति ने राष्ट्रसंघ को कमजोर किया। जैसे– अबीसीनिया पर इटली के आक्रमण का सभी राष्ट्रों ने विरोध किया तथा इटली पर आर्थिक प्रतिबंध की मांग की गई। परन्तु मुसोलिनी की धमकी ने फ्रांस तथा इंग्लैंड को ऐसा करने से रोका। इससे राष्ट्रसंघ की निर्बलता स्पष्ट रूप से उजागर हुई। हिटलर की अवहेलनापूर्ण नीति का राष्ट्रसंघ में कोई विरोध नहीं हुआ। संघ के सदस्यों के मध्य परस्पर असहयोग की भावना ने हिटलर की आक्रमणकारी नीति को बल प्रदान किया। वस्तुत: हिटलर अपनी प्रत्येक कदम की प्रतिक्रिया का अवलोकन करता था और इसका व्यापक प्रतिरोध न देखकर साम्राज्य विस्तार करता रहा।

1929–30 की विश्व आर्थिक मंदी ने सभी राष्ट्रों को अपने देश की आर्थिक हितों की ओर आकृष्ट किया। इससे उत्पन्न आर्थिक राष्ट्रवाद ने राष्ट्रसंघ के सिद्धान्तों 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और परस्पर सहयोग' को अप्रासंगिक बना दिया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रसंघ की अपनी सेना का नहीं होना तथा राष्ट्रसंघ का दोषपूर्ण संविधान, जिसके कारण उसके लगाए गए प्रतिबंध प्रभावी नहीं हो पाते थे, उसकी असफलता के कारण थे।

If the success and failure of the League of Nations is evalualed, barring its failure in some important political issues; its initiative of novel tradition of international cooperation and amity are a source of motivation for the present international politics. It showed a new path to the international politics by removing the demerits of hidden diplomacy. Later on, the establishment of the United Nations Organisation after the Second World War was a consequence of experiment and experiences acquired through it.

United Nations Organisation (UNO)

After the Second World War the need of maintaining peace was felt more than the First World War. The war proved more dreadful and baneful as atomic weapons were used. The Allied hopeful of victory, prior to the end of war, decided to establish an international organisation that would not be ineffective and faulty like the League of Nations rather thoroughly powerful, so that no menace emerge to the world peace. The establishment of the UNO after the Second World War was result of this development.

Just after the end of Second World War a poster of UNO in favour of international cooperation and support

- James Palace declaration 12th June, 1941.
- Atlantic Charter 14th August, 1941
- United Nations declaration 1st January, 1942
- Moscow declaration October, 1943
- Tehran declaration December, 1943
- Yalta Conference Feb. 1944 (U.S.S.R.)

These declarations paved the way for establishment of United Nations Organisation.

अपनी सफलता और असफलता के आलोक में राष्ट्रसंघ का यदि मूल्यांकन किया जाए तो भले ही वह कुछ महत्वपूर्ण राजनैतिक मामलों में असफल रहा हो, परन्तु उसने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सौहार्द्र की जो नई परम्परा का सूत्रपात किया, वह वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। इसने गुप्त कूटनीति के दुर्गुणों को दूर कर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को एक नया मार्ग दिखाया। आगे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना इसी से प्राप्त अनुभव और परीक्षण का परिणाम था।

संयुक्त राष्ट्रसंघ [United Nation Organization (U.N.O.)]:

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शांति स्थापित करने की आवश्यकता प्रथम विश्वयुद्ध से अधिक महसूस की गई। यह युद्ध अधिक भयंकर और संहारक साबित हुआ, जिसमें आण्विक हथियारों का भी प्रयोग हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पूर्व ही मित्र राष्ट्रों ने अपनी विजय की आशा रखकर पुनः एक ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना करने का निश्चय किया, जो राष्ट्रसंघ की भाँति असमर्थ और त्रुटिपूर्ण न होकर पूरी तरह शक्तिशाली हो। ताकि विश्व शांति पर फिर से खतरा उत्पन्न न हो। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना इसी का परिणाम था।

ख जेम्स पैलेस घोषणा- 12 June 1941
ख एटलांटिक चार्टर- 14 August-1941
ख संयुक्त राष्ट्र घोषणा - 1 January-1942
ख मास्को घोषणा - October-1943
ख तेहरान घोषणा - December-1943
ख याल्टा सम्मेलन - February 1944 (U.S.S.R)

इन घोषणाओं के माध्यम से संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के ठीक पश्चात संयुक्त राष्ट्रसंघ के स्थापनार्थ एक पोस्टर-अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समर्थन के पक्ष में

Churchill, Roosevelt and Stalin in Yalta Conference; February, 1945

Background of establishment of United Nations Organisation and SanFransisco Conference

In 1944 during a meeting at Dumbarton Oaks in Washington D. C. of the U.S.A. such an organisation was visualized that contained many elements of the League of Nations. But there was inclusion of some ideas where lesson could be taken from the shortcomings of the League of Nations. The representative members of the Allied Countries America, Great Britain and Russia assembled in the conference. The new charter was accepted at the conference that began on 25th April, 1945 in the city of SanFransisco, in America. On 26th June, 1945 the representative of fifty countries, including India, signed the charter. On 24th October, 1945 all its conditions were accepted and on the same date the United Nations Organisation came into existence. The organisation was named by Franklin D. Roosevelt, the then President of America.

फरवरी 1945 के याल्टा सम्मेलन में चर्चिल, रूजवेल्ट एवं स्आलिन

संयुक्त राष्ट्रसंघ के स्थापना की पृष्ठभूमि और सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन :-

1944 ई० में संयुक्त राज्य अमेरिका के वाशिंगटन डी०सी० में स्थित 'डॉम्बस्टन ओक्स' नामक स्थान पर हुई बैठक में ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन की कल्पना की गई, जिसमें राष्ट्रसंघ के बहुत से तत्व पाये जाने थे। परन्तु साथ में कुछ ऐसे विचारों का समावेश भी किया गया जिनसे राष्ट्रसंघ की त्रुटियों से सबक लिया जा सके। इसमें मित्र राष्ट्रों के सदस्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और रूस के प्रतिनिधि एकत्रित हुए। अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को शहर में 25 अप्रैल, 1945 में शुरू हुए सम्मेलन में इसके नए चार्टर को स्वीकार किया गया। 26 जून, 1945 को भारत सहित पचास राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए। 24 अक्टूबर, 1945 को इसके सभी शर्त स्वीकार कर लिए गए एवं इसी तिथि को 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' अस्तित्व में आया। इसका नामकरण अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट द्वारा किया गया।

The emblem of United Nations Organisation, the world map is surrounded by two olive branches

Aims and Objectives of United Nations Organisation (UNO)

The aims and objectives of UNO is mentioned in the articles of its charter, in which the following important objectives were inherent.

1. To maintain peace, to check aggression and solve international disputes peacefully.
2. To make friendly relations among the world nations stronger on the basis of the principles of self-determination and equity.
3. To acquire international support to solve the economic, social and cultural problems of various nations and arouse a sense of respect and honour among nations towards human rights and freedom.
4. To make United Nations Organisation such a centre where harmony and balance could be established among the functioning to achieve the goals.

Charter:

The constitution of the organisation of the United Nations is called the Charter. It has III sections. According to which the united nations operates

संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रतीक चिह्न जिसमें जैतून की डालियों के बीच विश्व का मानचित्र है

संयुक्त राष्ट्रसंघ के लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्य उसकी चार्टर की धाराओं में उल्लिखित है जिसमें निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निहित थे–

1. शांति स्थापित करना, आक्रमण को रोकना और अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण ढंग से निपटारा करना।
2. आत्मनिर्णय और समानता के सिद्धान्तों के आधार पर संसार के राष्ट्रों के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करना।
3. विभिन्न राष्ट्रों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना एवं मानवीय अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति राष्ट्रों में सम्मान और प्रतिष्ठा की भावना उत्पन्न करना।
4. संयुक्त राष्ट्रसंघ को एक ऐसा केन्द्र बनाना जहाँ इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जानेवाली कार्यवाही में तालमेल और सामंजस्य स्थापित किया जा सके।

चार्टर:- संयुक्त राष्ट्रसंघ के संगठन के विधान को चार्टर कहते हैं। इसमें 111 धाराएँ हैं। जिनके अनुसार संयुक्त राष्ट्र संघ का संचालन होता है।

Principles of United Nations Organisation

To achieve the above mentioned goals and objectives few principles were prescribed in the charter. They are :-

- The organisation will be based on the principles of nations' equality.
- Every member nation will honour the charter of United Nations Organisation and will not violate it.
- All member nations will settle their quarrels and disputes peacefully.
- Member of the organisation will not destroy the freedom and territorial integrity of any other nation by aggression or any other ways.
- Any nation that violates the rules of charter will not get any support from any member nation.
- If any non-member country will try to disturb peace, the organisation will act against that country
- United Nations Organisation will not interfere in internal matters of any member nation.

The feeling of world peace, security and co-existence is inherent in the above objective and principles of United Nations Organisation. It is certainly helpful in maintaining international fraternity and equity. The assembly of most of the nations of the world under its banner proves that even today its aim and principles are relevant and it was at the time of its establishment. Presently, there are 193 members of this organisation.South Sudan is its 193rd member that received its membership on 11th July, 2011.

Organs of the United Nations Organisation

The headquarters of UNO is situated in New York, a city in the USA. There are six main organs of UNO, to provide help on international level in the field of social, political, economic

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सिद्धान्त :

उपर्युक्त उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए घोषणा पत्र में कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये गए थे, जो निम्न प्रकार हैं :-

- राष्ट्रों की समानता के सिद्धान्त पर यह संस्था आधारित रहेगी।
- प्रत्येक सदस्य राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्रसंघ के घोषणापत्र (Charter) का स्वागत करेगा और उसका उल्लंघन नहीं करेगा।
- सभी सदस्य राष्ट्र अपने झगड़ों या विवादों का निबटारा शांतिपूर्ण ढंग से करेंगे।
- संस्था के सदस्य किसी अन्य राष्ट्र की स्वतंत्रता और प्रादेशिक अखंडता को आक्रमण के द्वारा या किसी भी तरह विनष्ट नहीं करेंगे।
- घोषणा पत्र के नियमों की अवहेलना करने वाले राष्ट्र की किसी भी सदस्य राष्ट्र द्वारा सहायता नहीं की जायेगी।
- अगर कोई गैर सदस्य राष्ट्र शांति को भंग करने का प्रयास करेगा तो संस्था उसके विरुद्ध कार्यवाही करेगी।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ किसी भी राष्ट्र के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के उपर्युक्त उद्देश्य एवं सिद्धान्तों में विश्वशांति, सुरक्षा एवं सहअस्तित्व के भाव निहित हैं। यह निश्चित रूप से 'विश्वबंधुत्व' एवं 'समानता' कायम करने में सहायक है। विश्व के अधिकांश राष्ट्रों का इसके झंडे तले आना यह सिद्ध करता है कि इसके सिद्धान्त एवं उद्देश्य आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं विश्वसनीय हैं जितने कि इसकी स्थापना के समय थे। वर्तमान में इसके 193 सदस्य हैं। दक्षिणी सुडान इसका नवीनतम 193 वां सदस्य है जिसने 11 जुलाई, 2011 में इसकी सदस्यता ग्रहण की।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के अंग :

संयुक्त राष्ट्रसंघ का मुख्यालय अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में स्थित है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के 6 प्रमुख अंग है, जिनका कार्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक

and others. The main organs are:

1. General Assembly

This is the most important organ of the United Nations Organisation. It consists of the representatives of all member nations and every member is entitled to cast vote and participate in the debate. The Assembly meets once in a year. Usually, all important functions of UNO is carried out by the organs such as granting membership to nations and their expulsion, election of Secretary General and decision on other economic issues are taken by the Assembly.

2. Security Council

The security council has primary responsibility for maintaining peace and security. In political matters, the security council is executive body of the UN. It consists of 5 permanent and 10 non-permanent members.

The five permanent members of UNO are America, England, France, Russia and China.

3. The Economic and Social Council

The Economic and Social Council (ECOSOC) studies matters related to social, cultural, educational and health at international level and gives information to the security council on its demand. It has separate groups for different fields in the world. UNICEF, UNESCO, Human Right Commission, International Labour Organisation etc.

4. The Trusteeship Council

This body of the UN works as international trustee for the security of the interests of the inhabitants of the region where there is government with full autonomy. As four groups of island of Micronesia in the pacific ocean is under governance of the United States of America by the director of this organisation. Thus this organisation has four objectives:

a. To increase international peace and security.
b. To help the people in the development of self-government and independence.
c. To increase faith towards human rights and freedom
d. To exercise equality in the matters related to social economic and commerce.

एवं अन्य क्षेत्रों में योगदान करना है। ये प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं-

1. आमसभा- यह संयुक्त राष्ट्र का सबसे प्रमुख अंग है। इसमें सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं तथा प्रत्येक सदस्य राष्ट्र को मत देने एवं वाद-विवाद में भाग लेने का अधिकार है। इसकी बैठक वर्ष में एक बार होती है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्राय: सभी महत्वपूर्ण कार्य इसी अंग के द्वारा सम्पादित होते हैं जिसके अंतर्गत राष्ट्रों को सदस्यता प्रदान करना एवं उनके निष्कासन, महासचिव का निर्वाचन एवं अन्य आर्थिक मुद्दों पर निर्णय लिए जाते हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के 5 स्थाई सदस्य-अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस एवं चीन हैं।

2. सुरक्षा परिषद् - राष्ट्रसंघ की यह इकाई अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण रूप से उत्तरदायी है। राजनैतिक विषयों में सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र का कार्यपालक अंग है। इसके 5 स्थायी और 10 अस्थाई सदस्य होते हैं।

3. आर्थिक और सामाजिक परिषद्- यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य से संबंधित मामलों पर अध्ययन करती है एवं इससे संबंधित विभिन्न सूचनाएँ सुरक्षा परिषद् के प्रार्थना पर उसे प्रदान करती है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के लिए इसके अलग-अलग समूह कार्यरत हैं जैसे यूनीसेफ, यूनेस्को, मानवाधिकार आयोग, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन आदि।

4. न्यास परिषद् - संयुक्त राष्ट्र का यह अंग उन प्रदेशों में जहाँ अभी तक पूर्ण स्वायत्त शासन नहीं है, उनके निवासियों के हितों की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय न्यास का कार्य करती है। जैसे-प्रशांत महासागर में स्थित माइक्रोनेशीया के 4 द्वीप समूह इसी संगठन के निर्देश पर संयुक्त राज्य अमेरिका के शासन में हैं। इस प्रकार इस संगठन के 4 उद्देश्य हैं- (क) अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा को बढ़ावा देना (ख) लोगों के स्वशासन तथा स्वतंत्रता के क्रमिक विकास में सहायता करना (ग) मानवीय अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आस्था बढ़ाना (घ) सामाजिक, आर्थिक और वाणिज्य संबंधी मामलों में समानता का व्यवहार करना।

5. International Court of Justice

This is a main legal institution of UN. It was founded in the aegis of the League of Nations and decided international disputes. But with the establishment of UN it was accorded status of an International Court with its headquarters at Hague (the Netherlands).

6. The Secretariat

> First Secretary General of UN was Trygve Lie . The present one is Antonio Guterres (Portugal).

Among the six bodies of UN the secretariat has its own importance. The Secretary General is the Chief Executive Officer of the organ. This is headquarter of UN where representatives of the member nations are called to work as employee. The six recognised language for UN are English, French, Chinese, Russian, Arabic and Spanish.

A Scene of the General Assembly of UN

5. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय– यह संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक प्रमुख कानूनी संस्था है। इसकी स्थापना राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में हुई थी, जहाँ यह अंतर्राष्ट्रीय विवादों का निर्णय करती थी। परन्तु संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना के साथ ही इसे न्याय के निमित्त सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का रूप प्रदान किया गया। इसका मुख्यालय हेग (नीदरलैंड) में है।

6. सचिवालय – संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंगों में से सचिवालय का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसका मुख्य प्रशासनिक अधिकारी महासचिव है। यह राष्ट्रसंघ का मुख्यालय है जहाँ सदस्य राष्ट्रों के कर्मचारी के रूप में प्रतिनिधियों को बुलाया जाता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में 6 भाषाएँ मान्यता प्राप्त है यथा– अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी, रूसी, अरबी एवं स्पेनिश हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रथम महासचिव ट्रिग्वेली तथा वर्तमान महासचिव एंटोनियो गुटेरेस है (पुर्तगाल)

संयुक्त राष्ट्रसंघ के आमसभा का दृश्य

Success and Failures of United Nations

The achievement of United Nations in both political and non-political sphere have been great. The aspects of its success and failure can be discovered these achievements. The UN has played a very important role in turning off many war like situations. It may not be fully correct but it can be said that its role stopped the world to reach the threshold of the third world war. It played a very successful role in mitigating the ferocity of disputes and preparing a platform for mutual discussion. Various institutions of UN extended significant support in eradicating economic, social and health related problem in the under developed, backward and developing countries in the world. The role of UN has been outstanding in solving the problems, created out of natural catastrophe, such as rehabilitation work, checking epidemics and economic compensation.

As the world peace has been given the highest priority in the principles and objectives of UN so the organisation is making efforts in this direction. In this context the success of UN is noteworthy.

The role of UN has been satisfactory in reducing the international tensions among various countries in Asia. In 1946, UN succeeded in withdrawal of Russian forces living in Iran illegally. The UN succeeded in 1953 in ending the war between North and South Korea. In 1956 it did a commendable job by deploying International Army over Suez canal issue. In 1959, UN sent its team to overcome the Lebanese crisis. The situation in West Asia over Palestine-Israel issue had become grave but due intervention of UN it lessened to a great extent. UN succeeded in diminishing tensions among Arab States. In 1988, the eight year long war between Iran and Iraq was ended and peace was established in that region by the efforts of Pere de Culler, the Secretary General of UN. UN took very strong steps for a ceasefire in Indo-Pak war in 1965. Pakistan attacked India in 1971 over the question of Bangladesh's freedom, the Security Council made successful effort towards freedom of war captives.

संयुक्त राष्ट्रसंघ की सफलता एवं असफलताएँ :

राजनैतिक तथा गैर राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्रसंघ की उपलब्धियाँ महान रही हैं। इन्हीं उपलब्धियों में इसकी सफलता एवं असफलता के तथ्य ढूँढ़े जा सकते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व में अनेक युद्ध की परिस्थितियों को टालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भले ही यह पूर्णतः सत्य न हो परन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि इसकी भूमिका ने विश्व को तृतीय विश्वयुद्ध के दरवाजे तक जाने से रोक रखा है। इसने विवादों की उग्रता को कम करने एवं पारस्परिक वार्ता का मंच तैयार करने में सफल भूमिका निभाई है। इसके विभिन्न संस्थाओं ने विश्व के अविकसित, पिछड़े एवं विकासशील राष्ट्रों में आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विश्व में होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न समस्याओं को दूर करने जैसे-पुनर्वास कार्य, संक्रामक बीमारियों को रोकने एवं आर्थिक क्षतिपूर्ति में संयुक्त राष्ट्रसंघ की महती भूमिका रही है।

चूँकि संयुक्त राष्ट्र के सिद्धान्त एवं उद्देश्य में विश्वशांति को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है इसलिए इस दिशा में संघ प्रयासरत है। इस संदर्भ में इसकी सफलताएँ उल्लेखनीय हैं।

एशिया के विभिन्न देशों के मध्य हो रहे अंतर्राष्ट्रीय तनावों को कम करने में संयुक्त राष्ट्र की सराहनीय भूमिका रही है। 1946 में संयुक्त राष्ट्र ने ईरान में अवैध रूप से रह रहे रूसी सैनिकों को हटने के लिए दबाव डाला। उत्तर एवं दक्षिण कोरिया के मध्य चल रहे युद्ध को 1953 में रोकने में संयुक्त राष्ट्रसंघ सफल रहा। 1956 में स्वेज नहर के मामले में वहाँ अंतर्राष्ट्रीय सेना को तैनात कर शांति स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1959 में लेबनान पर संकट आया तो संयुक्त राष्ट्र ने अपना दल भेजकर संकट को दूर करने का प्रयास किया। मध्य एशिया में फिलस्तीन-इजरायल का मुद्दा एक विकट रूप ले चुका था, जिसे संयुक्त राष्ट्रसंघ की सक्रिय भूमिका ने बहुत हद तक कम किया। साथ ही अरब राज्यों. में होने वाले तनावों को भी कम करने में यह सफल रहा। 1988 ई० में संयुक्त राष्ट्र महासचिव पेरेज द कुइयार के प्रयत्नों से ईरान-इराक के बीच 8 वर्षों से चल रहे युद्ध की समाप्ति हुई और इस क्षेत्र में शांति स्थापित हुई। 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध को रोकने हेतु संयुक्त राष्ट्र ने ठोस कदम उठाये। 1971 ई० में बांग्लादेश की आजादी के प्रश्न को लेकर पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया तो सुरक्षा परिषद् ने युद्ध बंदी को आजाद कराने के दिशा में सफल प्रयास किया।

Due to European colonial policy many disputes and problems arose in granting freedom to countries in African continent and civil war started there; but UN played a very effective role here in solving the problem. Even in present time the role of UN peace force is very significant in preventing civil war in Nigeria, Angola, Sierra Leone and other countries. The Iraqi possession of Kuwait in 1990 was declared illegal by UN and Kuwait was freed from Iraqi forces.

UN's failure

Through UN got many achievements in maintaining world peace by its political role, yet it has been unsuccessful in solving may disputes. It has not yet got expected success in terms of disarmament. UN proved unsuccessful in solving the problems related to Arab-Israel war (Palestine), Namibia issue, apartheid policy in South Africa and the problem of Iraq and Kashmir.

Causes of failure

Lack of Economic self reliance

All economic activities of UN are fulfilled by the economic contribution of the member nation. So the member having large contribution has its supremacy. As the headquarter of UN is in New York in America and America bears half of the expenditure of UN, so its intervention in the functioning of UN is obvious.

Factionalism

There has been influence of various groups in UN and so it has to face difficulties and to work on many issues. The effect of G-8, the group of developed nations and strategically powerful groups NATO, SEATO, WARSAW etc. has diminished the importance of UN and their political interventions have also increased its failure.

Regional Imbalance in the Security Council

Due to lack of representation of all contries from Continents in the Security Council problems arise. Among five permanent members of the security council three countries

अफ्रीका महादेश में यूरोपीय औपनिवेशिक नीति के कारण उन्हें स्वतंत्रता देने में काफी विवाद एवं समस्याएँ सामने आयीं तथा वहाँ गृहयुद्ध छिड़ गया। इन समस्याओं को हल करने में संयुक्त राष्ट्रसंघ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वर्तमान समय में भी नाइजीरिया, अंगोला, सियरालिओन आदि देशों में छिड़े गृहयुद्ध को रोकने में संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति सेना की भूमिका महत्वपूर्ण है। 1990 में ईराक द्वारा कुवैत पर अधिकार को संयुक्त राष्ट्र ने अवैध ठहराया और 1991 में कुवैत को इराकी सेना से मुक्त कराया गया।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की असफलताएँ :

यद्यपि संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपनी राजनैतिक भूमिका से विश्वशांति कायम करने में अनेक सफलताएँ हासिल की परन्तु यह बहुत सारे विवादों को सुलझाने में असफल भी रहा है। नि:शस्त्रीकरण की दिशा में इसे अभी भी अपेक्षित सफलता नहीं मिल पायी है। अरब-इजरायल युद्ध (फिलिस्तीन), नामिबिया की समस्या, दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद नीति, ईराक समस्या, कश्मीर समस्या आदि दूर करने में यह असफल सिद्ध हुआ है।

असफलता के कारण :

आर्थिक आत्मनिर्भरता का अभाव – संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक क्रियाकलापों की पूर्ति उसके सदस्य राष्ट्रों को आर्थिक अंशदान द्वारा होती है। इस कारण संघ में जिस राष्ट्र का अधिक आर्थिक अंशदान होता है उसी का दबदबा बना रहता है। जैसे-इसका मुख्यालय अमेरिका के न्यूयॉर्क में अवस्थित है और इसके खर्च के आधा हिस्से की जिम्मेवारी अमेरिका की है। अत:, संयुक्त राष्ट्रसंघ के कार्यों में अमेरिकी हस्तक्षेप जग जाहिर है।

गुटबंदी – संयुक्त राष्ट्रसंघ पर विभिन्न गुटों का प्रभाव रहा है और इसके कारण अनेक मुद्दों पर इसे कार्य करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विकसित राष्ट्रों के गुट जी-8, सामरिक दृष्टि से शक्तिशाली गुट, नाटो, सीटो, वारसा आदि गुटों का प्रभाव ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के महत्व को घटाया है। इसके राजनैतिक हस्तक्षेपों ने भी संयुक्त राष्ट्रसंघ की असफलता को बढ़ाया है।

सुरक्षा परिषद् में क्षेत्रीय असंतुलन – सुरक्षा परिषद् में सभी महादेशों के प्रतिनिधि नहीं होने के कारण समस्याएँ खड़ी होती है। सुरक्षा परिषद् में 5 स्थायी सदस्यों में से तीन देश

represent Europe. Actually more problems are related to Africa, South America and the Asian countries, and their representation as permanent member in the security council (except China) is nil. It is worth noting that only the permanent members avail the right of Veto, the last means of intervention on any issue. It is almost misused for the fulfilment of the interests of the powerful nations.

Lack of permanent Army

There is a need of army to control any aggressive nation. Unfortunately, UN does not have its own army. After declaring a country assailant, by the security council, the aggression is controlled only after getting military from the member nations. Many a time it is felt that the some member nation are reluctant to send their forces. But India having full trust in the values of United Nation, has sent its forces on many occasions, under the aegis of the United Nation Organisation.

Ambition of Industrial Countries

The character of imperialism is transforming. Now, the countries don't attack directly rather they fulfill their political objectives though economic pressure. Due to this the world is divided into groups of developed and developing countries. The ongoing disputes in World Trade Organisation, oil related politics and the outsourcing in the service sectors are few examples.

It can be said that the endeavour of this organisation towards world peace has not been ineffective. Though, it might be unsuccessful on some issues, that is discussable, but it has been successful in reducing international tension, to have check on aggressive nations and its non-political affairs. The success and failure of any organisation depends on the will and view points of the members. So, there is need to make the objectives and principles of the organisation successful. Only then the effort of the world peace can be successful.

यूरोप से आते हैं। वास्तव में अधिक समस्या अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका और एशियाई देशों की है, जिसका प्रतिनिधित्व सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य के रूप (सिर्फ चीन को छोड़कर) में नहीं है। ज्ञातव्य है कि स्थायी सदस्यों को निषेधाधिकार (Veto) प्राप्त है, जो किसी भी मुद्दे पर हस्तक्षेप का अन्तिम उपाय है जिसका शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रायः दुरुपयोग ही हुआ है।

स्थायी सेना का अभाव – किसी भी आक्रमणकारी राष्ट्र को रोकने के लिए सेना की जरूरत होती है। दुर्भाग्यवश संयुक्त राष्ट्रसंघ के पास अपनी सेना नहीं है। सुरक्षा परिषद् द्वारा किसी भी देश के आक्रमणकारी घोषित करने पर सदस्य राष्ट्रों द्वारा सेना दिये जाने पर ही आक्रमणकारी को रोका जाता है। कई बार ऐसा देखा गया है कि सदस्य राष्ट्र अपनी फौज देने से हिचकिचाते हैं। परन्तु भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के मूल्यों में पूर्ण आस्था रखते हुए अधिकाधिक बार अपने सैनिकों को संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में भेजा है।

औद्योगिक देशों की महत्वाकांक्षा– साम्राज्यवाद का स्वरूप बदल रहा है। अब कोई देश सीधे आक्रमण नहीं वरन् आर्थिक दबावों के आधार पर अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। इसके कारण विश्व विकसित एवं विकासशील देशों के गुटों में बँट रहा है। विश्व व्यापार संगठन में हो रहे विवाद, तेल से संबन्धित राजनीति, सेवा क्षेत्र में हो रहे विवाद (outsourcing) आदि उदाहरण हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इन संस्थानों द्वारा विश्व में शांति के प्रयास निरर्थक नहीं रहे हैं। यद्यपि कुछ मुद्दों पर यह असफल रहा हो, जो विवेच्य बिंदु हैं, परन्तु अंतर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने, उच्श्रृंखल राष्ट्रों पर लगाम कसने तथा गैर राजनीतिक कार्यों में यह सफल रहा है। किसी भी संगठन की सफलता असफलता उसके सदस्यों की इच्छा शक्ति एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। अतः आवश्यकता है इसके उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों को सफल बनाने की, तभी विश्व शांति के प्रयास सफल हो सकते हैं।

EXERCISE

In each of the following questions there are four options a, b, c, d among which one is correct or the most suitable. To give answer to the question write the symbol, against question number, which is right or the most suitable one.

I. Objective questions

1. The headquarters of the Secretariat of the League of Nations was:
   a. in New York b. in Paris
   c. in Geneva d. in Berlin

2. Which was not a member of the League of Nations?
   a. England b. the United States of America
   c. France d. Germany

3. What was the main objective of formation of League of Nations?
   a. to prepare background for the second world war
   b. to prevent wars in future
   c. to develop misunderstandings among nations
   d. none of these

4. League of Nations was established in the year
   a. 1945 b. 1925 c. 1920 d, 1895

5. Which among the following is the main organ of United Nations Organisation?
   a. The Economic and Social Council
   b. The International Court of Justice
   c. The Security Council
   d. International Labour Organisation

6. Where is the headquarters of the United Nations situated?
   a. Geneva b. Washington D.C.
   c. New York d. London

7. United Nations Organisation was outcome of which conference?
   a. Dam Stan Oakes b. San Fransisco
   c. Geneva d. Paris

अभ्यास :

प्रश्नावली :

नीचे दिये गए प्रत्येक प्रश्न में 4 संकेत चिह्न क, ख, ग, घ दिये गये हैं, जिनमें एक सही या सबसे उपयुक्त है। प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रश्न संख्या के सामने वह संकेत चिह्न लिखें जो सही या सबसे उपयुक्त है।

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. राष्ट्रसंघ के सचिवालय का प्रधान कार्यालय-
   (क) न्यूयॉर्क में था (ख) पेरिस में था
   (ग) जेनेवा में था (घ) बर्लिन में था
2. इसमें कौन राष्ट्रसंघ का सदस्य नहीं था?
   (क) इंग्लैण्ड (ख) संयुक्त राज्य अमेरिका
   (ग) फ्रांस (घ) जर्मनी
3. राष्ट्रसंघ की स्थापना का मूल उद्देश्य था?
   (क) द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करना
   (ख) भविष्य में युद्ध रोकना
   (ग) राष्ट्रों के बीच मतभेद उत्पन्न करना
   (घ) इनमें से कुछ नहीं।
4. राष्ट्रसंघ की स्थपना किस वर्ष हुई
   (क) 1945 (ख) 1925
   (ग) 1920 (घ) 1895
5. निम्नलिखित में से कौन संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है?
   (क) आर्थिक और सामाजिक परिषद् (ख) अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय
   (ग) सुरक्षा परिषद् (घ) अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संघ
6. संयुक्त राष्ट्रसंघ का मुख्यालय कहाँ अवस्थित है?
   (क) जेनेवा (ख) वाशिंगटन डी० सी०
   (ग) न्यूयॉर्क (घ) लंदन
7. संयुक्त राष्ट्रसंघ किस सम्मेलन का सफल परिणाम था ?
   (क) डॉम्बस्टन ओक्स (ख) सैन फ्रांसिस्को
   (ग) जेनेवा (घ) पेरिस

8. How many countries are members of United Nations Organisation in present?

a. 111 b. 193
c. 190 d. 290

II. Very short answer question:

1. How many permanent and non-permanent members are there in the Security Council?
2. Which is the main organ of League of Nations?
3. On which date was United Nations established?
4. Who is the Present Secretary General of UNO?
5. How many articles are there in the charter of UN?
6. What is the number of non-permanent members in the security council?
7. Who is the Chief Officer of UNO?

III. Short answer questions:

1. How was the League of Nations established?
2. Why did league of Nations not succeed in solving the question of disarmament?
3. What was the reason of failure of League of Nations? Write any four reasons.
4. Write the objectives and principles of UNO.
5. What are the non-political functions of United Nations Organisation?
6. Mention any four political achievements of UNO.

IV. Long answer question?

1. Mention the circumstances of the establishment of League of Nations.
2. Explain the reasons of the failure of League of Nations.
3. Mention the relevance of the objectives and Principles of UNO.
4. Explain the role of main organs of UNO.
5. Write the importance of United Nations Organisation.

8. वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ के कितने सदस्य हैं?

(क) 111 (ख) 193

(ग) 190 (घ) 290

II. अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. सुरक्षा परिषद् में कितने स्थायी और अस्थायी सदस्य हैं?
2. राष्ट्रसंघ का सबसे प्रमुख अंग कौन है?
3. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना किस तिथि को हुई?
4. संयुक्त राष्ट्रसंघ के वर्तमान महासचिव कौन हैं?
5. संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर में कितनी धाराएँ हैं?
6. सुरक्षा परिषद् के अस्थाई सदस्यों की संख्या है–
7. संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रधान अधिकारी कौन है?

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. राष्ट्रसंघ की स्थापना किस प्रकार हुई?
2. राष्ट्रसंघ नि:शस्त्रीकरण के प्रश्न को सुलझाने में क्यों असफल रहा?
3. राष्ट्रसंघ किन कारणों से असफल रहा? किन्हीं 4 कारणों को बतावें।
4. संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों को लिखें।
5. संयुक्त राष्ट्रसंघ के गैर राजनीतिक कार्य कौन-कौन से हैं?
6. संयुक्त राष्ट्रसंघ की किन्हीं 4 राजनैतिक सफलताओं का उल्लेख करें।

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. राष्ट्रसंघ की स्थापना की परिस्थितियों का वर्णन करें।
2. राष्ट्रसंघ किन कारणों से असफल रहा, वर्णन करें।
3. संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की प्रासंगिकता बतावें।
4. संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रमुख अंगों की भूमिका का वर्णन करें।
5. संयुक्त राष्ट्रसंघ की महत्ता को रेखांकित करें।

CHAPTER- 8

AGRICULTURE AND AGRICULTURAL SOCIETY

The Word 'Agriculture' is formed with the two Latin words 'Agros' and 'Culture'. 'Agros' means land and 'culture' means for ploughing. Thus, 'agriculture' means 'ploughing of land'. Although animal husbandry, forestry, fishery also fall under agriculture.

Agriculture began in the Neolithic age, but well-planned development of agriculture is seen in Indus valley civilization especially in the Bronze-age. The Indus river brought more alluvial soil with it than the Nile river of Egypt did and left it on the flood-affected plains which increase production. The proof of the use of ploughs in the Harappan civilization is available in Rajasthan. The Harappans perhaps used wooden ploughs. But it is not known whether the ploughs were drawn by men or oxen. The sickles made of stone were used for reaping the crops. But there was no tradition of irrigation from canals or drains.

The people of the Indus valley civilization produced wheat, barley, mustard, cotton, pea and corns. They grew two types of wheat and barley. The barley found in Vanavali is of the best quality. Besides, these they grew sesame and mustard. But the situation of the people living in Lothal in the Harappan age was different. It seems that the people of Lothal grew rice even in 1800 BC because its proof has been found there. In Mohanjodaro and Harappa and even in Kalibanga, corn was collected in big granaries. We can explain this by giving the example of of Mesopotamia where barley was given as wages.

The credit for growing cotton first goes to the people of the Indus valley civilization because the production of cotton first started in the Indus region. So the Greek called it 'Sindon' which originated from the word ' Sindhu.'

इकाई–8

कृषि और खेतिहर समाज

एग्रीकल्चर (कृषि) लैटिन भाषा के दो शब्दों 'एग्रोस' तथा 'कल्चर' से बना है। एग्रोस का अर्थ है 'भूमि' और 'कल्चर' अर्थ है 'जुताई'। इस प्रकार कृषि (एग्रिकल्चर) का अर्थ 'भूमि की जुताई' से है। यद्यपि कृषि के अंतर्गत पशुपालन, वानिकी और मत्स्यन भी शामिल है।

कृषि की शुरूआत नव पाषाण काल में ही हुई थी, लेकिन सिन्धु घाटी संस्कृति विशेषकर कांस्य युग से कृषि में नियोजित विकास देखने को मिलता है। सिन्धु नदी, मिस्र की नील नदी की अपेक्षा कहीं अधिक जलोढ़ मिट्टी बहाकर लाती थी और इसे बाढ़ वाले मैदानों में छोड़ जाती थी, जिससे पैदावार बढ़ जाती थी, हड़प्पा काल में राजस्थान में हल का प्रयोग का प्रमाण मिलता है। हड़प्पावासी शायद लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे। इस हल को आदमी खींचते थे या बैल, इस बात का पता नहीं है। फसल काटने के लिए शायद पत्थर के हँसियों का प्रयोग होता था। नहरों या नालों से सिंचाई की परिपाटी नहीं थी।

सिन्धु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, कपास, मटर आदि अनाज पैदा करते थे। वे दो किस्म की गेहूँ और जौ उपजाते थे। वनावाली में मिला जौ उत्तम किस्म का है। इनके अलावा वे तिल और सरसों भी उपजाते थे। परन्तु हड़प्पा कालीन लोथल में रहने वाले हड़प्पाइयों की स्थिति भिन्न रही है। लगता है कि लोथल के लोग 1800 ई० पू० में ही चावल उपजाते थे, जिसका अवशेष वहाँ पाया गया है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में और शायद कालीबंगा में भी अनाज को बड़े-बड़े कोठारों में जमा किया जाता था। संभवत: किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था। वे पारिश्रमिक चुकाने और संकट की घड़ियों में काम के लिए अनाज को कोठारों में जमा किया करते थे। यह बात हम मेसोपोटामिया के नगरों के दृष्टान्त से कह सकते हैं, जहाँ मजदूरी में जौ दिया जाता था।

सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों को है। चूँकि कपास का उत्पादन सबसे पहले सिन्धु क्षेत्र में ही हुआ। इसीलिए यूनान के लोग इसे सिन्डन (Sindon) कहने लगे जो सिन्धु शब्द से उद्‌भूत हुआ है।

India is mainly an agricultural country. Indian society is a agricultural society. So agriculture is very important to Indian economy. About two-third of the population depend on agriculture. Whereas 11% of world land is fit for agriculture. 51% of Indian land is fit for the this. Agriculture contributes 35 percent to national gross income of India. There was a high percentage of fertile land in India. But its misfortunate that Indian agriculture has uncertainty both in quality and quantity. The farmers are not sure about their crops even till the last moment.

Agriculture is the backbone of life in India. The production was less than labour just after independence due to excessive burden of population on agriculture and lack of modern technique and means of irrigation. But after independence the production increased by the efforts of the government of India.

Bihar is mainly an agricultural state. About 80% of population here depends on agriculture. Agriculture is the main source of livelihood for the people of the state. About 70% of the land of Bihar is fit for agriculture and 60% of it is pure farming area. In fact agriculture is their life style. There are many reasons for the importance of agriculture in Bihar. Most of its plain area is fit for agriculture and has been related to agriculture for centuries. The commercialization of agriculture, industrialization and unfamiliarity with modern technique are its regrettable aspects. Even today farming is done by old techniques in Bihar.

The per hectare production is minimum and agriculture is in its backward state in Bihar due to growing burden of population on agriculture, absentee land possession, lack of irrigation, small and scattered farms, insufficient use of fertilizers, old technique of farming and lack of good seeds. Due to dependence on the monsoon, the agriculture is called 'gambling with monsoon'. The farmers do not get proper price of crops due to defective system of marketing. This is why the condition of Bihari farmers is miserable and they are compelled to find shelter in another states for their livelihood keeping their farms aside. The agriculture of Bihar is intensive and about four crops are sown and cultivated here in a year. For example :

1. Bhadai crops : These crops are sown in May-June and reaped in August-September. Maize, millet, jute, urad, hemp, and madua are the main crops of this season.

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय समाज एक कृषक समाज है। इसलिए कृषि भारतीय अर्थ-व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। लगभग दो तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। जहाँ विश्व की 11% भूमि कृषि योग्य है, वहीं भारत की कुल भूमि का 51% भाग कृषि योग्य है। 'कृषि' भारत के कुल राष्ट्रीय आय में लगभग 35% योगदान करता है। भारत के पास विशाल स्थल क्षेत्र, उपजाऊ भूमि का उच्च प्रतिशत है। परन्तु कृषि का एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि गुणवत्ता एवं मात्रा दोनों स्तर पर यह प्रत्येक वर्ष अनिश्चित रहता है। कृषक अंतिम समय तक अपने फसल के उत्पादन के लिए निश्चिंत नहीं रहते हैं।

भारत में कृषि जीवन की रीढ़ है। कृषि पर अत्यधिक जनसंख्या का बोझ, आधुनिक तकनीक की जानकारी का अभाव, सिंचाई के साधनों की कमी आदि के कारण आजादी के पहले एवं आजादी के तुरन्त बाद श्रम की तुलना में उत्पादन काफी कम था। लेकिन आजादी के बाद भारत सरकार के प्रयास से उत्पादन में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। जिसकी 80% आबादी कृषि पर ही निर्भर है। कृषि ही राज्य के लोगों की जीविका का मुख्य आधार है। इस राज्य की लगभग 70% भूमि कृषि योग्य है। इनमें से 60% शुद्ध बोये गये क्षेत्र हैं। वास्तव में कृषि उनकी जीवन पद्धति बन गयी है। बिहार में कृषि की महत्ता के अनेक कारण हैं। इसका अधिकांश मैदानी भाग कृषि योग्य है तथा सदियों से यह क्षेत्र कृषि से संबंधित रहा है। कृषि का वाणिज्यीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिक तकनीक से परिचित न होना इसका दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है। अब भी बिहार में कृषि अधिकांशतः पुराने ही तरीके से हो रही है।

कृषि पर जनसंख्या के निरंतर बढ़ते हुए बोझ, अनुपस्थित भू-स्वामित्व, सिंचाई की कमी, छोटे और बिखरे खेत, अपर्याप्त रासायनिक खाद के प्रयोग, खेती के पुराने ढंग और उत्तम बीज की कमी के कारण यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है और खेती पिछड़ी अवस्था में है। मॉनसूनी वर्षा पर निर्भरता के कारण यहाँ की कृषि को ''मॉनसून के साथ जुआ'' कहा गया है। कृषि-विपणन की दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण किसानों को फसलों की उचित कीमत नहीं मिल पाती है। इन्हीं कारणों से बिहार के किसानों की दशा दयनीय है और वे अपने खेतों को छोड़कर दूसरे प्रांतों में आजीविका के लिए शरण लेने को बाध्य हैं। बिहार की कृषि गहन निर्वाहक प्रकार की है, जिसके अन्तर्गत वर्ष में चार फसलें बोयी और काटी जाती है। जैसे-

1. भदई फसलें : ये फसलें मई-जून में बोयी जाती है और अगस्त-सितम्बर में काट ली जाती है। मक्का, ज्वार, बाजरा, जूट, उड़द, सनई, मडुआ इत्यादि इस मौसम की मुख्य फसलें हैं।

2. Agahani crops : It is sown in July-August and prepared in November-December. Paddy, horse gram, sesame, potato, oilseeds, vegetables, maize, cotton, sugarcane, jute etc. are main crops.

3. Rabi crops : These are the crops of the spring season. These are sown in October-November and prepared by March-April. They need much more irrigation. Wheat is the main Rabi crop. Besides it, barley, gram, pea, mustard, lentil, chick ling vetch, pigeon-pea etc. are grown in large quantity.

4. Summer crops: These are the crops of summer season which are grown in the area where there is scope of regular irrigation. These are sown in March-April and harvested in June. Paddy, maize, moong, gram, mango, banana, water-melon, cucumber, vegetables and onion are the main crops of this season.

These are varieties of crops in Bihar. These crops are classified on the basis of their nature:

1. Food crops: Paddy, wheat, maize, millet, gram, barley, pulses, oilseeds, etc.
2. Commercial or Cash crops: Sugarcane, jute, cotton, tobacco, potato, oilseed, pulses, chilly, spices, etc.
3. Beverage crops: Tea is a beverage which is grown in Kishanganj.
4. Fibrous crops: Cotton, jute, silk, etc.
5. Fruit crops: mango, banana, litchi, guava, etc.
6. Spices: Chilly, garlic, turmeric, coriander, fenugreek, etc.

Rice or paddy: Rice is the main crop of Bihar.

Climate	:	Paddy is the crop of warm and humid climate
Temperature	:	20^0C 37^0C
Soil	:	Mould (Domat)

According to the data of 2021-2022, the land fit for paddy is maximum in Rohtas district.

2. अगहनी फसलें : इनकी बुआई जुलाई–अगस्त में होती है और नवम्बर–दिसम्बर में ये तैयार हो जाती है। धान, कुलथी, तिल, आलू, तेलहन, सब्जी, मकई, कपास, गन्ना, पटसन इत्यादि इसकी मुख्य फसलें हैं।

3. रबी फसलें : ये बसंत ऋतु की फसल है, जिनकी बुआई अक्टूबर–नवम्बर में होती है तथा ये फसलें मार्च–अप्रैल तक तैयार हो जाती हैं। इन फसलों के उत्पादन में सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है। गेहूँ सर्वप्रमुख रबी फसल है। गेहूँ के अतिरिक्त जौ, चना, मटर, सरसों, मसूर, खेसारी, अरहर इत्यादि की फसलें भी बड़ी मात्रा में उपजाई जाती है।

4. गरमा फसलें : ये ग्रीष्मकालीन फसलें हैं, जिनकी खेती उन क्षेत्रों में होती है जहाँ नियमित सिंचाई की व्यवस्था है। इसकी बुआई मार्च–अप्रैल में होती है और कटाई जून के महीने में होती है। ग्रीष्मकालीन धान, मकई, मूँग, चना, आम, केला, तरबूज, ककड़ी, सब्जियाँ एवं प्याज इस मौसम की मुख्य फसलें हैं।

बिहार में फसलों की विविधता है। फसलों को उनकी प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जाता है–

1. खाद्य फसलें **(Food crops):** धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार–बाजरा, चना, जौ, दलहन, तेलहन इत्यादि।

2. व्यावसायिक या नकदी फसलें **(Commercial or cash crops):** इसके अन्तर्गत गन्ना, पटसन, कपास, तम्बाकू, आलू, तेलहन तथा दलहन, लाल मिर्च, मसाले इत्यादि आते हैं।

3. पेय फसलें **(Beverage Crops):** इसके अन्तर्गत चाय आती है, जिसकी खेती किशनगंज में की जाने लगी है।

4. रेशेदार फसलें **(Fibrous crops):** कपास, जूट, रेशम इत्यादि।

5. फल **(Fruit crops):** आम, केला, लीची, अमरूद इत्यादि।

6. मसालें **(Spices):** लालमिर्च, लहसुन, हल्दी, धनिया, मेथी इत्यादि।

चावल या धान **(Rice or Paddy):** चावल बिहार की सर्व प्रमुख फसल है।

जलवायु : धान उष्णार्द्र जलवायु की फसल है।

तापमान : 20°C से 37°C

मिट्टी : दोमट (केवाल या चीका)

2021–2022 के आँकड़ों के अनुसार धान के अन्तर्गत सर्वाधिक भूमि रोहतास जिला में है।

Wheat: Wheat is the second main food crop of Bihar.

Wheat

Climate : Temperate zonal

Temperature : 10^0C-15^0C (at the time of sowing)

20^0C-30^0C (at the time of haresting)

Rain : 50 cm- 75 cm

Soil : Light mould

Area : Rohtas, East Champaran, Siwan

Maize: Maize in the third main food crop after rice and wheat.

Climate : Warm and humid

Temperature : 25^0C 30^0C

Rain : 50 cm 100 cm

Soil : Deep mould soil with nitrogen

Area : Saran, Siwan, Gopalganj, Muzaffarpur, Vaishali, East Champaran, West Champaran, Samastipur, Begusarai, Khagaria, Saharsa, Madhepur, Purnea, Katihar

History of different types of cultivation

About 70% of population in India depends on agriculture. That is to say that the society in India is an agricultural society. When the people came to know about farming they lacked ways and means. Agriculture began only by chance.

In the beginning of civilization, the people started cultivation after clearing the forests. Even these days, jhoom farming

गेहूँ (Wheat) : गेहूँ बिहार का दूसरा प्रमुख खाद्यान्न है।

Wheat

जलवायु : शीतोष्ण कटिबंधीय

तापमान : 10°C से 15°C (बोते समय)
20°C से 30°C (पकते समय)

वर्षा : 50 सेमी से 75 सेमी तक

मिट्टी : हल्की दोमट मिट्टी

क्षेत्र : रोहतास, पूर्वी चम्पारण, सिवान

मकई (Maize) : मकई या मक्का बिहार के खाद्यान्नों में चावल और गेहूँ के बाद तीसरे स्थान पर है।

जलवायु : गर्म एवं आर्द्र

तापमान : 25°C से 30°C तक

वर्षा : 50 सेमी से 100 सेमी तक

मिट्टी : नाइट्रोजन युक्त गहरी दोमट मिट्टी

क्षेत्र : सारण, सिवान, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, समस्तीपुर, बेगुसराय, खगड़िया, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, कटिहार इत्यादि क्षेत्रों में होता है।

विभिन्न प्रकार की खेती का इतिहास

भारत की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। अर्थात् भारत का समाज खेतिहर समाज है। जब कृषि की जानकारी हुई तो लोगों के पास साधन की कमी थी। क्योंकि कृषि का प्रारम्भ एक संयोग मात्र है।

सभ्यता के शुरूआत में जहाँ जंगल अधिक था, वहाँ लोगों ने जंगल को काटकर खेती करना प्रारम्भ किया। आज भी पहाड़ी क्षेत्रों में बहुत से आदिवासी समाज में झूम खेती (Jhoom Cultivation)

is very popular in the tribal society. Since the tribal society consider earth as their mother, they do not want to plough it. So, they set the forest on fire before the rains, and scattered the seeds on ashes. After rains, plants came out of them. Similarly, they set the downward forest on fire next year. However, this type of farming affects the environment.

Traditional farming:

The farmers did traditional farming. They kept some seeds from the production to use it next year. They depended on rains for irrigation. India gets its rain from the monsoon which is uncertain. There is sometime deluge and too much rain and sometimes we have drought. Animals perform most of the agricultural activities. This type of traditional farming can not enhance production. The quality of seeds is reduced due to their regular use. Traditional farming takes too much time and the fertility of soil gets reduced gradually. This type of farming is in vogue even today.

History of different types of cultivation

- Jhoom farming
- Traditional farming
- Crop cycle
- Plantation or bagani farming

There was very less production due to British policy and mismanagement of land. The land got deserted because of compulsion for indigo production. It caused regular famine. But after independence, the production increased due to the land management of the government and development in the means of irrigation.

In the decade of 1960s, the production of food grains increased have been due to green revolution. Modern technique and scientific system in agriculture have been introduced. The seeds of higher quality were developed through hybridism. Agriculture is developed as a trade due to the use of fertilizers, insecticides, pesticides and development in irrigation by multi-purpose projects and farming with modern equipment.

Intensive farming:

Where there was arrangement of irrigation, the farmers started using fertilizers and insecticides on a large scale. Agriculture is mechanized by the use of machines to complete the different processes of agriculture. So, the production per hectare increased. Intensive farming means farming of more than one crops in the same farm.

प्रचलित है। क्योंकि आदिवासी समाज पृथ्वी को अपनी माता समझते हैं और उसपर हल नहीं चलाना चाहते हैं। अत: वे वर्षा से पहले जंगल में आग लगा देते थे और उसके राख पर बीज छिड़क देते थे। वर्षा होने पर उस बीज से पौधे निकल आते थे। इस प्रकार अगले वर्ष में नीचे की तरफ आग लगा कर खेती करते थे। वैसे इस खेती से पर्यावरण पर असर पड़ता है।

विभिन्न प्रकार की खेतियों का इतिहास

- झूम खेती
- पारम्परिक खेती
- फसल चक्र मिश्रित खेती
- रोपण या बागानी खेती

पारम्परिक खेती : इसके तहत, कृषक पारम्परिक खेती करते थे। फसल उत्पादन से ही कुछ बीज वे अगले फसल के लिए रख देते थे। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहते थे। भारत में वर्षा मानसून से होती है जो अनिश्चित रहती है। कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि। कृषि के अधिकांश कार्य जानवरों के द्वारा किया जाता था। इस प्रकार पारम्परिक कृषि से उत्पादन अधिक नहीं होता था। एक ही बीज को बराबर लगाने से उसकी गुणवत्ता समाप्त हो जाती थी। पारम्परिक खेती में काफी समय लगता था तथा मिट्टी की उर्वरा शक्ति: क्रमश: कम होती जाती थी। आज भी इस तरह की खेती प्रचलित है।

आजादी से पूर्व ब्रिटिश सरकार की नीति, भू-व्यवस्था की गड़बड़ी आदि के कारण उत्पादन काफी कम होता गया। नील आदि की खेती की बाध्यता के कारण जमीन बंजर होती गई जिससे बराबर अकाल पड़ने लगा। परन्तु आजादी के बाद सरकार की भू-व्यवस्था में परिवर्तन, सिंचाई के साधनों आदि में विकास से कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

1960 के दशक में हरित क्रांति के कारण खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत बढ़ोत्तरी हुई। यहाँ से कृषि में उच्च तकनीकी एवं वैज्ञानिक पद्धति का प्रवेश होता है। पादप-संकरण द्वारा उच्च प्रकार के बीजों के किस्मों का विकास किया गया। उर्वरकों, पीड़क नाशी, खरपतवार नाशकों के प्रयोग एवं बहुउद्देशीय परियोजनाओं के द्वारा सिंचाई में विकास तथा आधुनिक यंत्रों द्वारा कृषि कार्य के कारण कृषि एक व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ ।

गहन खेती: जिन क्षेत्रों में सिंचाई संभव हुई है, उन क्षेत्रों में किसान उर्वरकों और कीटनाशकों का बड़े पैमाने पर उपयोग करने लगे हैं। कृषि की विभिन्न प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए मशीनों के प्रयोग द्वारा कृषि का यंत्रीकरण हो गया है। इससे प्रति हेक्टेयर उपज में कृषि का विकास हुआ है। गहन खेती का तात्पर्य है, एक ही खेत में अधिक फसल लगाना।

Crop cycle: The fertility of soil reduces due to cultivation of same crop regularly. So a pulse is sown between two cereal crops. It is called crop cycle. There are nitrogen stabilizing bacteria in the roots of plants of pulses. They increase the fertility of soil by stabilizing nitrogen of atmosphere. These days the fertility of land is increased by using different types of fertilizers.

Composite farming: The farming of two or three crops in the same farm and at the same time is called composite farming. Through it more and different types of crops are grown.

Plantation or Bagani farming: Plantation farming is a special type of shrub farming or tree farming. It was started by the British in the 19th century. It is a single crop farming. Rubber, tea, coffee, coco, spices, coconut and fruits like apple, grapes, orange etc. are grown. This type of farming needs more capital. Factories for processing tea, coffee and rubber are established near the farms. This type of farming is done in the mountain area of north-east, Sub-Himalayan region of west Bengal and in the hills of Nilgiri, Annamalai, Ilaichi of Peninsular India.

Needs in Rural Economy: Different types of farming is needed in rural economy because most of the rural population depend on agriculture. With the rapid growth of population there is need of different types of farming, the modern ones for more income. The fertility of soil is regained by modernisation of agriculture and economy is strengthened as well. Cash crops develop the industries and the farmers get more income.

Cotton farming

Changes in rural economy in present time

A great change has occurred in rural economy in present time. Rural farmers are changing their agricultural activities through awareness and modern technique. By modern technique,

फसल चक्र : बराबर एक ही प्रकार के फसल लगाने से खेत की उर्वरा शक्ति क्षीण होने लगती है। अत: इसके लिए दो खाद्यान्न फसलों के बीच एक दलहनी कुल के पौधों को लगाया जाता है। जिसे फसल चक्र कहते हैं। दलहनी कुल के पौधों की जड़ की गाँठ में नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु होते हैं, जो वातावरण के नाइट्रोजन को स्थिरीकृत कर भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं। आजकल विभिन्न प्रकार के उर्वरक खेत में डाल कर भूमि की शक्ति बढ़ायी जाती है।

मिश्रित खेती : एक ही खेत में समान समय में दो या तीन फसल लगाने को मिश्रित खेती कहते हैं। इससे एक ही समय में अधिक एवं विभिन्न प्रकार के फसलों की प्राप्ति होती है।

रोपण या बागानी खेती : रोपण कृषि एक विशेष प्रकार की झाड़ी कृषि अथवा वृक्ष कृषि है। इसे 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने प्रारंभ किया था। यह एकल फसल कृषि है। इसमें रबर, चाय, कहवा, कोको, मसाले, नारियल और फलों की फसलें जैसे सेब, अंगूर, संतरा, आदि उगाई जाती हैं। इस प्रकार की खेती में अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। कई रोपण कृषि क्षेत्रों जैसे चाय, कहवा और रबर की बागानों या उनके निकट ही उन्हें संसाधित करने की फैक्ट्री लगाई जाती है। इस प्रकार की कृषि उत्तर-पूर्वी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों, पश्चिम बंगाल के उप हिमालयी क्षेत्रों तथा प्रायद्वीपीय भारत की नीलगिरी, अन्नामलाई व इलायची की पहाड़ियों में की जाती है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इसकी जरूरत :

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार की खेती की काफी आवश्यकता है। क्योंकि ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि पर ही निर्भर रहता है। जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ रही है एवं अधिक आय के लिए कृषकों को आधुनिक ढंग से विभिन्न प्रकार की खेती करने की आवश्यकता है। कृषि के आधुनिकीकरण से मृदा की उर्वरा शक्ति तो पुन: प्राप्त हो ही जाती है, साथ ही अत्यधिक उत्पादन से अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होती है। नकदी फसल करने से उद्योग में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ कृषकों को अच्छी आमदनी भी होती है।

कपास की खेती

वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आया है। आधुनिक तकनीक एवं जागरूकता के कारण ग्रामीण कृषक अपने कृषि कार्य में परिवर्तन कर रहे हैं। आधुनिक कृषि के कारण

the rural farmers are growing such types of crops that they get more income. The government is also encouraging the cultivation of such crops. The government is providing loan for the benefit of farmers and for compensating the destruction of crops through crop insurance. This type of production helps industries and people get employment.

Main commercial crops of Bihar

Banana: Hajipur and Navgachhiya region of Bihar is suitable for banana farming. The soil and climate here is fit for banana. So in this region, banana production is assuming the form of a trade. As a result, rural economy has been strengthened.

Sugarcane farming

Litchi: Muzaffarpur region is very popular for Shahi Litchi. The farmers here are increasing their income by growing litchi on a large amount. There is demand of Shahi litchi in international market. Litchi is adequately used in food processing industries.

Sugarcane farming

Sugarcane: From the very earliest, Bihar is famous for sugarcane farming. It is produced on a large scale in Purnea, Saharsa, West Champaran region of Bihar. Sugarcane is an industrial crop. Sugar, jaggary etc. are made of it. Sugarcane farming is thus a great means of income. Besides it, the rural farmers can increase their income by establishing cottage industries of jaggary.

ग्रामीण कृषक अब इस प्रकार का फसल लगा रहे हैं जिससे अधिक आमदनी प्राप्त हो । सरकार भी वैसे फसल लगाने के लिए कृषक को प्रोत्साहन दे रही है। कृषकों के आर्थिक लाभ के लिए सरकार ऋण मुहैया करवाती है एवं फसल बीमा के माध्यम से क्षति होने पर उसकी पूर्ति करती है। इस प्रकार के उत्पादन से उद्योग-धंधे में सहायता मिलती है एवं लोगों को रोजगार भी प्राप्त होता है।

बिहार में होनेवाली प्रमुख व्यावसायिक फसलें

केला : बिहार के हाजीपुर एवं नवगछिया का इलाका केला की खेती के लिए उपयुक्त है। यहाँ की मिट्टी एवं जलवायु केला उत्पादन के लिए उपयुक्त है। इस प्रकार, इस इलाके में केला उत्पादन एक व्यवसाय का रूप ले रहा है। फलतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था काफी सुदृढ़ हो गई है।

केला की खेती

लीची : मुजफ्फरपुर का इलाका शाही लीची के लिए लोकप्रिय है। यहाँ के किसान बड़े पैमाने पर लीची के बागान लगाकर अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं। शाही लीची का अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में माँग है। लीची का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में भी काफी उपयोग है।

गन्ना : गन्ना की खेती के लिए बिहार पूर्व से मशहूर है। बिहार में पूर्णिया, सहरसा, पश्चिमी चम्पारण आदि इलाके में गन्ना की खेती बड़े पैमाने पर होती है। गन्ना एक उद्योग आधारित फसल है। इससे चीनी, गुड़ आदि प्राप्त होते हैं। इस प्रकार गन्ना की खेती से बड़े पैमाने पर आमदनी होती है। इसके अलावे ग्रामीण कृषक गुड़ आदि के कुटीर उद्योग लगाकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

गन्ना की खेती

Agriculture has greatly contributed to Indian economy. Still, the conditions of farmer is not so good. At many places, the farmers have to commit suicides. So the government has to pay attention to it. The conditions of farmers may be improved by grading the agriculture as an industry. The forthcoming generations will have to be motivated to honour agricultural activities. Chapters related to agriculture should be added to their curriculum. Technical and scientific views should be encouraged for increasing agricultural production.

Agriculture can be a medium of social change. Through social change, agricultural production will increase. The economic conditions of farmers will be strengthened by producing raw material for industries and surplus production. When the economy is better, the standard of their living will be improved and they will move towards education. By increasing income, mechanised agriculture will begin. Thus there will be a change in society.

Scientific view in agriculture

Scientific view in agriculture will be very beneficial for farmers. The traditional farming is not very beneficial for farmers. The production is not very satisfactory in traditional farming. Whereas the quality of seeds will be reduced by using the same type of seeds again and again, the fertility of soil is also affected by producing the same type of food grains. Because of dependence on rains for irrigation, there is uncertainty. However, the production increased because of the use of scientific methods. Through plant processing, high quality of seeds were produced by pollinating the plants of less desired quality with those of more desired quality. These seeds give better crops in a short time. The fertility of farms is regained by the production of fertilizers. Crops may be saved from destruction by sprinkling insecticides and pesticides.

Different means of irrigation help the plants maintain moisture. Agricultural activities are performed timely with the help of modern equipment and time is saved. Crop-cycle, multi-crop farming, composite farming etc. helped in increasing agricultural production. That is why Green Revolution became possible in 1960. Scientific view in agriculture is thus very useful.

कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में काफी बड़ा योगदान है। फिर भी कृषकों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं है। बहुत जगह कृषकों को आत्महत्या तक करनी पड़ती है। अतः सरकार को इस ओर ध्यान आकृष्ट करना होगा। कृषि को उद्योग का दर्जा देकर कृषकों की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। कृषि कार्य को सम्मान देने के लिए आने वाली पीढ़ी को कृषि के प्रति लगाव पैदा करना होगा। उनके शैक्षणिक पाठ्यक्रम में कृषि से संबंधित अध्याय जोड़ने होंगे। कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी के लिए तकनीकी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की जरूरत है।

कृषि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम हो सकता है। सामाजिक परिवर्तन से कृषि की पैदावार अधिक होगी। कृषि के अधिशेष उत्पादन एवं उद्योग आधारित कच्चे माल का अत्यधिक उत्पादन से कृषकों की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। अर्थव्यवस्था अच्छी होने से उनके रहन-सहन का स्तर बढ़ेगा, उच्च शिक्षा की तरफ लोग मुखातिब होंगे। आमदनी बढ़ने से यंत्रीकृत कृषि शुरू होगी। इस प्रकार हमारा ग्रामीण समाज सुखी, समृद्ध एवं खुशहाल बनेगा।

कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कृषकों के लिए काफी लाभदायक होगा। पारंपरिक खेती से किसानों की उपज अच्छी नहीं होती थी। जहाँ एक ही बीज का बार-बार प्रयोग करने से बीज की गुणवत्ता क्षीण हो जाती थी, वहीं एक ही प्रकार के खाद्यान्न लगाने से मृदा की उर्वरा शक्ति भी क्षीण पड़ जाती थी। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भरता से, या तो अनावृष्टि के कारण फसल सूख जाता था या अतिवृष्टि के कारण फसल नष्ट हो जाते थे। लेकिन वैज्ञानिक पद्धति के आने से उत्पादन में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हुई। पादप-संस्करण के द्वारा कम वांछित गुण वाले पौधा काफी अधिक वांछित गुण वाले पौधों के साथ परागण करवा कर उन्नत किस्म का बीज प्राप्त किया जाता है। इस बीज से कम समय में अच्छी फसल प्राप्त होती है। उर्वरक का उत्पादन होने से खेतों को उर्वरा शक्ति पुनः प्राप्त हो जाती है। कीटनाशी, खरपतवारनाशी आदि का छिड़काव करके फसल को नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

सिंचाई के तरह-तरह के साधन होने से पौधों में नमी हमेशा बनी रहती है। आधुनिक यंत्रों के कारण समय पर कृषि कार्य संभव हो पाता है एवं समय की बचत होती है। फसल चक्र, बहुफसली कृषि, मिश्रित खेती आदि के द्वारा कृषि में आशातीत वृद्धि हुई। इसी कारण 1960 के दशक में हरित क्रान्ति आयी। इस प्रकार कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कृषि के लिए काफी लाभदायक है।

EXERCISE

I. Objective questions:

1. What is found in the roots of pulse crops?
   a. Nitrogen stabilizing bacteria
   b. Potassium stabilizing bacteria
   c. Phosphate stabilizing bacteria
   d. None

2. Shahi litchi is mainly produced in-
   a. Hajipur b. Samastipur
   c. Muzaffarpur c. Siwan

3. Rabi crops are sown in-
   a. June-July b. March-April
   c. November d. September-October

4. Banana is produced in Bihar in-
   a. Samstipur b. Hajipur
   c. Saharsa Muzaffarpur

5. Which district of Bihar is the greatest producer of Rice?
   a. Siwan b. Rohtas
   c. Sitamarhi d. Hajipur

6. In which season are the summer crops grown?
   a. summer season b. winter season
   c. rainy season d. spring season

7. Pick out the fibrous crop.
   a. mango b. litchi
   c. Paddy d. Cotton

8. Chose the Agahani crop.
   a. rice b. jute
   c. moong d. wheat

II. Fill in the blanks with appropriate words:

1. Cotton is a _____ crop.
2. Maize is a _____ crop.

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. दलहन फसल वाले पौधे की जड़ की गाँठ में क्या पाया जाता है।
   (क) नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु (ख) पोटाशियम स्थिरीकरण जीवाणु
   (ग) फॉस्फेटी स्थिरीकरण जीवाणु (घ) कोई नहीं।
2. शाही लीची बिहार में मुख्यत: होता है।
   (क) हाजीपुर (ख) समस्तीपुर
   (ग) मुजफ्फरपुर (घ) सिवान
3. रबी फसल बोया जाता है-
   (क) जून-जुलाई (ख) मार्च-अप्रैल
   (ग) नवम्बर (घ) सितम्बर-अक्टूबर
4. केला का उत्पादन बिहार में मुख्यत: होता है-
   (क) समस्तीपुर (ख) हाजीपुर
   (ग) सहरसा (घ) मुजफ्फरपुर
5. बिहार के किस जिले में चावल का सबसे ज्यादा उत्पादन होता है?
   (क) सिवान (ख) रोहतास
   (ग) सीतामढ़ी (घ) हाजीपुर
6. गरमा फसल किस ऋतु में होता है।
   (क) ग्रीष्म ऋतु (ख) शरद ऋतु
   (ग) वर्षा ऋतु (घ) वसंत ऋतु
7. रेशेदार फसल को चुनें-
   (क) आम (ख) लीची
   (ग) धान (घ) कपास
8. अगहनी फसल को चुनें-
   (क) चावल (ख) जूट
   (ग) मूँग (घ) गेहूँ

II. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. कपास एक ..... फसल है।
2. मक्का ..... फसल है।

3. India is mainly an _____ country.
4. _____ third of the population in India depends on agriculture.
5. 'Agriculture' is formed with the two words of Latin _____ and _____
6. _____ district is the greatest produce of rice?
7. There is an intensive type of farming in Bihar under which _____ crops are sown and harvested in a year.
8. _____ climate is needed for rice.
9. _____ soil is needed for wheat.
10. Maize needs _____ climate.

III. Short answer type question:

1. How many types of farming are mainly done in India?
2. What is the difference between Rabi crops and Kharif crops?
3. What is plant hybridization?
4. What is composite farming?
5. What do you mean by Green Revolution?
6. What do you mean by intensive farming?
7. What do you mean by Jhoom farming?
8. Write about crop-cycle.
9. What do you mean by plantation or bagani farming?
10. Suggest the ways for changing rural economy in present time.

IV. Long answer type questions:

1. How can you say that India is mainly an agricultural country?
2. How is scientific view useful in agriculture?
3. The agriculture in Bihar is 'gambling with the monsoon'. How?
4. How can agriculture be a medium of social change?
5. What is the scientific view in agriculture? Explain.

3. भारत एक ..... प्रधान देश है।
4. भारत की ..... तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है।
5. एग्रिकल्चर लैटिन भाषा के दो शब्दों .....तथा ..... से बना है।
6. चावल सर्वाधिक ..... जिला में उत्पादन होता है।
7. बिहार की कृषि गहन निर्वाहक प्रकार की है, जिसके अन्तर्गत वर्ष में ....फसलें बोयी या काटी जाती है।
8. चावल के लिए ..... जलवायु की आवश्यकता है।
9. गेहूँ के लिए ..... मिट्टी चाहिए।
10. मकई के लिए ..... जलवायु की आवश्यकता है।

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. भारत में मुख्यत: कितने प्रकार की कृषि होती है?
2. रबी फसल और खरीफ फसल में क्या अन्तर है?
3. पादप-संकरण क्या है ?
4. मिश्रित खेती क्या है?
5. हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं?
6. गहन खेती से आप क्या समझते हैं?
7. झूम खेती से आप क्या समझते हैं?
8. फसल चक्र के बारे में लिखें।
9. रोपण या बागानी खेती से आप क्या समझते हैं?
10. वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के उपाय बतावें।

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. भारत एक कृषि प्रधान देश है, कैसे ?
2. कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कृषि के लिए लाभदायक है, कैसे ?
3. बिहार की कृषि ''मॉनसून के साथ जुआ'' कहा जाता है, कैसे?
4. कृषि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम हो सकता है, कैसे?
5. कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या है? समझायें।